

हिन्दी माहित्य में यणपान का एक विशिष्ट स्थान है लगभग ३५ वर्ष की ग्रपनी साहित्य-माधना में उन्होंने बहन निया है जो एक विधिष्ट दृष्टिकोण से प्रभावित होने पर भी माहित्य की निधि है कहानियां भी उन्होंने बहुत निग्नी है श्रीर उनकी श्रनेक कहानिया वहत लोकप्रिय या विवादास्पद भी हुई है वे जीवन की समस्वाग्रों में गहरे पैठकर उनकी चीर-फाइ करते हैं श्रीर पाठक को उनका निटान सोचने के लिए विवश कर देते हैं कहानी कला को उन्होंने प्रखर यथार्थवादी मोड़ प्रदान किया है



राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली-६







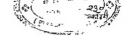
पहला संस्करण ■ १९७० ■ मृत्य पांच रुपये

मेरी प्रिय कहानियां = कहानी-संकलन

रूपक प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्लो

प्रकाशक • राजपाल एण्ड सन्ज्ञ, कश्मीरी गेट, दिल्लो-६

लेखकं **=** यशपाल ©



भूमिका

जेल में मुक्ति (१६६६) के समय से, मेरी वाया रकताओं के माय-माय, श्रीमतन प्रति बेद-रो वर्ष में मेरी कहानियों के समद भी प्रकाशित होंने रहें हैं। अब तक मोमह सबह । इन महाई को प्यक्त्मक रेमने से मेरी प्रत्येक मधह की कहानियों में कुछ साह्य काना पडता है। इसका भारता तरकातीन चितन और वन्त्रमा की दिवा तथा विधारों मी दृष्टि से कच्छ-विद्योग के प्रति हिंग पही होगी। इस विभिन्ता के बावजूर मेरी सभी रकताओं में मूनमूत एक्सूमता भी आन पटती है। इस एक्सूमता भी पर्या गए में।

अपनी बहानियों में से कुछ को प्रिय कहकर चुन देना संनिकर नहीं है। कहा नागा है—लेखक की रचनाए उनकी सुद्धि या सतिर होती है। सरस्य यचना निप्पक्ष मान के अपनी संतिर की उपलक्षियों के विचार से, सकते ममान प्रिय मानकर भी, उनकी सकतना के निर्मय में मक्षेत्र नहीं टोना चाहिए। घरन्तु सतियों का अपने जनक से पृषक् व्यक्तित्व को स्ट मृत्तित्व यन बाता है। सेन्यक की रचना मम्मवदा गर्वा हो उनके मर्वक व्यक्तित्व का आप बती चट्टी है। किर भी एक बनोटी ट्रो मन्दरी है। सर्वक का अपना निर्मय वही, ममान अववार वाउकी कर निर्मय अववार परम — जिनके निए रचना की जानी है। बर्धाई नित्त रचनाओं रे किनती चर्चा हुई या किन रचनाची ने समाज अपका पाठकी की किन्ना रिजाय या प्रक्षेतिन किया । समर के अकारण मीमा ही जाने पर प्रायः ऐसी हैं महानी का रीचेन मगर की दिया पाठा रही है ।

नित कर सकता ! हम परत में असीटी समाज मापानकी की रिवा मकता है।
नित कर सकता ! हम परत में अनता या कहानी का अभी तम समाज की
कीवा या मनी अने ही जान पहला है। रित जान के उजरण की मपानि भी है
जा सकती है। 'अहानी का उद्देश के तन कहानी है। कहानी निपम कराते
नियमा या मुनाना नाह । है, इमी नियं कहानी निया है। कहानी नियम मुनाने में या मुनाने पहला है। इसी नियम होता है, की कहानी का आयोगि
उद्देश और लक्ष्य है अन्य कुछ नहीं।' अनि वाल में यह जा गरम में कर्त के नियम पहला होगी। में इसे जहदशः नहीं मान दिना नाहता। कहानी महा मेरी जीतिका रही है। अनुभव में मुख जानता था और जानता हूं हि हिंद पुल्के रोचक पटनाचक बनाकर निया गई रचनाओं की गयत मुख हैं।
है। परिणाम में यम श्रम में अधिक उपालन की सम्भावता। इस सम्भित्त की जीका दूसरे संतोष को महस्त देने के कारण करनी पड़ी।

यह ठीक है कि अपनी रत्तना में जीविका की आणा करता हूं तो दें रत्तनाओं से समाज को मनोरंजन या मंतीप देना ही होगा। परन्तु अने संतोष की भी उपेक्षा नहीं कर सकता। पाधित मंतीप की नहीं, अने विचारों या अहम् के मंतीप की। स्थयं को समाज का सचेत और समाज है प्रति उत्तरदायी अंग मानकर गमाज को सचेत करते रहने के मंतीप की। अपनी रचनाओं से समाज को मनोरंजन का संतोष देने के माथ-साथ के रचनाओं द्वारा समाज को मचेत कर सकने के, अपने विचार में कर्तव्यक्षी के संतोष के लिए भी, यत्न करता रहा हूं। भेरी रचनाएं केवल मनोरंजि घटनाचक या विवरण नहीं चन पाई है। इन रचनाओं से पाठकों को प्रवि ही मनोरंजन की तह या पादवें में अपने संस्कारों या अभ्यस्त विश्वासों के खरींच या चुभन की अमुविधा भी अनुभव हो जाती है। इसका कारण मेरी कहानियों के सूत्र परम्परागत मान्यताओं का समर्थन नहीं अपितु अधिकी र र र र है है है में इन मान्यताओं के प्रति विदूष या विरोध का होता रहा है। इसलिए ्र हे होता प्रभारा और यवावत् स्थिति के हामियों ने मेरी श्वनाओं को अनैतिक, अरतील और बुद्धिपूर्ण भी कहा। भेरी रचनाओं के साहित्य के बाबार स

्रा । इस स्पर्के हिन्दा का भी यहन किया जा रहा है। मैंने विरोध के आर्थिक परिणाम भारत के होता है और अपने विवेक की रक्षा का सतोप की पाया है। प्रस्तुत कहानियों का चूनाव अधिकाश में सम्रहों के शीर्षकों से किया तार्म की मार्ग देशन' सम्रह से इसी शीयंक की कहाती। यह कहाती प्रश्न है-अरोसा कराता । है विश्वासमत ज्ञान का अथवा अनुभवमत ज्ञान का किया जाए ? 'अभिशस्त' हार्ग (पें! प्रभिशन्त जीवनों के कारण की जिलासाहै। 'तर्क का तुकान' को भावनाओ इस का कि पूरत में 'तर्क' की हवा से राहत की चाह मान सकते हैं।

सन् १६४५-४७ मे विकट विवाद चल रहा या - "कला के लिए कला हों रें "अयवा जीवन के लिए कला?"अपने विचार के पक्ष म भरमावृत विनारी राहरों ^{क्रा}रहानी लिखी थी। लगभग उन्हीं वर्षों में प्रकाशित मेरी कहानियों ते प्रदे^हें प्रमे-रक्षा' आदि संक्षीभ का ववडर-सा उठ खड़ा हुआ था। इन कहानियों के के कि निकलन प्रकाशित करने समय अपनी सफाई वहानी के रूप से देने के रिहतार (तिए 'कृतो का कुरता' कहानी नियो थी। 'उत्तराधिकारी' ने बही परस्परा-तातुं के 'ज मान्यत्राओं और परिहिचतिकच आनगरकता का इंड है। 'तुमने वसो अंतरात' 'हा या में मुल्यर हूं' पूछनी है-सौन्यर्व की जाह वा तलाश बया ? बुछ हम्मर्ज ^{[क}ारनोजक भेरी कहानियों के इन भी संबहों को एक वर्ग में और धेप सान (सार्ग प्रहों को दूसरे वर्ग मे गिनने हैं।

भागोतको का बटभी भव है कि मेथे बटावियो म क्यमाध्यमना है प्रात्मविष्यास के साम-साथ विवास-सरिश्डाः । एवी गई है और बेटासिक उनरोत्तर गम्भीर या बोदिल होती गई है। स्नीतार अस्ता है, में जस्ती रचनाओं को उत्तरोत्तर सबसोजन बनावें के लिए सर्वत रहा हूं। इस की में पहला सबह 🙎 'धर्म-पुछ'। बहुत-ने 'धटको ने इस कटानी को सब्द हारय ही समझा है परन्तु हुनसे ने उसे सन्यावत के निद्यात और विधापर भयकर चौट माना है। 'विष का शीर्षक नेवह भी कहानियों में विषय तथी विधा की बहुर पना है। इस कहानी को सग्रह की प्रतिनिधि रचना नहीं कह सकता। यह कहानी सग्रह का जीवेक वनी कई वयोकि दसे गुरु उस्कृत्द कलात्मक मृजन मान लिया गया था । 'उनभी की मा' संग्रह ^{में} ने 'भगवान के पिता के दर्भन' दे रहा हूं । यह करानी निराकर बहुए 💯 भुगता है। फिर भी लाहता है यह फिर सामने आए। बयोकि दस-वारह वर्षों में उदार दृष्टिकोण को प्रश्रय किलता जान पटा है। 'सन बोतने की भूल' में भीर्षकरी कहानी का मंतव्य भाष लेने का रावाल हो नकता है परन्तु मंतव्य के निवाह का महत्त्व कम नहीं होता। 'सच्चर और आदमी' की सबसे बयोवृद्ध हिन्दी-कहानी-लेखकश्री भगवतीप्रमाद बाजपेयी ने उंगतियाँ पर गिनी जो सकने योग्य अच्छी कहानियों में समझा है। मोलहवा संग्रह है 'भूल के तीन दिन'। शीर्षक में ही पीड़ा की चेतावनी है। तिमपर कहानी बहुत बड़ी है। इस संग्रह के लिए निश्चित कलेवर मे अटेगी नहीं। पाउकी से विदा लेते या रिटायर होते समय उतनी पीड़ा का प्रमंग न लाकर कुछ वैसा ही प्रसंग अनुकूल रहेगा, इसलिए 'समय' कहानी दे रहा हं।

अपनी रचनाओं के मूलभूत सूत्र के विषय में कहना है: व्यक्ति और समाज का जीवन परम्परागत नैतिक धारणाओं और मान्यताओं का अनुसरण करने के लिए नहीं है। समाज की नैतिक मान्यताओं का प्रयोजन सामाजिक व्यवस्था में और समाज के उत्तरोत्तर विकाम में नहायक होना है। समाज की परिस्थितियों और जीवन-निर्वाह के तरीकों में परिवर्तन स्वीकार करके अतीत में स्वीकृत मान्यताओं को अपरिवर्तनीय मानने का

आपह सगत नहीं हो सकता। अतीत की अववा परम्परागन मान्यताओं को ममात्र की वर्तमान परिस्थितियां और आवदयकताओं की क्षीटी पर परवर्त में और उन्हें मध्यानुकून बनाने में खिलक समान के लिए पातक रूपता में मीता उन्हें साथान के लिए पातक होंगी। परप्रतास्त मामात्रिक निवस्त और साय्याओं को अवनी माम-पिक परिस्थितियां और आवश्यकताओं के अनुकुल जना सकते की वेतना निरस्त परिस्थितियां और आवश्यकताओं के अनुकुल जना सकते की वेतना निरस्त परिस्थितियां और आवश्यकताओं के अनुकुल जना सकते की वेतना निरस्त परिस्थित के प्रवाह में समान की भावन आवश्यकता अपवा निरस्त परिस्थित के प्रवाह की मान्यता की अधिव्यक्ति के लिए विश्वक्षता का उतना ही निस्सीम और स्थापक केंत्र ही भवता है जितन कि मान्यत्वस्त केंत्र ही भवता है जितन कि मान्यत्वस्त के जीवन का।

---यशपाल



ऋस

23

38

35

¥¥ X .

पहाड की स्मृति
जहा हमद नही
शनदान
ল িমসন্দ
अन्ये कर सरदास

न धम्मावृत्र विन्यागी

** धर्म-रक्षा 43 प्रनिष्टा का बोश 2 पुनी का कुरता

22. उलगधिकारी \$ \$ \$ X सुमते बयो बहा या मैं गुन्दर ह 8:8

परंज्य १४३ थिय का गांधेक 888 भगवान के विशा के दर्जन सब बोयने की भूत

100 **t=**• गण्वर और आदमी 112 समय ₹•₹



पहाड़ की स्मृति

सन तो मण्डी से रेल, जिल्ली और मोटर नभी कुछ हो गया है पर एक बनाना था, जब यह सब कुछ न था। हमीरपुर से रनामसर के रास्ते लीग मण्डी नाया करते से। जस समय व्याचार या तो खण्चरो द्वारा होता या या किर तक्सी की बीठ वर चलता था। उन दिनों में मण्डी की राह् कुल्लु गया था।

मानी मगर से कुछ उधार ही एक अवेड़ उनर की पहाड़िन की, नाम की टोकरों में खुरवानियां निष्ट् सडक किनारे बैठे देखा। पहाड़ी कींग अमनर दस सरह कुछ फन-बल से सडक के किनारे बैठ आते हैं और राहु "यातों के हाथ पैसे-बैत, दो-बो पैसे का सीवा वेचवे रहते हैं। खुरबानिया "हात की-बड़ी और बढ़िया थीं।

मेरे समीव पर्दुचित ही उस पहाड़िन ने बिगड़ी हुई पंजाबी में सवान किया-- "बया युम साहीर के रहनेवाने हो ?"

मेरी पोशाक देखकर ही शायद उसे यह खयाल आया होगा कि मैं लाहौर का रहनेवासा हो सकता है।

सीचा--क्या मह मुझे पहचानती है ? उत्तर दिया---"हा, मैं लाहौर का रहनेवाला हं।"

उसकी आधें कड़े खुमी से चमक उटी, उसने पूछा--"तुम परसराम

१८ भेगी विषय करानिया

यो जानने हो ?"

निरमय से मैने पूछा - "परमासार वोन परमासार है" पुछ काम होतार उसन जनार दिया -- परमासम हैनेदार !" पुछ मननव न समझ फिर पूछा - 'कोन परमासम हैकिसर है"

में जिस और में चलकर जो घटा था, उसी और हाथ से सँतेत की उसने कहा —''यह दोनों पुल जिसने बनवाए थे !''

यात मेरी समझ में ने आई। मेने उत्तर दिया--"में परमराम हैं। नहीं जानता। होगा फोई, क्यों ?"

उदाग हो उसने कहा—"तुम लाहोर के रहनेवाले हो, और ^{इंड} नहीं पहचानते! वह भी तो लाहोर का रहनेवाला है। परम^{स्म} ठैकेदार है न ?"

पहाड़िन की अधीरता ने कुछ द्ववित हो मैंने पूछा—"किस ^{गर्ती} किस मुहल्ले का रहनेवाला है वह ?"

यहत चिन्तित भाव से एक हाथ गान पर रसकर उसने धीरे-धीरे कहा — "गली-मुहल्ला ? " गली-मुहल्ला नहीं, वह लाहौर का रहनेवाली है ! तुम भी तो लाहौर के रहनेवाल हो, उसे नहीं पहचानते ?"

उस औरत की नादानी पर में हंग न गका। उसे समझाने की कीकित की कि लाहीर बहुत बड़ा शहर है। अधिक नहीं तो दो-डाई लाय आदमी लाहीर में बसते होंगे। वहां एक-एक मुहल्ले में इतने आदमी है कि एक दूसरे को नहीं पहचान सकते। में हीरा मण्डी में रहता हूं। यदि परतारम ठेकेदार मजंग में रहता हो, तो वह मुझसे साढ़े तीन मील दूर रहता है हालांकि वह भी लाहीर में रहता है और में भी लाहीर में ही रहता है और हम लोगों के बीच दूसरे लाखों आदमी रहते हैं।"

वात औरत की समझ में नहीं आई। उसकी आंदों की प्रसन्ती काफूर हो गई। गाल पर हाथ रखकर धीमी आवाज में उसने कहा— "वह लाहोर का रहनेवाला है। लम्वा, गोरा-गोरा, प्यारी-प्यारी आंधे हैं, तुमसे कुछ जवान है, भूरा-भूरा कोट पहनता है, रेशमी साफा बांधती

मैंने दु.खित हो उत्तर दिया--"नहीं, मैं नहीं पहचानता।"

है, वह साहोर का रहनेवाला है। मैंन दु-जित हो उत्तर निर्ण जनकी टोम्फे उसकी टोकरी के पास उकड़ बैठ धुरवानिया चुन-चुनकर मैं अपने ष्टमान में रखने लगा। सहानुभूति के और पर मैने पूछा--"क्यो, तुम्हें

उसमे कुछ काम है बया ?"

गहरी सास श्रींचकर उसने कहा-- "परमराम यहा पुल बनवाना था। पाच बरम हो गए, तब वह यहा या। वह जाने लगा ती मैंने कहा-मत जा। उसने कहा, मैं बहुन जरदी, थोडे ही दिन में लौट आऊंगा। वह आया ही नही ... लाहीर तो बहुत दूर है न ?"

मैंने उत्तर दिया —"हा, बहुत दूर है।"

उसकी आर्कों से नमीं जा गई। उसने गर्दन सुकाकर कहा-"न जाने षह बयो नहीं आया न जाने कव आएगा " .. पाच बरम हो गए,

आया नहीं ?" वह चूप हो गई।

कुछ देर बाद गर्दन भूकाए ही वह बोली-"उनकी राह देखनी रहती हूं, इसीलिए यहा सड़क पर भी आ बैठती हु। भेरा बहुत-मा काम हुन होता है लेकिन दिल मबराता है तो यहा आ बैठनी हूं। दो और आदमी पाहीर से आए थे पर वह नहीं आया, पाच बरस हो गए।" वह चुप हो गई।

एक छोटी-सी लडकी, प्राय-पाच बरस की एक और से दौड़ती आई। मुझ अपरिचित को देख वह सहम गई। फिर मुझे अलक्ष्य कर, मा

के आचल में मुह छिपा वह उनके गत से लिपट गई।

. मैंने पूछा—"यह सुम्हारी लडकी है ?"

मिर सुकाकर उसने हामी गरी। लड़की के बिर पर हाथ फेरते हुए उमने कहा-"यह भी पाच बरम की हो गई। इसने बाप को अभी तक नहीं देखा। देखे तो पहचान भी न पाए।"

उन दोनों की ओर देशने हुए मन में विचार आया - कवि लोग नहने हैं, विरुद् प्रेम का जीवन है और मिलन अन्त । बया यह अपने प्रेम का अन्त



थाऊगा, अभी तक नहीं आया ? जाने कव आएगा ? लडकी भी इतनी बड़ी

मैंने पूछा---"तो तुम जमके साथ साहौर क्यों नहीं चली गईं ?" उसने गाल पर हाथ रखने हुए कहा-"हा, मैं नहीं गई। परसराम ने तो नहा था, तू चल । पर मैं नहीं गई । देखों, मैं कैसे जाती ? यहा का सब केंसे छोड़ जाती ? वह सामने सुरवानियों के पेड़ हैं, वे नासपातिया हैं, सेव हैं, दो धलरोट हैं। मैं यहा से कभी कही नहीं गई। एक दफें जब मैं छोटी थी, मेरी मौती मुझे अपने गाव, वहा नीचे ले गई थी। उसका घर बहुत हर है। दम कोम होगा। वहा वहुत वैसा-वैमा है, न यह पहाड़, न यह ब्यास नदी नी आबाज, न ऐसे पेह, रूपा-रूबा माजूम होता है। वहा मुझे युकार आ गया था, तब मेरा फूका पीठ पर लादकर यहा लाया। आते ही मैं बगी हो गई। मैं कमी कही नहीं गई। लाहौर तो यहुन दूर है, वहा शायद लोग बीमार हो बाते हैं। परसराम के लिए मुझे बहुत कर समता है। बना जाने, क्या हाल हो ? हमारे यहां बीमार कभी ही कोई होता है। हो भी जाए ती हर्दू जुनाहा साड-फूक देता है। साहीर में नया कोई सच्छा फाडने-मैंने उत्तर दिया--"हा हैं नमों नहीं, बहुत-से हैं।"

मन्तोष से सिर हिलाकर उसने कहा—"अच्छा।" मङ्जाते सङ्जाते मैन पूछा — "वरसराम के आने से पहले तुम्हारा

व्याह नहीं हुआ बा ?" उतने कहा — "ब्याह तो हुआ था, बहुत पहले। मुझे ब्याहकर सहां से मेरा आदमी तकू वे गया था। बहा मुक्ते अच्छा नहीं सगा। में बीमार हो गई। वहां मेरी सीत मुसे मारनी थी। मैं यही लौट आई। भेरा आदमी कमी-कभी यहा आकर रहता था। ब्याह के तीन साल बाद वह युवर गया। मैं मा के पास ही रही। मैंने परसराम से कहा था—यहां सब कुछ है, तू करी मत जा। यह कहना या, मैं जल्दी आ जाऊपा। पाच बरस ही गए, यह अभी तक नहीं आया। देखों कन आए ? अब तो दो बरस से मा भी

建筑 医水

महेब रेचन एउन राज्य हो १००० छन्न छ श्वास १ मेर सिर्ध्यम्ण ^{तर} भित्रवास मा प्रश्ने था। बाद्ध शुक्ता विकास स्थापित स्थापित देखता रहा र भग रच वह विराम कर अपने सुरक्षाना पहीर की सामितीं की मार कर रही हो। ताब ध्यान छ विन्तु क्षात्रहा पनित्र सम्माहित utar i

मान्दी में में बाल्डाल्डार अस्य र बार ह के जिल्ला करते में पारी में ही भार एक दर्भ देवन व रितर, स्पार । वह अपने चेन में बनमनी सी सिं मार रही भी। उसकी संदर्भ वार के विकास हत भाग की दोनकीरी वात्रकंत भाने की।

मेने कहा —"भाव जा रहा है।"

इसने उत्स्कात में पुछत जातातीर है।"

मैंने कहा - "हा, करन जा रहा है अहा में नाहीर नीट गर्कना" यही आविशी में उसने करत- "तरमरास में मेरा मनेग वी कत्ना । कत्ना — दिन-भर महक नामा नारती है। मे बही इराजार हैं। पांच बरस हो गए, अन वसर लोट आ। तेशी पड़की नुही पुतारतेहैं। महोगे न ?!!

मेंने कहा—"जरूर कहुंगा।"

अपनी बेटी को प्यार कर कह बोली — देग, बाबू तेरे बाप के ज

जा रहा है। बाबू को सलाम कर। बाबू तेरे बाप को भेज देंगे।" "अच्छा" कहकर में लौट पड़ा और फिर उधर न देख सका। प जान पड़ता था. मेरी गर्दन की पीठ पर उनकी ऑगों गड़ी जा रही है। में एक वेचैनी-सी अनुभव ही रही थी। कह नहीं सकता—परसरान पित करे प्रति कोष्ठ या प्पत्नाहिन के प्रति करणा शीया परसराम से ईर्ध्या "

जहां हसद नहीं

स्रोर पर पर नेक नक्त भीवी। बीवी को नह यान से ले आया या। यह मुक्त क्षीधरीक होते से एक कतान के आने हिस्से भीनवीह करता था। जगह छीवी से परन्त करता था। जगह छीवी से परन्त परने हुए एक हैं की आयतनक दीनार अनाजर बी मकान बना दिए थें। जीना दोनों तरफ अनग था। मूरहमन दाई तरफ के हिस्से र एहा या। न किमीय सेना न किमीका देना। बकेगाय में नाम और पर पर परामा

मरहमन अपने जीवन से सन्तष्ट या । रेलवे वर्कशाप में पक्की नौकरी

ष्ट्री के दिन वीची को बुरका बोदाकर तीसरे पहर मैर के निए ते जाना। करीं किती वेंकियां ते जाना। करीं किती वेंकियां ते जाना कोई कच्छा एक या मिहाई बीची की पसर का आपती तो बहु स्थारा कर, के करम हटकर वांची हो आरी और मुरह्वन में स्रीदे केता। घर मोटकर दोगों शांते। बीचों नेकववन और सवास्तमन्द, अपने काम और करवाह से वाहत अब कसी हटवार को मी पिया की १ सूरी वर्कगा में मा जाती तो नवाइत को बहुन युपा लगा। बीर, मोकरी का मामका था, अववरी थी।

थीबी के लिए नरहमन में सफेंद बरका सिलवा दिया था। इतवार या

एक दोपहर सञादत नहींने के बाद अपनी छत के हिस्से मे मिनया पर वैंड, धूप में बास सुसाकर कंघी कर रही थी। बीच-बीच में वह नीले आकाश में एवं से रमने दर्शों पन्धी के त्रावनीय भी देखी एम्सी। मन्ते में मनाम की एउ पर हिन्दू पर्शावित कराइया विद्यानी में आमें वाल भी। मनो प्रीमिनाद प्राहे की प्राप्त के जनमान प्रीमिनी के बीची में आमें वाल भी उम्मिनी में क्यों की माण कर रही भी। विद्यानी नाचे तहा पूर्वतर में छित मी सम्भी भी। एमने मी ही बादें और नवर भी भी दीवार के परिष्टी आगे उम्मी और देख रही भी। वह घरमान एसे और भीतर में गई। भीतर हो देख रही भी। वह घरमान एसे और भीतर में गई। भीतर हो देख रही हो बाद विर घुमकर देखा, संपम्त हैं में उम्मी और देख रहा था।

सआदन जान में भी, जो लोग इसरे की औरतो की देगते हैं वे कि मानम नहीं होने । बदमाशों की नज़र कैमी जोगी है, मह तो बहु दीर है नहीं जाननी भी परन्तु इस नज़र में कोई गेजी न भी जिसमें यह इस्वाती फिर भी उसे कोई पयो देगे ? उसने भीतर बैठकर चोटी बांधी और दुई सिर पर ले लिया। कभी में में निकले बाल पड़नाले की मोरी में फेरने में तो उसने एक बार फिर जानना चाज़, अब तो गहीं देख रहा? बहु दें रहा था पर उसी तरह, प्रनीक्षा की आनुर नज़र से, झपट सेनेवानी तीन नज़र से नहीं।

सआदत ने मन को समझा निया — जाने दो अपने को वया रे पूर्व जलाकर खाना पकाने में नग गई। उसे मानूम था कि उस और और

कोई नहीं रहती; कभी देगी जो नहीं थी।

रात में उसने मियां से फोई जिक्र नहीं किया, जरूरत भी क्या धी खामखाह उसके दिल को बुरा लगता। दूसरे-तीसरे दिन उधर उसे के दिखाई न दिया लेकिन चौथे दिन उधर से दीवार पर सूराने डाला है एक तहमत उड़कर इधर आ गिरा था। सआदत ने सोचा—मुझे क्वा तहमत अपना तो है नही। फिर सोचा, पड़ोसी परेणान होगा। तहमत उर तहाकर उसने दीवार पर रख दिया परन्तु उधर देखा नहीं। वाद में उस मालूम हो गया कि उधर से देखनेवाली आंधें सुबह नौ बजे से पहले और शाम को पांच बजे के करीब ही देखती थीं। होगा, अपने को क्या ?' उसी

सोचा। लेकिन आंगन में जानेपर यह देश लेवी मी, कोई देश तो नहीं रहा? अपने परें का समाल जो था।

एक दिन परोभी ने सलाध कर दिया। मजादन घरमा गई। एँग नो नहीं करना पाहिए। उसने मोषा, लेकिन सुधे बात तो कोई की नहीं। तिकायत की तो कोई बात है नहीं। होगा, जबने को बचा ? मन ही मन उनने कहा-है सो मर्थ पर नीधा नधना है।

नूर्यूसन के बहेगाय से मीटने कर समय होना तो नशादन खिडकी की यह फिर से देयने लगनी थी। उस दिन हमन की देर हूं। गई थी। बह सबी जिला से राह देश रही भी और जब सुरहसन दूर से नकरी टेकता, मगडाना भागा दियाई दिया। समादत के सिर पर मानो पहाड टूट पड़ा। वीने से सरकरर दीहती हुई नीचे गई।

"हार-हार, मह चया हुता?" वह भिया से निषटकर रोने लगी। उसे गहारा है जोने पर क्याकर करर साई, नृत्रशन के पुटने पर एक मार से सेलन गिर जाने से चोट जा गई थी। पुटना गुन कर या था। आधी पात पर सेलाव गिर समस् की मोटनी से मेंन किया और फिर तकिये से एई निरुद्ध-कर पहुटी बॉध थी। पनि के पुटने को गोट से निए जनने गारी रात बिता से परासु पुटना गुनह तक गुननर हुना ही गया। नृरहणन के लिए हिल्ला / मुस्तिन स्था। करता हो बया।

चिना से पूरहणन ने भोषा-मध्टी मी अरबी वर्षमाप शैसे भेजूं ? दबाई तो मसा नगारत कुर्ध स्वेकर पतारी की दूकत से ला मस्ती थी। 'मसारत ने वर्षा-''दीवार के परे एक सुसलमान माई रहना है, हतना तो कर हो देगा। इसमे बचा है ?''

पूरहान बहुत सोच-समझकर सकड़ी के महारे छत को बांटनेवाली लंदीबार नक पहुंचा और पड़ोमी को पुकार, सलाम कर उसने अपनी बिददा हं मुनाई।

र्ण पड़ीमी ने यहून हमदर्दी से आश्वासन विया--"तुम साट पर लेटो, में संकर मन कर देना हूं।" बोड़ी देर में नीचे से जीने की माकल सटनी। संभारत की स्वापने जाना पदा । प्रका बोदकर बह गई और मात्रन्गीर पर्यागी के लोगे के जाने में पहले उलार घट आई।

गरीमा का साम ता त्यांच । यही कोई अञ्चारमनीम बरम का स्थित, ज्यान, रेन के दश्या का पानु । त्यान अवली निवास पहुंचाईत मी यसनी और प्यार्थ के यहा में दावी का मामान, तरकार में मामान व्यार्थ के सा विकास को किए आवण्य है जिल्ला के बात पूछ गया। दभी तरह न्यांचार वीत-चार दिन तक न्यां। मंत्रांचार मीना—भया अवसी है मी नी पहुंच ही मानम हीता था।

नुस्तरमन के पृद्धन का ताल विमहता तो गया। त्सीम ने राम वी-

"हरपनाल के जाओ ! "

संभादत कीने लगी। गरीय मजदूर की अक्तात में कीन जगर ^{देख} लेकिन हसीय ने अंग्रेकी योजकर सब काम ठीक से मका दिया।

नृरहसन के पुटने का आपरेणन हुआ। मआदत रोज साना बनाति बुरका ओड़कर तैयार हो जाती ओर हुबीब उसे हुस्पताल संग से जाति और निवा नाता, परन्तु निवा मलाम के कोई बात नहीं। हुबीब हुस्ताति से लीटकर अपना गाना बनाता। न्रहसन ओर मआदत दोनों पड़ोसी के तारीफ करते और शुक्रिया अदा करते।

एक दिन सआदत से न रहा गया। उसने बुरके में से कहा — "हस्पता से लीटकर चुल्हा किस तरह जलाओंगे ? अपना आटा पकड़ा देना, तुम्ही भी दो मण्डे (रोटियां) सैंक दूंगी।"

"वया तकलीफ करोगी ? तुम गुद मुमीवत में हो !" हवीब ने जवार दिया।

"मुसीवत तो है ही पर तुम इतना कर रहे हो ! इतना कोई हैं दूसरा करता है ?" सआदत हवीव की भी दो रोटियां सेंक देती और हैं उसे खिला भी देती। अब उससे बुरका क्या करती ? चेहरे के सामने हुण्हें किए रहती और फिर हवीब ने उसे देखा तो हुआ ही था।

न्रह्सन का घुटना आहिस्ता-आहिस्ता ठीक हो रहा था। ईर्द डी

गई। हवीब ईद के लिए कुछ मिठाई, फुल लुकर आमा। सआदत ने भी उस दिन नये कपडे पहने थे। आकरे हवीव ने कहा- "सलाम ! ईद मबारिक !"

हमकर सआदत ने भी 'ईद मुबारिक' कहा। एक रकेवी में पुलाव निकासकर उसने हवीब के सामने रखा और कहा -- "दाओं !"

"नहीं," हबीन ने सर हिला दिया।

"हाय, वयो ?" "ऐसे ही !"

"त्वाभी म, आज तो देद है।"

"हा, पर सुमन हमसे ईद कहा मिली ?"

"हाय अल्लाहु," भरमाकर सम्रादत ने कहा--"ऐसा बोडे ही कहते है, लाओ न ! "

"जाने दो, मन नही है तो ।"

ह्यीय उदाम हो गया ।

हुरीय के वे सब अहसान समादत की बाखी के सामने आ गए। कितना भत्ता और सीधा आदमी है । बेबस होकर समावत ने बहा--''मच्छा ।'' और गरमाकर खष्टी हो गई ।

हवीव ने इंद मिली श्रीर उसका माया चुम लिया। समादत के गाल

सुर्जे हो गए। उसने आखें ज़का ली।

हवीय ने पूछा--"नारात्र हो गई नवा ?" मनादत ने मिर हिनाकर इन्कार कर दिया।

हवीब ने कहा -"आओ, एवसाय छाएगे।"

सआदत पवराई लेकिन हवीब ने अपने सिर की कसम दे दी तो मान मना पडा । दोनों ने एक ही श्केबी में बुनाव माया ।

ह्बीव मंबादन को हरपनाल से बाधम साता हो उसके यहा खाना साकर अपने हिस्से में सौटता। सौटने से पहले कुछ देर बैट लेता, बातें होती रहती ।

पर मिने विव बहानिया

्राभावत में पूछा । "जामे हाको चल्ला मुजल हो, ब्याट वर्षा हरी स निवेत्र रे"

सर्वीय ने वहां । अवस्था वर्त्त है हो सर्वेद समीव आदमी हैं, ^{हैंसी} कोस फिल करता है है!

सभादत के दिल के बच्छी-की लग्नी । एक दिल में वह उसके और ^{की} में बाल करने खग्नी । सुबह-रक्षम दोनी चड़ा-देड चंडा एकमाश बैटों ।

न्रायम का भूदना ठीन हो एसा और वह पर होट आया। समार ने अरुनाह का श्व किया और धीर की मन्तर पूर्ग की। हसीय उनके पर भागा-पाला रहता था। न्यहमन जानता था, हसीय अरुहा आदमी है ^{पर्तु} पड़ोस की न्यालियों की क्या करना टे उमने सभादा से कहा— "महात यदन में !" पर सआदत ने इनकार कर दिया, वह कहीं जाने की तैयार ने थी चाहे उसके दुकड़े कर देते।

दु:यो हो कर नूरहमन योला -"ऐसी बात है तो में तुझे तलाक दि देता हूं, फिर जहां चाहे तू गाक फांकना।" मधादत न मानी। नूरहमन की यह छोड़ नहीं सकती थी।

नूरहसन की क्रोध से आयें लाल हो गई। जिस लाठी को टेककर वह चलता था उसीसे सआदत को खून पीटा। सआदत ने मार या ली परतु चूं नहीं की। नूरहसन ने धमकी दी—"अगर अब तूने दीवार से झानता बात की तो में तुझे करल कर दूंगा और तिरे उस 'यार' को कत्त की दूंगा!"

सआदत आंगन में जाती तो आंग्रें नीची किए रहती। तीन दिन तर् उसने आंखें कपर नहीं उठाई।

न्रहसन की इ्यूटी रात में वर्कणाप में रहती तो जीने पर ताला लें जाता था और आधी रात में लौटता था । जाड़ों की रात थी । संअति ऊपर पड़छत्ती में चौके का काम नियटाकर, चुल्हें में यची आंच के तामने वैठी आग ताप रही थी। समीप ही हरीकेन लालटेन जल रही थी। कुँ आहर-तो मुन उसने पीछे पूनकर देखा। दीनार के पाम हवीय था। एक मुडा हुआ पुत्री नवादत की स्तर पर दाल वह चना गया। सआदत का करेजा घर-क्रक करने तथा, पुत्री खठाए या नही! रहा न गया। वह पुत्री चठा सार्ष।

मजादत सपटती हुई बाहर आई। दीकार वर से उपकर्कर उत्तने देखा— सपनुष कृषी बक्तक पर की ओर मूह किए खडा था। समाहत ने उसे पुकारकर कहा—"थामल हो, साला बची गही खाया? युप गही धामने, मैं बेबन हूं। जाओ, साला साली!"

हबीब ने कहा-"रहने दो इस बात की।"

"नयो ?"

''बनाया ही नहीं।''

"ठहरी में लाए देती हूं।"

"बयों, मिया कहां हैं ?"

"रात की ह्यूटी पर गए हैं।"

"वही आ जाऊ, बुछ देर तुन्हारे पास बैठ्गा।"

समादत ने सिर झुकाकर मान निया।

हरीय दीवार कूटकर सजावत के घर आ गया। मजावत ने कटोरी में रान और तकारी में रोटी हवीब के सामने रल दी। हवीब ने कीर मुद्द में रपादि मा कि सामदेन की रोजनी में मजावत के माथे की चोट देवकर उमने पूछा---"बह क्या?"

मआदन चुप रह गई।

६६ क्षेत्रे दिव जन्मीनः

· 其情思 生 超级 多少。

सवादल क्षेत्र सहित्र

हतीय ने स्थानी पांच दिया। एताची जो के क्या प्राप्त मंद्री भग रत अपने ताओं में तुबाने नगर एने रिजापने लगेरे, चनात हमीन की मास मी गुला था जैसे र ! सदा गर है ।

की भी गाल पर में १ मार्च वाग्य वर्ण, दिश ने इ गण् । व्यक्तिया ने नहीं मम्प कार और काल की र महा । जीने के लक्त्रमन की प्रार्थ की जाए धा हतीय लंदरण भाग गया ।

मजादर ना भार और न्यवहार देल गुजलमन की मुखसील हुँगी उनने पूछा । "हवीर नामा था ?"

मभारत रोने लगी। त्रहसम दोनो हाथी में सिर थामे बैठ गया। व् गीन रहा था, बता करें है औरत की मार्ग में फावता कता ? उसी जिन्दगी में एक ही बार म राइड को पीठा था और वहीं अधिरी भी पा। वह दरभगन मभादत की ध्यार मज्या था। यीती की सपाई उमें कार्य गार देशी भी परस्तु जिल्लान की जिल्हाणी !

"तू ही बता में मना गर्म मजारत" हे गुरह्मम में पूछा !

आर्थे फार्य की और शुका मजादत ने उत्तर दिया — "सह जिन्द्री की रोग है, जिन्दगी के साथ जाएगा। में मर जाऊ। मेंने कई दके सौचा, में हुत फाकर सी रहें। गुरक्की में उस्ती है, दीज्य की आग में जर्त्मी !"

"तो फिर ?" न्रहमन ने पूछा।

नूरहसन के पैर पकट मजादन बोली—"तुम कलमा पड़कर हुई जिवह कर दो ! में विह्न भनी जाऊंगी । यहां तुम्हारा इतिहार कहंगी।"

एक लम्बी सांस खीचकर न्रह्यन खाट पर लेट गया। वह छत ही ओर देखता रहा। रात बीत गएँ। सुबह की सफेदी आकाश पर छाते तर परन्तु दिन नहीं निकला था। वह प्रतीक्षा में था। ऊंचे मकानों की ही पर सूर्य की किरणें फैल जाने पर वह एक लम्बा सांस लेकर उठा। उता

अंत्रिं पत्यर में नरह व्यिष में । उसकी आवाज ग्रीमी परन्तु पृत्र थी । उमने मजादन की ओर बिना देशे ही कहा---"तू वहा-धोकर पाद-माफ ही बा, में बाजार ने होकर आता हैं।" वह जीने से उत्तर गया।

सभारत भी जीनाम निरम्य कर चुनी भी । उठकर गहाई और देर के दिन माफ कपट्टें पहल नितः । फिर छत्र गर दीवार के पान जाकर उगमें हमींब को पुकारा । उनका न्वर निर्मय था और आंखों में विजय की बारणी-सी प्रमानना।

"प्यारे आओ मिल ली !" उनने स्वय हवीय के गले में बाहे बालकर बहा---"पवराओं नहीं, किर मिलेंगे । हम जाने हैं।"

"कहा ?" हवीब ने आश्चयं से पूछा ।

"उस युनिया में "जटा हमद नहीं होता ! " हवीब के सिर को चीने पर में उसने प्यार निया, जूमा और सिर कहा-- "वम नलाम !" ममादत सभी गई । हवीय कुछ देर मीकना रहा, फिर पवचाकर मीचे गानी में दीड ग्राम।

मुन्हान लोट आया। मायात ने दीवार के पास काट पर धूनी हुई बाहर विद्या दी थी। कुरान महीक मिरदाने रवकर वह नेट गई। भूगह्वता मैं जब के जन्मा निकामा। बाह कनमा पाक पदता आता था और कांचन हुए हाच में उक्तर नी धार मायादत के मने पर केरता जारहा था। मायादन की आर्थे मुद्दी थीं।

मृत भी धार बहुनी देखकर मआदत ने अपनी उंगली हर कर बीवार पर अन्द्रह अक्षरों में जिल दिया---''हवीव ! '' और दूसरी बाह न्रह्सन के गुल में आसकर उसका माथा ऊकाकर चम निया !

वीने में नींचे जोर की महमहाहट मुनाई दी और फिर धक्ते से सावल उसड गई। पल-मर में पूनिस और हबीन सभादन की खाट के पास पहुंच गए।

समादत ने आधें खोलकर देला । पुलिस पूछ रही थी---"सून किसने किया ?"

नुस्तान होने वे अनुसार किए गुरू जार तथा आर प्रांती की बिनक्त हो हर छ।

समाज्ञ । ने एक भी भी ने पत्र पत्रकार देशा स्व किया ।

ख्त में भना एवं उस वृष्ट्रवान के जान था प्राप्त प्राप्त वीर प्रसास स

पुणिय ने पुरार । "प्रध्वया प्रयक्ति हाथ सं केन है ?" ममादा के शोद हिंद भगन्तु भावरातम निवास सबी। पुनिम में पुणि

"नगा उरपास सुमन कीन विमा है ?"

सभावत में वाले अकाकर हामी भरते। सभावत की भागी कि ने गरी।

महाँप दीपरेनीम प्रकृति से ही विरक्त थे। गृहस्य-आश्रम में वे केवल थोड़े ही समय के लिए रह पाए थे। उस समय ऋषि-पत्नी में एक कत्या-रत प्रतब किया था। महींव भ्रम और मोहके बन्धनों को जान की अगिन मे मत्म कर, वैराय माधना बारा मुन्ति वाने के लिए नर्मदानीर पर एक आश्रम में आ बसे थे। ऋवि-पत्नी भी पूत्री के साव एक वर्णकुटी में उन्हीं-के समीप रहती थी। वे भी ऋषि पनि की खेबा-मिक्त कर, उनके जान के प्रकास में, जीवन के दुनह दु व — मावाभव संबर से मुक्ति पाने की आसा महर्षि ने अपनी नण्या भी जारमा को पहले गृहस्य के माया-वण्यन के वीवड़ में पंतरे देकर, फिर तपक्चमां डारा मुक्ति की सामना का मार्ग दिखाने की बरेबा जमें आरम्भ से ही तप और त्याय द्वारा मुनित के मार्ग की दोजा दी भी। बत्यसतान्द्रभी और तपोवन के पत्र-परियों की सगति मे

पत्नी ब हा चारिपी निद्धि का गारीपिक और मानविक बाराना से कीई परिषय न मा। आध्रम के नियमों के अनुसार आध्या मुख्य और गारीर गीज मा। बहु बारिजी विद्धि अपने गारीपिक विकास से अनुसार सहसर आप्ता को बहुवानने में ही तरपर रहती थी। सिद्धि पूर्ण बहुवर्ष का पासन करते हुए छन्नीस वर्ष की आनु की नमंदा तट पर महीप दी चैलोम का आश्रम पर्वती की गुकाओं है कि वनस्थित में था। मोदानरी, मगा, यमुना और हिनातम तक के त्योवनों है महीप दी पैलोम के अनामिक कोग की नवी थी। उनके यहां कर्मकार ही महत्व केवल चैराग्य साधना के लिए ही था। उनका उपरेश या—"कर्ने और मंस्कारों के बन्धनों में फ्यी मनुष्य की आत्मा माया के आकर्षण निवंत होकर जीवन और मृत्यु के बन्धनों में दुःग पानी है। दुःस से मृति और णादयत आनन्द की प्राप्ति का मार्ग कर्म और संस्कार के बन्धनों में आत्मा को मुनत करना है। मनुष्य-जीवन का उद्देश्य आनन्द की प्राप्ति है। विस्थानन्द की प्राप्ति है। विस्थानन्द की प्राप्ति है। विस्थानन्द की प्राप्ति है।

महिष दीर्घलोम अनासित के मार्ग में विश्वास करते थे। उनते उपदेश था—"संग से मोह उत्पन्न होता है, मोह से काम, काम से कों। और कोध से बुद्धि-विश्रम। बुद्धि-विश्रम सर्वनाश है।" महिष परम जाती और वेदोद्गाता थे। अमरत्व का जान प्राप्त करने के लिए।जिज्ञासु बहुः चारियों का दल उनके चारों और बना रहता था। दूर-दूर से राजा और कृषि अनामिन-योग का उपदेश लेने बहा आते थे । चानुमीन आने पर अनेक परिवात्रक सन्यामी भी आद्यम में आ टिक्टों थे।

बातुर्मीन आरम्ब होने पर आक्षम में निवास करने के लिए आए परिवाजक सर्पालयों में बहुत्यारी नीडक की आए में। बहुत्वारी नीडक हो गोवन से पूर्व ही आग लाम हो नवा था। उन्होंने सावारिक मोहमाल में फंफर कहान्य में हो ने पिया को माने वहण कर निया था। आपु अधिक न होने पर भी उनका जान ओर योग परिचाय था। उन्होंने विषयों की मिस्सारता के तरह को बाल-बन्दु हारा पद्वागकर परम स्वय बहु का सालिया प्राप्त कर निया था। अगायिक और समाधि हारा उनका मार्थनोंक कीर बहुत्याले के मन्यान बिकास था। वे एक ही समाधि में दन और पास्त्र दिवाले के मन्यान बिकास था। वे एक ही समाधि में दन और पास्त्र दिवाले के मन्यान बिकास था। वे एक ही समाधि में दन और पास्त्र दिवाले के मन्या पास्त्र की मार्थ स्वाधि में उनका नाम 'नीडक' पर पाय पा उनकी समाधि की बानित की महिमा क्यां विताओं में फैल गई थी।

महींद दीर्पलीम ने ब्राह्मचारी बीडक की अन्यर्थता की और उनमें मार्चमा की कि वे अपने अवीकिक ब्राह्म की करिक में उन न्योगों का अज्ञान पूर करें जी जानमीम के नाम पर तर्क का ब्राध्य सेकर, बुढि की लक्ष्यदता ब्राह्म अपनी बादमा की तुम्ब करने की बच्छा करते हैं।

यस-पुण्ड में मुलगती हुई पवित्र मसिवाओ, पूत और सुत्तवित सूत्ती के पुनीत धूम में आध्यम का वातावरण मुवानिल हो रहा था। उम सुमान को मन्त्र में वित्र था। उम सुमान को मन्त्र में मन्त्र में सुमान की मन्त्र वे महि वेनीम मामती और पाटल के कूमों की सुग्य की मृहर्ष अधिक रिपर वाम रही थीं। आध्यम के विकास बट बुत के भीते कृषि-वृत्र के साम कर्मा के साम कर सुन के नित्र एक्त थे। कुछ बृद्ध त्राधिक कि मामत कर सुन के नित्र एक्त थे। कुछ बृद्ध त्राधिक सिंग प्रति के सिंग एक्त थे। कुछ बृद्ध त्राधिक सिंग मामत की सिंग की सिंग की साह कोर वेठी थे।

ऋषियों की अम्बर्वना में फैनी हुई बिन की चाह का भीजन पाकर आधम-निवामी मृग-तृष्ति से किल्लोनें कर रहे थे। बुक्षो की टहनियों एर वेर्र पर्ती अपने पानी को जोने के सन्तर्भ मनगर मह पहिल्ला मानानी कार्ष लोग उन गर मामारिक्तामा में नियम बाद्यांणी मीत्र द्वार चिर्णात, प्रविनाणी सुम की प्राणित गर प्रवचन मृत की थे।

धताषारी नीच्य का गुलनगण्डा जहातुर भीर समय (बारी-मूंग) में इका भार उनके मरतकत्वर नमेदा के गृजिन का सौदानि पुन्द वीभायमति था। उनके नेत्रों में ज्ञान की उस स्थाति निकल करी थी। उनमें आर्त-विज्वास का नेज था। उनके लामपूर्व विसाल सक्ष्यल से शीम कटिया मृत का यहाँ। तीत सदक रहा था। तास्या में शीण उनके उदर्पर विवित पट दही थी। कटि में नीने जरीर मन के नहण से उन्नाथा। वे प्राप्त की मुद्रा में बैठ चार घड़ी तक प्रवचन करते रहे।

ब्रह्मनारी नीत्रक ने कहा - "तक मुद्धि का विकार है। युद्धि संस्कारी ने आवेष्टिन है। मनुष्य की इच्छा और यामना ही उसके तर्क का माने निष्चित करती हैं, इमलिए नके प्रायः प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वासनी के मार्ग का प्रतिचादन करने लगता है।"

क्रह्मनारी कहते गण्—'' क्रह्मज्ञान अनुभूति द्वारा ही प्राप्त होता है। अनुभूति ही प्रधान है। तर्क भी अनुभूति पर आश्रित है। सृष्टि की कारण-भूत णिक्त, मायामय प्रकृति और मनुष्य की अनुभूति यह सब एक हैं। जिस प्रकार बायु के स्पर्ण से जल की सतह पर उठनेवाले बुलवुले का अस्तित्व सारहीन है, वह क्षणभंगुर है, वह वास्तव में महत जल-राशि का अंश मात्र है; उसी प्रकार मनुष्य का जीवन संस्कारों के वायु के स्पर्श से ब्रह्म के अपार सागर में उठ जानेवाला बुलबुला मात्र है। जीवन का यह बुलबुला सत्य नहीं हो सकता । सत्य और अमर शास्वत ब्रह्म ही है। और दु:ख का कारण है।

उ. .. " आत्मा ब्रह्म का अंग है गरीर ब्रह्म की क्रीड़ा-प्रकृति का अंग है। जारण नर्ट इनके संयोग का अस्तित्व अस्थिर है। हमारे दुःख और सुख की अनुभूति मे-य-२

केतल क्षम है। सहकारों को बाबु से सर्वाम बुलतुने का जल में मिल जाना ही आतमा का ब्रह्म से भिल जाना है। बही विरामुत है, वरमपद है। ग्रामक मुख जन नष्ट होने हैं तब हुख की सनुभूति होती है। वास्तियक मुख, प्रामक सुख को छोड़कर, विरामुख जीवन-मुक्ति की साधना में ही है। दिएरमुख इंच्छाओं को जीतने में हैं, जिनका मार्ग समाधि है। समाधि मीर के स्ववधान को चारणार है। मीर का मोह करना संशोग का साधान है। मीरी साधान का कारणार है। मीर का मोह करना दस कारणार को दृढ बनाना है। भ्रम से फलानेवाली सरीर की पुकार की विन्ता जानी स्वामित को नहीं करनी वाहिए। सरीर की जिन्हामों से मुक्ति पाना ही परम मीर्क का मार्ग है।

महाकारी नीडक की दृष्टि कपने सब्दों का प्रभाव देवने के लिए श्रात्वृत्द के केहरों वर यून जातों थीं। कुछ तपन्ती नेत्र मूदे समाधिस्य होकर इस मान को मनस्य कर गडे थे। कुछ की दृष्टि विशास पाव से

वक्ता के मुख की ओर लगी हुई भी।

श्रह्मचारी नीडक ने काणी वार्ष और देशा। उस और आध्रम की प्रपित्तिया वेदी हुई मी। शीकन ने उनके गधेर को अब्द करते छोड़ दिया या। जीमन में मुल की कोई आया। येदा न रहने पर उनके उत्पुक नेक, जनेर छोटीर की पुछाओं छै, अहुमचारी के सुध की सारवान देनेतले मध्ये को निगलने का यदन कर रहे थे। उनकी रीडें सुक गई थी। वकरे के गले से सहकनेवाल बनों की भारति निध्यायन हो गए, उनके स्तान, उनके गामनी गारे पुरुनो को छु पहें थे। उनके शबीर भूमकर केंके हुए आम के छितकों के समान जीवन की निस्मारता की बाद दिसा रहे थे।

बृद्ध वर्गास्तिनयों के बीच में बैठी हुई थीं ब्रह्मणारिकों सिद्धि। उसके सुर्रातित योजन का रूप तच की बॉल में तपकर बौर भी अधिक प्रदर हो रहा था। वह जिसरी हुई खाद ने जीच ने उस बाए मूर्बमुकी के पूज के समान जान पढ़ती थी। उसके सिर पर जटा का जूड़ा बचा हुआ था। उमसी लाजी पनकें मुरी हुई थीं। कठोर बोजन के कारण स्वता पर देनी ग्रांचारा मा अदेकर श्रोंचन का रिनार स्थानात मुझ प्रदार पा। उने सर्मार्गत कर १८४८ कराती को छात व स्थानकर श्रेंच की रूमी मेरि भीते बधा था। संद्यांचारियों केन्द्रगढ़ का जित्रकुत मीता रूप मार्थिते जागन के बैठी थी। एयक मुख्य बाहु यात नहान के सिह निए पानी की प्रशास रहा थे। एसके निरुद्धन अधार के बीदन भी स्पृति से सिंह प्रार रही थी।

वहावारी गोरक पर बदावारिकी गिडि की उपस्थितिका प्रमानी विना गरह गवा। उन्होंने अपने अवस्थ में कहा—"वैशास और मनी के लिए उपपृक्त समय योजन ही है। •• "परन्तु वेधम गए और हुए मैंने कर बीचे —"जीवन में जिस गमय भी मनुष्य आयक्ति को भग गमत है। और निवृत्ति में परम गृत का बोध उमें हो जाए, वैराग्य गामना के जिस मुखापरथा की प्रसिद्धा करना देश

यदानारी ने ब्यापमा की —"बृद्धावरथा में इन्द्रियां निर्मान होगी गांगारिक मृत के रकूल गांधनी की भीगों में भी अगमवें हो जाती हैं। ऐसी निर्वल इन्द्रिया वायु में भी युक्त आवान को और उन के प्रवाह के हैं। अधिक प्रवल मगोंविकारों के वेग की किय प्रकार रोक सकेगी? वे पर सुगा के अत्यन्त मुक्त गांधन जान को किय प्रकार प्राप्त कर रातेगी? यदानारी का अभिप्राय वृद्ध तपित्तिगों के जराजी के, फल्युमान, अर्थि कर पारीरों से था। उन्होंने कहा —"वृद्धावरथा का वैदाय वातना है दिन्द्रयों की पराजय है।" योवन का आतम-विद्वास अद्धावारी के विद्याविकास के मंग लेने लगा। उन्होंने कहा —"जिस समय पारीर के अंति और स्पन्तन की मक्ति से स्फूर्ति का प्रकाश फैलता है, वही समय वाहनी से युद्ध करने और ज्ञान-ज्याजन तथा कठोर गांधना का है।" उनकी दृष्टि सवल स्वास की गति से स्पन्तित, ब्रह्मचारिणी के वक्षस्थल की और चली गई।

मध्याह्न-प्रवचन समाप्त होने पर ऋषि लोग कन्दमूल का आहार करने के लिए चले गए। ब्रह्मचारी नीड़क अपने विचारों में उतझे हुए नमंत्रा तट पर जाकर नदी की सहरों का बहार सहते एक विसाल सक्ट पर बैठ गए। शुधा की अनुभूति ने उन्हें बेताबनी थी, यह समय कन्द्रमूल के सेवन का है। उन्होंने कादीर की उस पुकार की बिन्ता न की। यदिर बा कटोर बमन, उसकी पुकार की उसीहा ही तपस्या है। इस तप का अस्पना मंत्रीय उसाहरण बहुआपी सिद्धि के रूप में उनके समुख था, परन्तु युवती के प्राप्त की वे सन में आने देवा उचिव न समझते थे।

बहुम्बारी वल के प्रवाह पर दृष्टि ववाए विधार में मान थे। वे स्वच्छ जल में किल्लोल करती यहांतवाँ को देवने हुए, हुओं की मूल बातना में बुद्धि काले का च्याय मोचन ते हो, परमू विचारों के मूल में सहाबारिणी तिद्धि का समाधिस्य केच दिलाई पड जाता; मीथे मिटवर, उन्नता सत्तक, मोमिका, दिबुक, उरोजों की मिला और त्रिवासियों में छिपी नाम सत्तक, मामिका, दिबुक, उरोजों की मान करीर के जोभाग के सन्मुप परालन में एक-कुनरे पर एसी हुई विच्छलिया और हरेनिक्सा।

बहुम्बारी में इसके पूर्व भी नारी को देका था। उन्होंने अनेक बार पानित अग-वारितियों और बारीर को सन्त्रों में बारेटकर राजमार्थ पर बनती हुँ दी पत्र भी रे मोह में निक्क आत्मान पर कर कि दियों में को से में हुँ में विकास आत्मान पर कर की हकते में कर मन में बहुँ में परन्तु बहुआरों नीदक के मन में बहुँ में परन्तु बहुआरों नीदक के मन में बहुँ में परन्तु बहुआरों नीदिक का समाधित्व रूप बार-पार जनकी करना में बहु का हो होता था। उनहें बाद आ बाता—बहुआरीरियों नैक मूदे भी परन्तु अनेक श्रीता-बहुआवारी चारिय और सरस्विनिया एकदक उनकी और देण रही थी—मिदि नेव नव वो बूदे भी र अगुवारी के मन में अगत उदि तथा।

महानारी ने स्वय अपने प्रस्त का उत्तर दिया—प्रवथन को स्प्रान्पूर्वक मुन्ते के निष् । उसी हाण विवार आया—मम्मवनः इससिए कि मह उन्हें देनना नहीं चाहती थी। परन्तु नह देसता बयो नहीं चाहती थी? मिद्धि की उनने बया मय हो सकता था?

वदाचारी ने स्वयं ही उत्तर दिया-समाधि के लिए वे भी तो नेव

14 केरी किए कहा हिला

मुद्द ने र है। एक क्षत्र किया बब्दू के अब होता है रे उत्तर मिना — गेनार के दू को से भूकि पार्व के जिल्हा होता है के भूदबाद सेमाद से जाना मनक रिक्टिंग किया जाता है।

प्रदेशको समाधिक्य हो जाने के लिए शिवालक पर पद्मासारी के गए। नेव एवं विने से एके उनकी कृष्टि जन में किए तेव कर्ती हुई महितीं भी और एके—पट महार्थकार रे

नर्भदा गर की उन्हार जिल्लाओं में सुध धानायनेपी तीय गीतार पूज उठा। प्रदानारी की दृष्टि उम भार उठ एई। नदी पर पूज नमन्त्री गर्ममें कर्षी मगमरमार की बुध्व चट्टान पर नियानकर कार करि गातारीय पर्भी की धार कारर भारत में चीच उठाकर एक पीत गीन रही भी। जीन के अपर पर फरणहाना हुआ पर्धी भी व्याकुतान भरी उन्ने निनंदर हदय में उठे धावेग में आवास की मूंजा रहा था। एक प्रवत्त अनर्पण दीनी की व्याकुत पर रहा था। ब्रह्मानारी नीटक की रोमधि निहर उठी। उन्होंने एकाम होकर मीना नतन अथवा मन की कीन पृति दन पक्षियों की विधिष्त कर रही है ? उन्होंने सोना, मनीवेग को वम करने के लिए इन पक्षियों को ध्यान-मन्त्र हो जाना चाहिए। इसवर भी विचार उठा—पर्यो ! "मुख्य की प्राप्ति के निए ? "यह चीन और यह मछिन्यां समाधिस्थ नयों नहीं होते ? "इन्हों जन्म-मरण के बन्धन से और इन्हों से भय वयों नहीं नमता ? इनके वारीर में स्थित आत्मा को मुक्ति री दच्छा वनों नहीं होती ? "ग्या वे ब्रह्म का अंग नहीं हैं ?

यहांचारी की णंका का उत्तर था—गह जीव अग और अज्ञान के कारण दुःख को दुःल नहीं समझ पाते। परन्तु इस उत्तर ने उनके विचारों में खलवली मचा दी। प्रश्न उठा—दुःख को दुःरा न समझना अम और अज्ञान है या दुःख से सदा भयभीत होकर उससे वचते रहने की चिन्ता में दुखी रहना अज्ञान है ? और भी प्रश्न उठा—इन जीवों के अज्ञान और अम का कारण क्या है ? क्या यह वासना के दास है ? यदि वे वासना के दास है तो उनकी यह वासना, उनके शारीर और ब्रह्म के अंश उनके आत्म

काही गुण और स्वभाव हैं ! इस खीवों का घरीर और अस्तित्व क्या उनकी अपनी इच्छा या बामना पर निर्मर है ? नहीं, यह तो बटा की ही शीला है। इहा की इच्छा के विरद्ध वे कैसे जा सकते है। मन्ष्य भी बया भारमय बहा की इच्छा के विश्व जा सकता है ? क्या सनुष्य की प्रवृत्ति, समको इन्छा और बागना भी प्रकृति और बहा का विधान नहीं है ? बया मनुष्य भी तपस्या, ज्ञान-उपात्रेन का प्रयान और वागना की दमन करने की वेप्टा ब्रह्मगरिए के विधान और कार्यवस के विग्दा नहीं है ?

हराचारी नीडक मनाधित्य न हो नके। वे गोचन चने गा-भय और पीडा इन वश-पक्षियों के जीवन में भी आती है परस्त् ये द्राप्र शेर पीडा की आशका और जिल्हा को ही जीवन का लब्य बनाकर मुक्ति की चिन्ता नहीं करने रहते । वे मुख को मुख और हुना को दुख मानकर जो कुछ जीवन में मम्मूल आता है, उसे बहुल कर जीवन की यात्रा पूर्ण कर दैने हैं। यही बास्तविक अनासविन है। जीवन की यात्रा समाप्त हो जाने पर इत जीवों और मनुष्य की आत्मा में क्या कुछ अन्तर रह जाएगा ?

मामुख शितायण्ड पर पर्छे की फडफडाहट और चीरकार मुनरर बहानारी की दृष्टि फिर उस और गई। चील का जोड़ा भीवन और जन्म के कम को निरतर स्थाने के प्रयत्न में लगा हुआ था। बहाचारी का धारीर एक भद्भुत रोमाच की सिहरन और उद्वेग से वस खाकर रह गया जैसे वेग से दौरकर लह्य को पक्रदने समय सहय अदस्य हो जात ।

ब्रह्मचारी को स्मरण हुआ कि वे समाधित्य होने जा रहे थे परस्तु अब ममाधि के लिए दृढता और उत्साह शेष न रहा था। यन में तर्क और शका ने स्थान में लिया था। समाधि के प्रति विरंतिन के भाव ने कहा-नहज युख में उपराम होकर तम, त्याग और समाधि हारा भी गुछ की ही तो योज की जाती है। यह क्या प्रवंचता है? वितृष्णा की एवं मुक्ताज रे महाचारी के होंठों पर सब्दे क्षम्यू सनिक विरक्तजर रह गए। उनकी प्रीया , पराजय के में मात्र में एक और शुक्र गई। एक सीस मीचकर उन्होंने . कहा-'जीवित रहकर खीवन के अस का विरोध···?'

प्रतालारी वीचक की विचारी की भूत-भूतिया में भूत जाने के बारत भूषा और समय का बुद्ध ध्यान न रहा। मुर्व भाकाण के मध्य से पत्चिम की और दलता चला जा रहा था। बहात्वारी नीचक के मस्तिया के अति-रिक्ष विचाल प्रकृति का लेख स्वाचार गाँव के अवाद में स्वामाविक स्व है सहला चला जा रहा था।

प्रतानारों नीएक ने नदी के जल में निलोदन का पहर मुना। दृष्टि वाई और नदी तट की और नवी गई। तट के समीप एक स्थान से जल की लहरें वृत्ताकार फैलती हुई कुछ दूर जाकर जल में निलीत ही रही भी। वहा समीप ही तट पर मृगनमें और कमण्डल भी रया हुआ था। कीन? मह प्रथन नीएक के मस्तिएक में उठने में पहले ही फैलती हुई लहरों के वृत्त के केन्द्र में, फैले हुए भीगे केशों से इका मिर जल के ऊपर उठा। दो हाथों ने उन फैले हुए केशों के बीन से मुग को बाहर किया। जल की वृत्ताकार लहरें नय सिरे से एक बार और फैलने लगीं। नीड़क ने देणा, वह आकृति ब्रह्मचारिणी सिद्धि की थी। ब्रह्मचारिणी के प्रमश्रुहीन मुझ की कोमलता से ब्रह्मचारिणी इवकी लेकर अपने शरीर का प्रकालन कर रही थी। उसके अंगों के हिलने से नमेंदा का जल क्षुट्ध हो रहा था और उस वृत्य से उसी मात्रा में नीड़क के शरीर का रकत भी।

ब्रह्मचारी नीड़क उस ओर से दृष्टि न हटा सके। स्नान करके ब्रह्म चारिणी लिढि तट की ओर चली। तट की ओर उठते हुए प्रत्येक पद से उसका गरीर कमगः जल के वाहर होता जा रहा था। नीड़क की दृष्टि निरंतर उसी ओर थी। विचारों के क्षोभ से उनके श्वास की गति तीब हो गई थी। वे हृदय से उठकर कण्ठ में आ गए उद्वेग को निगल जाने का प्रयत्न कर रहे थे।

अपने यौवन-धन की शत्रु पुरुष की दृष्टि से सुरक्षित उस स्थान में ब्रह्मचारिणी जल के आवरण से निकलकर अपने शरीर को दूसरे आवरणों में सुरक्षित करने लगी। उसने कटि पर मृगचर्म को मूंज की मेखला से याग्रा और उन्मन बर्नुल उरोजो को करती बस्कत के बर्नुल में छिपाकर मूज की रस्ती से बीठ के बीठे बाध लिया, मानी तप-नामना के शनुओं को विपन दासने से दूर रनने के लिए बन्दी बना दिया हो।

ब्रह्मपारिणी निद्धिने स्नान के पश्चात् नदी से कमण्डल भरकर पश्चिम सितिज पर अनेक रंग के बेचों से घिरे सूर्यदेव का सर्पण किया और आध्यम की और कलने लगी।

सिक्षि ने सहना पुकार मुनी - "ब्रह्मबारिणी !"

ब्दिकर निद्धि में अनने बाद ओर देखा । सन्ये पग रखने हुए ब्रह्म-पारी मीडक उभी ओर आ रहे थें । ब्रह्मायिणी ने नतियर होकर उन्हें प्रमाम किया । यह विधारकर उपका धरीर हाला उठा कि इस स्थान की उनने पुरुष की वृद्धि से निरापस समझा था ।

बहुमारियों किर सुकार नेपोधन नीडक भी आजा की प्रतीक्षा कर रहि थी। नीडक वी नीड दृष्टि बहुमारियों की खेडूनिय, मीन, गंयत मुद्रा की कीर थी। उनके मुन से शब्द नहीं निकल पा रहे थे। उनके तरफ स्वर में पुर निवा- "बहुमारियों यीवन का उद्देश क्या है ?"

मिद्धि ने उत्तर दिया — "जीवन के बन्धन से मुक्ति !"

नीडक ने निद्धि के मुख पर दृष्टि केन्द्रित कर पृथा---''जीवन का प्रयोजन क्या स्वय अपना नाम करना ही है ? ब्रह्मचारिणी, जीवन है क्या ?''

मिद्धि ने दृष्टि शुकाए उत्तर दिया—"आत्मदर्शी ऋषियों के बचन के अनुसार शीवन इस का बन्धन है ?"

सिंदि के नन नेतां नी कोर देश बहुत्ताची शीवक ने फिर प्रश्न सिंदा — "जीवन दुन्न का बध्य है और जीवन का उद्देश्य इस तथन से पूर्णित प्राप्त कर है दि बहुत्ताचित्यों, जो कहा जाता है और जो पूना जाता है उसे एक ओर ट टोड्कट तुल अनुसूति की स्वाप्त करके उसके पुनित पाने गृष्टि की सभावक बहुत्वाचित जीवन की स्वाप्त करके उसके पुनित पाने ने लिए ही जीवन नी वृष्टि करवी है, यह बात वर्षक्षत्वत और अदिसंगत

४० भग विषय करानिया

मही है हैं

मिद्धि ने कुछ क्षाप निजास्कर उत्तर दिया—"महीत के प्रवत्तन में यह प्रयम कभी नहीं आदा । ज्ञाननिष्य, इस प्रश्न का समाधान पर्दे ?"

नीटक ने फिर प्रश्न किया—"शियन का सबसे अर्थकर दुना की नहीं कहानारिकी ?"

ब्रह्मवारिणी ने मधिष्य उत्तर दिया —"मृत्यु ।"

हर्ला गुमानाहर में नीडक के दमशु थिएक उठे। मिद्धि की दृष्टि नमंदा के पुलिन पर थी। नीहक योले— "मृत्यु ! प्रद्वानारिणी, जीवन के फ्रम में मृत्यु अनियायं है। उसका भय भ्रम है। वह व्यर्थ आतंक है। मृत्यु जीवन को समाप्त नहीं कर देती। यह जीवन की श्रृंगला में जीवन की एक कही को सीमा है। जीवन की एक कही के बाद दूसरी फिर तीसरी फ्रमणः नलती हैं। जीवन के फ्रम को नलाना ही सृष्टि का प्रधान कार्य है। शंवा उत्पन्त करके उसका समाधान करना, दुःश की कल्पना कर उससे निर्वाण का उपाय हूंद्वना, क्या यही जीवन का उद्देश्य है ? ब्रह्मनारिणी, जीवन की इच्छा, प्रवृत्ति और गति ने क्या कभी तुम्हें स्वाभाविक मार्ग की ओर नहीं पुकारा ?"

सिद्धि ने गुरु क्षण मीन पहकर उत्तर दिया — "ज्ञाननिधि, मेरा तप

अपूर्ण है। मेरी आत्मा ने अभी ज्ञान पाया है।"

"ब्रह्मचारिणी, आंख मूदकर जिस ज्ञान की खोज की जाती है, उसके विषय में प्रश्न नहीं कर रहा हूं," नीड़क ने कहा—"प्रत्यक्ष अनुभव में जी जीवन और ज्ञान आता है, उसीकी वात पूछ रहा हूं।"

सिद्धि ने प्रश्न का भाव ठीक से न समझकर नेत्र झुकाए निवेदन किया — "ऋषिवर का तत्त्व में ग्रहण नहीं कर पाई। तपोधन, उपदेश

कीजिए, जीवन क्या है ?"

नीड़क ने दोर्घ निःश्वास से उत्तर दिया— "नर्मदाका प्रवाह ही उसका जीवन है। यदि प्रवाह की गति का अवरोध करके इसे उद्गम की ओर प्रवाहित करने की चेष्टा की जाए तो क्या होगा? · · यदि यह नदी प्रवाह को दु.स समझकर गति-निरोध द्वारा प्रवाह में मुक्ति प्राप्त करना चाहे तो क्या होगा ?"

सिद्धि ने अजलिबद्ध करो से बिनय की—"ऐसा जगम जान केवल संपोधन मित्रय-प्रध्या ऋषि लोगों को ही प्राप्त हो सकता है। ज्ञानधन, अभी भेरा आरक्षा जानहीन और निवंश है।"

मीडक बोले—"बहाचारिणी जीवन की डच्छा की ही तुम निवंतता समाती हो। उसे बासवा का नाम देकर अपनी मन्त्रूण वालि के जीवन का हुतन करने का पान करती हो। तुम हुन्य को तुस और मुख की हु ल मानने सल कर यह यूक जाना चाहती हो कि जीवन बया है?"

भीडक के सरीर में रखत के बेग की उसंजनों का जान, सन्पर्क के अभाव में, सिद्धि के लिए सन्भव न या परन्नु प्रान: प्रवचन के गम्मय कहा-चारी के स्थिर-गन्भीर स्वत्र और हम गम्मय के स्वर के तरल कन्प्रन में सहाचारियों अन्तर अनुमन कर रही थी, एकास्त्र में मिनने के सकोच से एक सपुर पूरना सहाचारियों के प्रतिनादक में प्रवेश करती या रही थी। उनमें यद-अंबति होकर नियम की--"सानग्रन, सानदान दौतिए!?

"साम ?" तीहक ने एक दोषे निःशवात लेकर नदी पार संपारसर के उत्तर पुष्त निमाणकों की और हृष्टि उठाई। चीत की जोड़ी अधी तक अपने जीवन को मिल को शारी में तीहन न एक नवने के कारण उपके सिए नवीन घरीरों की रकता में ज्वालन पा । चरम सीना पर पहुंचा हुना उत्तरे जीवन का उक्काल तीह चीहरारों के रूप में नमंत्रा तह की उद्युग निमाओं से टकराकर जन पर गुज रहा था। सीहक ने उस और एवंद कर कहा.—"उस ओर देशी, अहानारियों!!"

बहानारियों निदिने दृष्टि उठाकर देशा । विषयात्य वारीसें का ऐसा ध्यापार जनने पहते भी देशा था । ऐसे अन्यत्य पर जन ओर से दृष्टि हटा-कर माणापम हारा मन और इंटियों ने निरोध कर यन को बिकार के अक्ष्मण से क्याने का अवस्त जनने दिना था परन्तु पूर्ण पुता बहुआरी की जानियनि में, उनके मनेन से उन दृश्य को टेनबर बहुआरोसी का मरीर बंटिका हो उटा। उनके केंत्र भूत गए । उनका गुरा आस्ता ही गया ।

क्षताना में मीडक के इसम कर वेग अधिक नीव ही गया । उनके स्नापु

वीया के नने हुए ताने की आहि जनसन्तने समे । ब्रह्मनारियी का मरीर उन्हें तीय येग में आकर्षित कर कहा था। नेव ह्याए यहानारिणी का मुत थारका हो जाना ब्रह्मवारी को असद्य हो रहा था। उन्होंने एक पग समीर हीकर कस्थित रुपर में पूछा —''क्रसानारिकी, क्या वह पाप और अनावार है तो पया जीवन भी पाप और अनानार नहीं ?''

प्रस्तावारियों ने नेन मुदक्क कम्पित स्वर में उत्तर दिया —''त्रेषीयन, काषियों के यत्तन के अनुसार यह अज्ञान के कारण, वासना के पंक में फेस-कर मुक्ति के मार्ग से च्युत होना है । आत्मा को दुत्व के बन्धन में कंगा देना है। जीवन क्षम और मामा है।"

"ब्रह्मचारिणी, यह दुःय का बन्धन है ?" ब्रह्मचारिणी की ओर एर और पग बढ़ाकर नीड़क ने प्रश्न किया - "तुम्हारा विश्वास है, चील की यह जोड़ी इस समय जन्म-मृत्यु के माया-बंधन को सम्मुख देखकर भग है मातर होकर चिल्ता रही है, या वे जीवन के उच्छ्वास की पूर्ति के अविग में आत्म-बिस्मृत हो रहे है ?"

"वया यह जीवन माया और अम है ब्रह्मचारिणी ?" ब्रह्मचारी ने ब्रह्मचारिणी को मौन देगकर फिर पूछा--"जिस सत्य की अनुभूति हम रोम-रोम से कर रहे हैं, संसार में व्यापक ब्रह्म की वह शक्ति माया और भ्रम है। इन्द्रियों से प्राप्त होनेवाले सुख की उपेक्षा कर, अतृष्ति के कारी जित्पन्न दुःख को सुख समझने की चेट्टा करना सत्य है ? ब्रह्मचारिणी, क्य तुम सत्य को मिथ्या और मिथ्या को सत्य मानने का यत्न नहीं कर रहीं

सिद्धि मौन रही।

नीड़क ने अपनी तर्जनी से संकेत कर पूछा — "ब्रह्मचारिणी, क्या पुर में कामना के रूप में जीवन की शक्ति को अनुभव नहीं कर रही हो ?

٢

बया तुम हुदय में इन्द्र बनुभव नहीं कर रही हो ?"

बहानारियों ने अपने शुकेहुए, जस्त अग्रमुदे नेत्रों को क्षण कर कैतिए ऊरर डेडाइर उत्तर दिया—"अन्यर-क्षटर वाली, आपना बचन मध्य है। में निर्देस आरमा हूं। इन्द्रियों ना निषह मैं क्षणी तक नहीं कर पार्ट हूं।"

भागवन वास्ता है। अन्या हाथ निविध्ते करी पर वर दिया। उन्होंने अनुभव क्रावारी ने अन्या हाथ निविध्ते करी पर वर दिया। उन्होंने अनुभव क्रिया, क्रावारीको राजारी करार करार पहा था। अपनी बाहु ये देगकी पीठ को महारा देकर दूसरे हाथ से उनका चित्रुक करार पठाकर कारणारी से

नहा--''गुन्दरी, यह बन्द्र जोजन की भाग और बहा मी गरिम है।'' बहाचारियों से पैर इस प्रकार सक्त्यहर गण, मानी वह गिर पड़ेगी। बहाचारियों से करा क्यानिक बीकर प्रका किया--'मानटी. मेरे कारीर

बहाबारी ने कुछ हनप्रनिध होकर प्रका किया—"मुन्दरी, मेरे कठोर बारीर के स्थम से सुनह असुन का अनुभन होता है ?"

भीडक के प्रशित का आश्रम नेकर सिंहि में कारने हुए स्वर में बतार देने का एक क्रिया—"नहीं "क्क्रम अर्थरियन अनुमूनि है, कुछ अमहानी, क्छ अप्राचानी, अस्यना प्रिय है। बाह ""।"

बुक्त बद्राध्य-या, अरुवन्त । प्रवेह । ब्राह् ***: पिद्रिका कंठ इध मधा । उसका बदावेप्टिस शिर् ब्रह्मचारी के सोमपूर्ण बुक्तम्यत एर दिक गया । समेदा के पुरितन से भरे सिद्धि के जटा-

जूट पर नीएक के ओएड सा दिन्हे ।

सिद्धि सहसा चौककर अपने पैरी पर खड़ी हो गई-- "शानधन, असान वा अन्यकार मुझे चेरे ले रहा है। मुझे शान दीजिए!"

त्रहाचारी ने कुछ हमीत्माह होकर उचर दिया—"तान ! "तान चेनना का विकास है। "चेनना का द्वार हस्तिवर्ग है। "अहिन स्वयं उन्हें सार्प दिखानी है। इसावारिकी, अहिन का हनन और देवान क्षतान है।"

नाप विकास है। बहानारिका, अञ्चात का हतन बार बनन अज्ञान है।" बहानारिका ने निवंतना अनुभव कर आश्रम के लिए अपने दोनरे याहु,

गरीर के बोज सहित ब्रह्मकारी के करने पर रख दिए।

बहाचारी नीइक भीर बहाचारियी करियत बरलों से नर्भदा के पुलिस पर बोहरे परण-बिह्न अस्ति करने हुए सीरक नदी-तट की निर्वन शिवामी की ओर पने जा रहे ये १ महोदेद सारे अपनी बीडक किरलों और चेरापियों की से शावण के भने भेची का गड़ सो वकर, गृष्टी गर होनेवाने गृष्टिक्सरे रेपायार को देखकर सुनोग प्रकार कर रहे थे। जहां की पतिर मृष्टि के पस की रक्षा के लिए प्राकृतिक सिनायों का आयोजन कर रही थी।

यादा मृत्ते में पूर्व ही भागण में धने भेष अदिराम वरम रहे थे, परतु मम-नियम का पालन करनेवाल कृषि लोग प्रांतलामें में निवृत्त होत्र अश्रम के विशाल वरमद के गीन ज्ञान-लर्ला के लिए एकप हो गए थे। का का पवित्र भूम, दिशा बदलती हुई वामु के प्रहारों में महावृक्ष को चारों और में दिखर नियन मा हो उहा था। पिछले दिन मध्याद्ध के प्रह्मचारी नीहरू को अनुपत्थित और मध्या ममय नदी मनान करने जाकर प्रह्मचारी नीहरू को अनुपत्थित और मध्या ममय नदी मनान करने जाकर प्रह्मचारी निव्ध के न लीटने की जिल्ला मधी आश्रम-निवासियों को विधिष्ठ विष्य थी। प्रसंग में महिष्य धीष्टेलोम ने कहा — ""वामना मनुष्य की सबते वड़ी यनु है। वामना की अग्न में मनुष्य का ज्ञान मूसी सिमधाओं की भाति भस्म हो जाता है।"

नूर्यादय के समय नर्मदा-तट की एक गुफा में नीड़क ने निद्रा समाज होने की अंगड़ाई ली। उनका शरीर हिलने से सिद्धि सचेत हो गई। नीड़क के पलक खुलने से पूर्व ही उसने उपेक्षित मृगचर्म को शरीर पर छींचते हुए गुफा द्वार से वाहर दृष्टि डालकर कहा—"प्राह्ममुहुतं व्यतीत हुए वितम्ब हो गया जान पहता है!"

"हां!" नीड़क ने उत्तर दिया — "समाधि का समय बीत गया है।" और सिद्धि की ग्रीवा को अपनी बांह में लेकर, अधमुंधे नेवों में नेव गड़ा कर नीड़क ने मुस्कान से पूछा — "सच कहो, अनेक वर्ष समाधि द्वारा परम सुख में तल्लीन होने और आत्म-विस्मृति में संसार को भूल जाने की नेव्हा करके भी क्या कभी तुम तृष्ति में इतनी आत्म-विस्मृत हो सकी थीं जितनी इस सम्पूर्ण रात्रि में?"

सिद्धि ने तृष्ति में पुन: आत्म-विस्मृत हो नीड़क की ग्रीवा को आर्ति^{वृत} में लेकर उन्मीलित नेत्रों से उत्तर दिया—"आर्य सत्य कहते हैं।"

ग्रभिगप्त

अमीतुद्दौला पार्क मे प्राय: ही प्रदर्शनी, मेला या गलसा कुछ न कुछ हुआ है। करता है। मेले ऊले के धक्के से परेशान हुए विना समाशे की भैद करनी हो तो किनारे के किमी दुर्मजिले मकान के यशमदे से हो सकती है।

। इस विकार से इन जाड़ों में सध्या-भोजन के बाद, मूह में वान या पुक्ताजी के अक्वों के लिए जब में लैमनहाप ले, छड़ी धुमाता हुआ में प्राय: शुक्ताजी

· के बरामदे में जा बैठता । श्वमाणी स्वय जैसे बैठनवाड और हसोड़ है, उनकी श्रीमतीजी भी । वैसी ही मिलनमार है। दिन-घर कारोबार की चल-चल के बाद संध्या

/ समय बण्टे-दो पण्टे सम्य और गुमस्कृत लोगो के साथ बैठ बातचीत कर सेने से एक संतीय-सा हो जाना है। भूमताणी के दोनी बच्चे राज्यू और सविता मेरे कदमी की आहट जीने ास माप जाते हैं। उन्होंने आगन में ही थेर लिया। जेव खाली करते हुए

«पुकारा-"शुक्ताजी !" जागन के सामने वाले कमरे के परली और बराभदे से शांक मिसेज ्रानता ने उत्तर दिया—"आइए न ! "कैसे युकार रहे हैं जैसे बिलकून अपरिचित हों ! "

विजली की हजारी वित्तयों के प्रकाश में नीचे पार्ड में प्रदर्शनी का

मेला भाग ना । भीट जीवन थी । अगए छेटमें ने अभिप्राम में मुस्तातर मेने पुछत । "ट्लमी भीट", नया आज किए जातीन और फोस्सुर में जातिराजानी ना मुनाबिना है हैं "

यात रावने के लिए स्टबराहर के महातेष दे मिनेज सुरता ने कहा— "कुछ हामा ही, पोणी के केव के पीने खींचने के लिए कुछ म कुछ बहुत साहिए ।"

अपने अध्यास के विरुद्ध कर्त रतर में हमकर स्वताजी ने बुछ नक्ष्।
यह किरमित्र की आरामकुर्गी पर पान के ताए चैठे थे, चैठे रहे। दावें ही
की उम्मित्र की आरामकुर्गी पर पान के ताए चैठे थे, चैठे रहे। दावें ही
की उम्मित्र में स्वत्यामाने प्रकार में वाक्ती हो रही भीड़ की और देनी
को। पुष्ट दुसरी और रहने पर मेरे कुर्गी पर चैठ जाने की प्रतीक्ष
में थे।

"तथा जमाना आ गया ..." चप्पत पर रहे अपने पांच हिलाते हुए हैं। योनं । शुक्लाओं की इस भूमिका में महर्षाय देने के लिए श्रीमतीबी के सिहरे पर से मेरे स्वागत के लिए श्रीण-भर को आई मुस्कराहट विलीत है। यई — ''अरे जाने क्या होने वाला है दुनिया में ...'' एक गहरी मांस खेंवें जन्होंने गर्दन पुमा ली।

इस प्रस्ताव में पर्याप्त सम्भीरता और उत्मुकता का वातावरण तैवा हो जाने पर धीमे-धीमें शुक्ताजी ने आरम्भ किया — "भाई, इस जुमिने जो न हो जाए यही थोड़ा है। हां "यह जो मूंगे नवाव का अहाता हैं वहीं वमने माथ मटी हुई-सी कोठिरियां हैं। वहां विहीं रात खून हो गया खून ! जून किया किसने ? "पान साल के वन्ते ने!" कुर्सी पर से लेटे उठ वंठे। अत्यन्त विस्मयजनक समाचार सुनाने के प्रवर्त में उनकी आंखें स्वयं विस्मय से फैल गई, ""व्या विश्वास कर सकीगे ?

"पाच वरस के वच्चे ने खून तो क्या किया होगा ..." मैंने विस्मा में सहमोग दिया — "कोई दुर्घटना वेचारे से हो गई होगी। जड़के हाती खेल रहे होंगे या पतंगवाजी ... धकका दे दिया हो ?"

समर्पन को आया से मैंने थीमती गुक्ता की और देखा । उनके मुख पर विपाद की छामा महरी हो गई की । कुर्मी की पीठ पर रखे अवने हाथ पर गास टिका उन्होंने एक और दोषें नि स्वाम निया ।

उत्तेजना में पुक्ताओं कुछ आगे अब आए—"वया कह रहे ही?" दीनो हाय के पन्ने को बांध, मकेत से वे बोले—"तून! सता घोटकर सून! पांच बरस के बब्धे ने!"

आइच्यं से फैनी मेरी आखो ने पूछा-"कैसे ?"

" होवार की ओर वो मबसे थोड़े कोठरों है, वहीं एक हल्लीबाला रहता है, जवाता। जात का बहीर। उन्नके एक पाय बरम का तहका और शिव बरम को लक्ष्में थों। हास्मी बोनेबाला बसा कम सेगा ? कमी बार-कभी दो हो जाने। और जमीनावार, फनेपन से बोक उठवाकर आप बागा भीत या मील-कर से जाइएगा दो दो-बार, हर कः पैसे दे रीजियागा? जकारी बहिरम कमेगन से बास एनमें जाड़ी हैतो दोनोंत माने, अधिक केर कमान के कामी है। किमी वह दोनों बच्चों को पाय पहुँ में। तसम बैसा है, जानते ही हो। रपने कर बारह-बौरह तर मिनना या तो अब अवह नीन केर मिनना है, बह भी कला नहीं, बुझन। किमी सरह क्ये-मुसे बच्चों वा पेट पर रहे थे। इम विधने मनीचर अहीरन के एक बच्चा और ही गया।

" बहीर सन्नी क्रोकर वो कृष्ठ ने आता, ज्यीमें गुडाम चर रहा था। , युवाप चना, भूती-भूती वो कृष्ठ मिला, एक जूत आधा देट चाकर पड़ें , रहे। न हुआ वस्त्रों को विका दिखा, तुप्त जैन-तेने रात काट हो, पर छाती हैने वस्त्रें का पंत्र की मरें? मां के दूध तो तब उनरे जब उनरे देट में कुछ , बता!! मां दिन-दिन क्यों मूली आ रही थी। कही थानी के तोनों ने हुध , बता है भी दन-दिन क्यों मूली आ रही थी। कही यानी के तोनों ने हुध , बता है ! भंगा को भी तो मान-मूनो कुछ वाहिए हो। "

गो माता भीर नारी माता की इस नुस्तातक चर्चा है मेरी दृष्टि भीमनीत्री की बोर उठ गई। वह कुर्नी पर बरवट से बैडी भी। इस पोर्टी बात से वह भीर भी धूम बई। उनकी उनेसा कर मुक्ताओं कहने चन \$757 ~~~

" भाग वया हुआ ? बात तहके ही हान्यों से मस्त्रीमण्डी गता गया। गुडकी-भर भारत को कुछ था, मा ने सीटे में भील दिया। दोनों पुल, लहके-लहकी को तिला दिया। बस्ते अभी और मांग परे थे। उन्हें डॉड, मां ने भीडा-मा भील बना निया। उत्ती में दूध था गरी। कपरे की बती में मां गरी भील गरी बच्चे की भी तिलान लगी।

"मा की नवीमत दीक नहीं थी। बटकर बम-पुलिम तक गई। तीट फर आई तो चेवारी की चीख निकल गई। सहका नन्हें बच्चे का की घोट बैटा था। बच्चे के प्राण निकल चुके थे। मां निर नीव बीखने तथी।

" लोग इकट्ठे हो गए। यन्तों को धमकाकर और पुनकारकर पूछा। लड़की ने नहमकर बताया—'भैया ने नन्हे को मार दिया।'

" लड़के को पुनकारा, मिठाई का लालच दिया। कहता है; सुनिए कहता है— 'अम्मा घोल हमें नहीं देती। नन्हें को पिला देती है। बड़ी भूख लगी थी।' सुना आपने ...? कैसा समय आ गया है।"

पितृष्णा के स्वर में मिनेज शुक्ला ने कहा—"देखिए न, इन लोगों के वच्चे इतनी ही उम्र में भी कैसे पक्के होते हैं। पांच वरस का वच्चा भी समझता है, उसका हिस्सा वंटानेवाला उसका दुश्मन है। यह हमारी सिवता इस सावन में पांच की हो गई, छठा लग रहा है। खाने को दो, धाली में कुत्ता मुंह डाल दे तो उलटा उसे प्यार करने लगती है।"

शुक्लाजी मेरी दृष्टि मिसेज शुक्ला की ओर से अपनी ओर आकिषत करने के लिए ऊंचे स्वर में बोलने लगे—"अब किहए, जिस देश में इतन पाप बस गया हो, वहां अकाल, महामारी, भूकम्प जो न हो जाए वहीं भगवान की दया समझो। ऐसे ही कमों की वदौलत तो देश दाने-दाने की तरसने लगा है "ओफ, दूध पीते बच्चों तक के दिल में बैर और हिंसा। इसीका दण्ड तो हम लोग भोग रहे हैं।"

अपनी कुर्सी पर कुछ और आगे वढ़ उन्होंने पूछा—"सोचिए, ऐहें बच्चों का आगे जाकर क्या बनेगा ?"

अभिशप्त ४०

''मूख…'' मैं कहना चाहना था। मेरी बात काटकर शुक्लाजी और कर्न स्वर में बोले - "अजी मूख नहीं तो ऐसे कमों का फल और क्या होंगा ? ऐसे पापों का फल तो सर्वनाश होकर भी पूरा नहीं हो सकता ।" मन की अवस्था बहुत करने लायक न रही। पाप के कारण और फल के सम्बन्ध में सोचता रह गया—'जन्म से पाप करने के लिए मजबूर वह अभिराप्त क्या कभी पापमुक्त हो सकेंगे · · ?'

"देगो दोस्त, णाम को आना जरूर ! ... ऐसा न हो कि दाल जातो !
नुम्हारी भाभी चुरा मान जाएंगी और में नाराज हो जाकंगा।" कुर्ती है
उठते हुए मिनता ने अवध का हाथ अपने हाथों में दवाकर अस्यन्त आग्रह से फिर अनुरोध किया, "आओम न ? ... चनन दो !"

"हां-हां, आ जाऊंगा!" आग्रह की तीयता से भेंगते हुए अवध ने उत्तर दिया। मन उसका नाह रहा था, किसी तरह वह संध्या के निमन्यण से बच पाता। सिनहा और उससे भी अधिक मिसेज सिनहा को वैठक वाजी का भौक है। अवध के अनेक परिचित निमन्यण में आएंगे। गाना- वजाना, बहस, मजाक और सब तरह की हू-हबक रहेगी। साधारणाः ऐसी बैठकों में अवध को भी भिच थी। इन महिक्लों में वह चमकता भी खूब था। चुभता मजाक करने और बात से बात निकालने की उसकी आदत जो थी।

इधर कुछ समय रो अवध का मन महिफलों से उचट गया था। वह जनसे भागने लगा था। जब दूसरे लोग कहकहे लगा रहे हों, आपते भी आशा की जाती है कि उसमें सहयोग दें। यदि मन के बोझ के कारण आप दांतों तले अंगूठा दवाए, छत की धन्नियों की ओर देखते रहना चाहते हैं तो महिफल में आपका क्या काम? इससे कहीं अच्छा है कि आप संध्या

के झुटपुटे मे, मूने पार्क की बेंच पर बैठ, घने बृक्ष की शाक्षाओं मे से तारों । को देल-देख, मन मे उठती दुःख की भाष सम्बी सासी से आकाश की ओर छोडने रहिए ।

इसी कारण यानी महफिल में ठीक से सट न पाने की वजह से अवध महफिनों में कतराने लगा था। एक नमय किए मजाक का वह खुद शिकार वन गया। किसी मित्र के सिगरेट न पीने पर चटकी ले उसने कहा था-

"यह मम्बाक् का नहीं, गम का धूआ पीते हैं।"

आश्चर्य में पूछा गया -- कैस तो आपने उत्तर दिया -- "गम के सिगरेट में मन को मुलगा दुख के कश खीचते हैं और आहो का घुजा छोड़ते हैं।" गम से उठनेवाली घटाओं के मुकाबिले वेचारी सिगरेट में उठी पुए की मामुली रेला की क्या औकात ? यस के बैंग सिगरेट अब अवध स्वय पीने समा धा ।

अबध को अब महफिल की रौनक के बजाय अब्छा लगता, अपने काम से लौट मूर्यास्त के बाद जुपवाप नीले आकाश या उमहते मेथी की और 'देख-देख सीचने रहना--'हृदय का बुल गहरा होते-होते एक दिन हृदय में छित्र कर देगा, सब जीवन की छोटी-मी नाद अनुभद के इस भवर में हुव बाएगी। सब न दुःख रहेगा न मूख्यन कोई बाह और न बाह से उटने बाली आह ।'

अवध के भिन्न मन-बहलाव के लिए उसे जब अपनी ओर छीचने, अवध का दुखी मन कराह उठना---'बचा भुत्य अंजुमन का जब दिल ही बुर गया हो ! अवध की ऐसी मानसिक अवस्था में भी सिनहा ने अपनी हमी की . समें देकर उसे अपने यहा चाय की गोप्टी में आने के लिए विवश कर शंया था।

। उस महर्फिन की बहस और महाक से अवध को नोई दिसचस्पी म ्री परन्तु जब एक गीन मुनाने का प्रस्ताव नना से किया गया तो अवध , बन्ता की ऊप से जाग उठा ।

ं नता गाती अच्छा थी। उसकी आवाद में लोच थी। आवाद ना

कता उठाने के जिए को दे में दम था। यह त्यमुख और निःमंतीन गी। पुर्यन्तृत मृत्कार परन्तु तत धरकता नहीं भा वषीनि उनके प्रवहार में चोट करने का भाव नहीं, भागत की निराणा भी जो करणा नाहनी थी।" भीत और गण्ने वो लवा की साद की निरामा, ग्रम्मा और विस्तृत्त कन्दन जिल् हुन्थी। गीर के भार के अनुस्य उनके रनर में भी दर्द से मुक समार आती भी इमलिए उसका गाना ह्दय में गहरा उत्तर जाता था केवल कानो उक ही नहीं रहता था।

गाने का प्रस्ताव किए जाने पर लवा ने निःसंकीय पुरु लिया—^{पद्या} सुनिएगा ?" और फिर छन के कोने के इंटि स्थिर कर, कुर्सी की बारू पर अंगुनियों से ताल देशर गुनगुनाने लगी और गा उठी— 'जिसे ^{गांद}

करते है हम जक्तर, हमें दिल से उनमें भूला दिया '''

गाने का भाग और स्वर की लहर अवध के मन की भावना में समा गई। ह्यय लय पर डोलने लगा। उसे जान पड़ा, लता के कोमल कड़ और दर्व-भरे स्वर में स्वय उसके मन की व्यथा प्रकट हो रही थी। एक सांस बहुत गहराई से उठ मीने में रह गई। तन्मय हो लता के मुख की और देखता रहा जैसे मुख से निकलते हुए राग के भाव को प्रत्यक्ष देस पा रहा हो । उसकी दृष्टि के सम्मुख मौजूद था, दुःग से विधा स्वयं अपना हृद्य। श्वास रोके वह तन्मय सुन रहा था और लता गा रही थी-

"तेरी चम्मे मस्त ने साक़िया, मुभी क्या से क्या बना दिया।

मुझे कुछ रही न अपनी खबर, कोई जाम ऐसा पिला दिया।"

अवध का हृदय सहसा तड़पा। दूसरे क्षण उस तड़प की धकान है निढाल हो वह निश्चेष्ट-सा हो गया। गजल समाप्त हो जाने पर जब वर्ष वाह और खूब-खूब का कोहराम मच रहा था, वह लय की लहरों में गेंडि खा चुप रह गया।

जो भी मजाक करता है, अवध का सहयोग पाने की आणा से उस्वी ओर देखता है, इसलिए घायल पशु की भांति, व्यथा में एकान्त की वार्ष पाना भी उसके लिए सम्भव नहीं। विना सुने-समझे भी उसे निर्यंक ि

हिमा देता या मुस्कान का बाट्य कर देना पहला है, बाबधानी और आव-

हारिकता के बायुक में मन की संबंध कर देना पहता है।

बकर बी मारपूर्ण गडल के भुराधिल में 'निवन्दर' फिन्म का गयाम गीन [भागिम गाँग] 'डिक्टली है ज्यार की ज्यार में विभाग का, हुन्म के दूद में भगना दिल मुद्दाग का गाँ के बेन्दुरेग को सुमना बन्द यागीत कह दूर मा —''वन के मैदला और हुन्म के हुन्दर में ममन्त्रम बगा री'

नितहा ने बहा-"वाह साहब, मसन्वय है वैसे मही ? निपाही की बुनिया में बी ही बीजों ने तो सन्तव है, जग और हुन्स ! ''यह उगकी

विकित्री की नश्कीर है...।"

यागीन पूर रह जानेवाना नहीं। अवस की ओर देग उसने कहा--''वेरिकी ओर जम में ही अगर गिरह जोड़नी है सो अपना बह गीत दमसे बदकर है---

'जिंदगी है डेलमटेल, भौग वी ओर वण्ड पेल, घडरा मल मिट्टी के शिन, हैंस के सरर राख जर ६ अपना वस विद्याल जा।'

हुगी का करून हा मण गया। लता हतनी जोर से निलरित्या उदी कि मानका ही गई, पिर न पड़े। अवध के होठो पर हरकी-मी मुन्जान साकर रहे गई। अवध का उपना लता की विक्तिताहर वी ओर गया। उदी जान महा, पना मीजा पाकर जिनना हुंग शकरी है, हंग सेना चाहनी है। अगमा दुग्य भूताने के निष्ट हंगने का बहाना इसी है।

विद्यानुमान को ननीन का मर्बत होने का दावा है। गोच्टी से हुसी का प्रवाह कम होने पर यह बाना—"वादो का मान जो हो, वक और कार्नि की अपनी स्वाम कार्वन और मादकता है। पर्यो धाया और होनोत्त्र की भी भाग के मध्यम-गोनो को कार्यान आपके मोत्रकत में एक-ता स्वेदन पैदा करेगी, चाहे का दोनों देखों की भागाओं के प्रवर्श, अधिक्यानित और भावनाओं में कोई साम्य नहीं। गर्यात स्वर के होता है, प्यावर्थ से मही-"" उपने हुसेनी पर पूंगा जमाकर अपने मण का आवह प्रकट किया। भवा वे देवा, व ता की विन्तिवाहित गामव हो नुनी भी। बहु अने प्रत्यों की कहाँ त्या करवाची हुई कई कर दृष्टि गराए विभी धान में हर गई भी। उसने जान का काचा आधा ही विमा था। उपिति पाने में फ मक्ती गिरकर हत्यता रही भी। अवध सना की और देख गहा था, अनी स्था में और उसकी पथ में साम्य समझने वे निए।

सिनता ने ६२म की उपेक्षा कर नोकर को और गरम पत्रीती साने हैं लिए पुत्रवर कर तथा को सम्बोधन किया—"अजी होगा भीर"आ

मुनादम्, कृष्ट और सनादम् । "

मिसेज सिनता विशेष अधिकार के स्वर में कुछ ठ्वककर बोर्नी— "लता, नहीं गुनाओं—'देगो-देखों में बदरना छाए !'...आहा, कैनी जोर की घटा उठ रही है !" उन्होंने पलके उठाकर सिड़की से बहिं भाका और फिर महफिल की ओर देगकर बोली—"यह तेज रोगनी अची न लगनी हो तो मिदिस करा दू ?" और सिनहा से अनुरोध कर दियां, "कपर की बत्ती बुदाकर केंद्र बाला लैस्व जला दीजिए!"

"भई सूच !" कहकर यागीन और दूसरे लोगों ने धुंधले प्रकार है सुष्य का स्वागत किया। कमरे में प्रकाश धीमा हो जाने से आकार में

उमड़ते-घुमड़ते मेघो की घटाएं भी दिखाई देने लगीं।

मिसेज सिनहा ने लता की ओर देसकर अपना अनुरोध दोहराया-हां, वही, 'देखो-देखो जी बदरवा...!' "

जता के मुरझाए चेहरे पर मुस्कराहट फूट आई, जैसे बादल में है

चांदनी निखर आए —"बहुत पसन्द हुं आपको बहु गीत !"

अवध से रहा न गया, बोल उठा—"जब दिल में दु:ख न हो तो जशह लिया दु:ख बहुत रसीला जान पड़ता है।"

लता कृतज्ञता में अपनी मुस्कराहट का भाग अवध से वंटाती हुई, मार

पर हाथ रख गीत के छन्द याद करने लगी।

अवध का मन कुछ द्रवित-साहो गया। मानसिक रूप से वह अपर्व मन को स्थिर कर पाए कि लता का स्वर मध्यम से उठ पंचम में डी पहुचा। गीत के भावो और स्वरकी तथ पर मिर हिलाते हुए उसकी सोई-सी आर्खें छत की बोर उठगईं। वह मा रही थी---"कित वए हमारे सैया, अंजर्ज निह आए'''।"

न न पह नार न प्राप्त की पुकार सता के शब्दों के चुनाव और स्वर से मर्जाय हो जलना रामा की पुकार सता के शब्दों के चुनाव और स्वर से मर्जाय हो जतों में। वह भी अपने मन में बिराह की व्यवा उठते होना सिंह स्वर्तात को आपने के सामने अनुमन कर, उद्ये अपने हुदय की पुकार मुनाने के अमित्राम से मन्यावता से निर्दाहिताने लगा। विद्य देवता देवेचालें क्याति के अमित्राम से मन्यावता से निर्दाहिताने लगा। विद्य देवता देवेचालें क्याति के अमित्राम संस्कृति के स्वर्ता जाग रही मान कि संस्कृति के स्वर्ता जाग रही भी। व्यवध मन ही मन विकास कर रहा या—'कित यार हमारे सीमा, अन्तर्व नहि सार्पाः'।'

पित्री की लता के तीजन्य से अनुधित लाग उठाने का अम्यास हो। गदा था। एक के बाद एक, कई वाने उसे वाने पड़े। अब सत्ता गा रही भी---

> "जिन्दगी मुझार रहा हूं तेरे वर्षर, जैसे कोई मुनाह किए बा रहा हूं मैं।"…

अवध में मुस्कराने का यत्न करके कहा--"जब गुनाह जबरन कराया , जाए, उमकी संजा और भी नागवार होती है।"

सता ने अवध की आंखों में देलकर, हाम की आदाब के तब में हिलाते हुए कहा--- "मनाव यही तो बात है ! "

प्रदेश पर हारू ज्यान यहा वा बात है। मता जी बाम अवध को अपने हृषय की प्रतिष्वनि की मानि लगी। , अवध अपने विचारों, क्यांगे और क्लागों में डूबा हुआ था। दसके यह से समानर, उसे ही दुःख देनेवाले व्यक्ति के जितिरक्त शेष सब बहुछ उसके

लिए समत के पत्ते पर से वह जानेवाली वृद्दों के नमान या ।

उस दिन अवध वा बीरमान के यहा निमन्त्रण या। अवध महफिल से मचना चाहता या परन्तु यह जातवर कि सता भी आ रही है, उसकी विर्याल, दूर हो गई। सीरभाग ने कहा था --जरा समय से आना। देर के बैटने गर जब तक पातकीत का रस जमा पाते हैं; उटने का समय हो जाता है, समभे !

उस दिन रानर में अवध की त्यूटी नीचे पहर की भी। उसे कोच का रहा था, दैनिक पत्र का नहासक सम्पादक होना भी क्या मुसीवत है? नीचीमी पण्टे काम का समय। सहायक सम्पादकों की त्यूटिमां ऐसे बदली जाती है, समय में उन्हें मो बाटा जाना है जैसे जनरंज के मोहरे हीं। अब्बे उत्सुकता की युविधा में क्षेपहर में ही नता के मुख से मुनी हुई गजतें में ही मन दोहरा रहा था—

"किस्मत में कैद भी लियी फरले बहार में …!"

अवध ने अपने एक सहयोगी को नैयार कर निया। सन्ध्या चार वने से रात दस बजे तक वह अवध की उ्यूटी कर दे और रात के दस से नुवह तक अवध उसकी उ्यूटी किन दे और रात के दस से नुवह तक अवध उसकी उ्यूटी निवाह देगा। निता के मर्मस्पर्शी स्वर में अपनी मर्मान्तक व्यथा सुन पाने के लिए अवध के हृदय में एक चुलबुलाहट बी, जैसे वायु के स्पर्ण से तानाव की नतह पर हल्की लहरें उठ आती है परेलु केवल सतह पर हृदय की गहराई स्थिर थी।

अवध को विद्यास था—'सतह की चुलयुलाहट के नीने उसके गम्भीर और अिंग प्रेम का स्रोत स्थिर है जो केवल व्यथा की धारी उगलता है। लता की मौजूदगी से उठनेवाली लहरें केवल सतह पर है। लता वेचारी अच्छी है। अपने भोलेपन या अनजाने में उसके हृदय की पीड़ी से समवेदना प्रकट हो जाती है। ठीक है, उसके अपने हृदय की भी ट्या है। जबह व्यथा को जानती है और उसका हृदय उमकी पुकार को गुंजा हैं। है, पर अपने को क्या ? खुण रहे वेचारी ! अनजाने में मेरी व्यथा को सहले देती है।' गायक वीणा के सहारे अपना अलाप पूरा करता है, वीणा व्यं अनुभव नहीं करती। ऐसे ही लता भी अवध के हृदय की व्यथा से तहां नदी के किनारे खड़ी नदी से पृथक वस्तु थी।

वीरभान के यहां रंग जम नहीं पा रहा था। गाने के लिए कहते प

कता ने तरस्पुफ नहीं किया। उसने गड़ल युना दी परन्तु रम नहीं जमा। कता ने बेबनों में कहा—"ठीक से नहीं कन पा रहा है, तदीयन कुछ गिरो-गिरी-मी है।" "सर्वेयन को मभालने के लिए ही दो माने की अरूरन होनी है,"

"तवायन का अवध ने मझाया ।

"बहुत तबोयनदार आदमी है आप !" सता मुस्करा दी और अग्रमुदी आचो मे गुनगुनाकर माना गुरू कर दिया --

"मैं दो शम-ए मञारहूँ सबकी नजर में खारहूँ,

शाम हुई जला दिया, सुबह हुई बुझा दिया।" भवध टोके बिना न रह नका--"मुस्किल ती उस शमा की है, जी

गाम को भी जसती है और मुबह भी।"

"अरे भाई, दिन मे शमा की नया अरूरत ?" दुइडी उठाकर मिनहा बीला ~"यह निरी शायरी है।"

अवध में किविता की इसे वेकडी की उपेशा कर कहा—"गुद जरूरत से हम गमा को जलाना कीन है ? यह तो वह आतिय है—जलाए न जले, बुझाए न वने !"

हिमीन दाद दी—"जूब-जूब है जुरही की बाजू पर हाज मारकर पूपम ने कहा—"तो और अच्छा, कम्बका दिन-रात जलेगी तो सत्तम भी जन्दी हो। प्राम्ती, समझ पाक होगा।" बीरभान की पत्नी कमका खोर से ईम दी।

'गरम ही जाए तब तो ?' विकायत के स्वर वे बता ने कहा परन्तु ऐसे कि कोई उसकी यात जानना न हो। अवसा की दृष्टि तता के मुल पर मूर्व मुन्दराने का यत्व उसकी उसकी की हथान न पर सु मा। बहु अपरें दृष्टाकर माड़ी के छोर का एक छामा 'अपूलियों में बटने कसी। अवध की भायों में महामूम्पनि की नधी आ गई। अवध की आयें तता की ओर से हटना न पहली थी परन्तु हुएरों की आयों से आवंक थी। मन की व्याप वी गहराई को छिपाने के लिए उसके हृदय की तर्मवा मी सतत पर चिनोद भी हो हमनी लहते उठी सी ने लता के पति महानुभूति के लगर में जेंची पढ़ सार्च ।

तता की प्रधान को सभी करते हैं तरम्य महतित के सौरनुत में भी अवग का स्वर उसके बान में पहला है तो खता का ध्यान उस और गिन्दित ही याता है। एक कारण जो महिक आध की बात में पहेली की ली आनर्थण तीता है जो मस्तिरक की गुडगुदा देता है। उमे लगता है कि उन्हें गाने की सबसे प्रधिक कड़ अंदर्क ही कर पाता है। गजलों के भाव की गत्राई को वैमें अवध समझ पाता है, दूसरे लोग नहीं समझ पाते। अवध मी सहदयना और नन्मयता नता के नित् उसी प्रकार सहायक होती है भैसे दुखी की आस्पासन । तथा और अवध में समझ समने का नाता था। इससे पुरे अवध की और नता का भ्यान नहीं था, उससे अधिक सम्बन्ध नता की अवध से नहीं था।

लता स्थूल देसे-सुने जा सक्तेयाले संसार से पल-भर को भी सम्बन्ध दूटते ही अपने मन के एकान्त में पहुंच जाती थी। उसके हृदय की पूर्ण हर से दवाए रहनेवाली और गभी द्रवित न होनेवाली निष्ठुर स्मृति वहीं अडिम थी, यह उसे पल-भर के लिए भी मुक्ति नहीं देती। वह स्मृति जसके ह्दय को गुचलकर भी अपना प्रभुत्व उसपर जमाए थी। वह स्मृति कुण्डती मारे सांप की तरह लता के हृदय की बाबी के मुख पर बैठी थी। स्पृति का वह सर्व लता के हृदय की ओर आनेवाल जीव-जन्तुओं को कुफकार देता था। लता का हृदय पीड़ा और व्यथा पाने पर भी कुण्डली मारे स्मृति के सांप का ही था। वहां अवध के लिए जगह कहां थी ? अवध की ओर से सहानुभूति का संकेत पाकर वह केवल दूर से देख, कुछ अनमने ढंग से कृत-ज्ञता से मुस्करा-भर सकती थी। लताके मन में उत्साह और पाने की इन्हीं को निराशा और भुला सकने के प्रयत्न ने दवा लिया था। अवध और लती सीहार्द और निस्संकोच से एक-दूसरे से बात कर सकते थे क्योंकि वे अपनी अपनी सीमाओं में रहते थे। परस्पर कुछ देने-पाने की सफलता के शिकवे की गुंजायश वहां नहीं थी।

अवध एक दिन मध्या समय जकम्मात् मिनहा के यहाँ वहुच गया था । लता मिनहा के यहा आई थी और जाने के लिए तैयार थी।

"ओहो ! आपको कैंन मालूम था, में आ रहा हू ?" जाने के लिए सैवार सता की ओर देख, विस्मय दिखाकर अवध ने पूछा।

"नहीं तो ! ... कैसे कहते है आप ? ' सता ने मोज विस्मय से प्रशन किया ।

"मुझे देखते ही आप जाने के लिए उठ गईं।" शिकायत के स्वर मे अवध ने उत्तर दिया ।

"सीजिए बैटी हं," बैठकर लता बोसी —"परन्तु देखिए, देर निननी हो जाएगी ? और फिर अकेल : दूर भी कितना है ?" बेबसी में गर्दन एक और मुका उसने कहा । वह मुद्रा उनका स्वभाव बन चुकी थी ।

भवध नता के स्वर में लाचारी अनुभव करके भी अपनी बात रगने के लिए बोना - "देर तो समझने से होती है। समय का तो काम ही है बीतन जाता। रही बात अकेले की, सो डर क्या है ? मडको पर न भेटिये के भूड किरने है और न बाकुओ के। बतातें डर मुझसे न ही, बहा वहिएना पहुचा दूगा ! और यह दिलए !" ऊपर की ओर सकेत कर उसनेकहा-"आनाग को भी भाषका इतनी जल्दी जाता मंजूर तही।" इन-इक्कर बरमन-बाना मादों का मादल फिर जोर से बरम पड़ा। लता परास्त हो जाने की मुद्रा मे गर्दन कुमीं की पीठ से टिकाकर बैठी रही।

मिसेब मिनहा ने पानी-भरी हवा के झोके ने आलों में शीतलता अनुमव कर अनुरोध किया-"लता, अब मौसम का ख्याल कर अपने मन में कोई बीव सुना दो !"

तता ने कातर आलों से सबकी और देखकर क्षमा यागी-"जाने क्यों, ऐसे मौसम से सबीयत कुछ गिर-मी जाती है "दिन-सर परी रही। बहुत जो बड़ा करके शाम को जरा बाधी (मिनहा के गोद के बानक) में दिन बहुताने पत्ती आई। बाने कब से उठ्देन्डठू कर रही हूं, सगर उठ नहीं । पाती । ऐसा जान पड़ता है, गिर जाऊगी ?"

भेरी विव प्रतिया

भीतमा प्रान गड रा है। उमें अपना-आप अपने हाथ में न हों ! " महाहु भूति से बाप ने कहा दिया।

भीने बद्धारों की डोर्स हुट गई ही है। आस ने और महोता 'हा ।'' तवा ने सिर दिया हासी भरी।

' आप यो मणाक करते हैं ! '' मुरक्तराकर लखा बाहर की जीर देखें -दिया ।

"यह मजान है ! " अवध ने युहाई में आंग्रें फैलाफर मिला किया, लगी ।

मिनेज निनता लगा और अवध की वार्ते अनमुनी कर गोट में शीए परम्तु नता अभी बाहर ही देख रही थी। बालक की पीठ पर हाथ फेटने हुए वोली—"हाय, कितना अच्छा मीसम

गिनहा अपने गाहित्य-ज्ञान का परिचय देने की इच्छा का दमन न कर सका-- "कामणास्त्र में लिया है, वर्षा ऋतु के उमड़ते-शुमड़ते मेंस स्त्रमें 8 L"

٠٠٠

में काम-रस उत्पन्न कर देते हैं।" ने पति को धमकाया। लता मानो सिनहा और मिसेज की बातें सुन न रही

मिसेज सिनहा ने सबको चुप देरा अपना अनुरोध दोहराया—"कुछ थी, यह सिड़की से बाहर ही देखती रही।

लता ने एक गहरी सांस ली। आंखें फर्ण की ओर झुका लीं और सुनाओ न लता !" गुनगुनाकर गाना शुरू कर दिया। वही गाना, वही पुराना राग, पुरानी स्वर—"को स्वर—"तूने फलक ये क्या किया, युलयुल से गुल छुड़ा दिया।" लता की सिनदा के अन्योक के के

अनुमोदन में सिनहा सिर हिला प्रसंगा करता रहा—"वाह-वाह सिनहा के अनुरोध से भी एक गजल सुनानी पड़ी।

अवध मीन था। वह गजल के वयान में खो गया था। सर्वेत हो उर्^{ति}

कहा---''पर बुलबुलें तो चहकेगी हो, वे पैदा हो चहकने के लिए हुई है जैसे आदमी जीने का प्रयक्त करने के लिए पैदा होता है, धरने का प्रयक्त करने के लिए नहीं।''

उपेक्षा से जता बोली -"जिन्दमी है क्या ? 'जीते रहते में ही क्या

पानी चीर से करस रहा था। कसरें से बैठे लोग घरती पर जल गिरने के राज्य की सुन रहे थे। यह शान्ति मिलेब मिनहा को खटकने लगी। गौद में सीए हुए बच्चे की पीठ पर हाथ फेरकर उन्होंने जिक शुरू किया— "वड़ी पुरिकल से सोया है। नीद ही नहीं आती थी।" वे कहती चली गई—"दिन से अधिक सो जाए तो रान में नीद नहीं आती, तब बहुत सग करता है।"

नता पानी थमने ही उठ गई— "अब बसू अन्मा जाने कितनी नाराज होंगी और बया आक्बर्य, उन्होंने खोज के लिए कुओ-सालाबों में जाल इसवाने आरम्भ कर दिए हो।"

सिनहा ने सिर खुजाकर कुछ परेजानी के दगके कहा — "टागा …?" उनका अभिप्राय था, ऐसे पानी से, दतनी रात गए टागा कहा दूदा जाए? सिनहा की बिनना को लगा ने हर कर दिया, कोसी — "जगा राज दे

सिनहा की बिन्ता की लता ने दूर कर दिया, बोली -- "दागा गह में मिल जाएगा · · देखा जाएगा ।"

विनहां भी सता को मीचे पहुचा आने के लिए उतरा परन्तु आगे भीगी राग में अबस और कता को ही जाना था। कुछ बिनट पहुँते चरना पानों कंपी-नीची तहक पर जनह-जगह खड़ा था। दोनो पानो और वीचड से बच्चे घर्ने ना रहे थे। अवस फरफर करती ठडी हवा से गिर कंचा करके बोना---"हवा ठो धून अच्छी है।"

ú

सता ने अबस की बात पर हामी भर सी। बहु मन ही मन अबस की बात ने विषय में मीच रही थी—आदमी जीने का अवल करने के लिए पैस हुआ है, पर जाने का अवल करने के लिए नहीं! "पर र केंद्रे? 'फिर रास आमा—'अवस की बात का उत्तर उतने ठीक नहीं दिया।' लड़ाइम त्रार टीक सं तात तरन के जिल्लाक की और देखकर बोली-- हवा तो सुर हे भरी बह कार्य बार कारका, रह गर्हे ।

ंदग 🗥 अप न उप का प्रत्याह नडाने के लिए पूछ लिया ।

भर असी जान से हैं ''जन दित ही बुद्ध जाएं!'' सना ने फिर मी

अपूर्व और यह यह सी ।

ादत युहा कहा जाता है। जुहा ही जाए तो फिट शिकायत कैसी है दिन चीट सा जाना है, फुचना जाना है परन्तु प्राण रहने वह फिर उटना ते, वर्षांकि जीवन मनि है '''।"

लता मुनती जा रही थी, उपेक्षा से गर्दन एक और फेंके जैसे अवने विगड फैमला सुन रही हो। यह सुव भी परन्तु मन में सोचा-

भागने को इससे नया · भनेकिन ठीक भी हो सकता है।

अवध ने लता को नुप देखकर कहा — "जब दिन जीवन की उष्णता का उपयोग नहीं कर पाता और उनकी उष्णता को राह् नहीं मिलती तो वह जल उठता है। हदय-दीपक में जब तक स्नेह का तल हो वह जले ह्यों न! दीपक की ली स्वाभाविक गति से नहीं जल पाएगी तो धुआं उठेगा ही ! प्रेम जीवन को पाने की प्रवृत्ति है । प्रेम के कारण जीवन की उपेक्षा गरने लगें तो जीवन में विषमता आएगी ही । " अवध को महमा ध्यान आया उसकी यात का अर्थ क्या हो सकता है ? वेमौका चल पड़नेवाले प्रमंग को सार्थक बना देने के लिए यह कहता गया - "जीवन की प्रेरणा से राह खोजते हृदय को एक जगह प्रकाश दिलाई दिया। वह उस प्रकाश की और आकृष्ट हुआ। 'प्रकाण की वह झलक उसके सामने से हट गई। असफल और निराश हो जाने पर वह नया प्रकाश क्यों न खोंजे ? जब जीवन में स्वामाविक गति से उष्णता उत्तन्त होती है तो चिनगारियां वर्षो न दीखें। ... जीवन में समझ पाना ही तो प्रकाश है ... "

अवध अपने सब तर्कों के अनुकूल व्यवहार नहीं कर सकता था। वह स्वयं अपने जीवन को बोझ-स्वरूप निवाहे जा रहा था। लता के सम्मुल . अपने अपराध को स्वीकार करके भी ठीक वही वात कहना चाहता या। उपके स्वर में मुताने का आयह नहीं, प्रायश्विता की कातरता थी। मड़क पर वह गती आई जिनमें अवस का महान था। न अवस ने, न तत्त ने ही दम गती की और ज्यान दिया। दोनों करफराती ठडी हवा में, गडक पर बती तसेवों से बचने हुए चले जा रहे थे। नता का मकान आ गया। आंगे एकताथ जा कहने का कारण न था।

सता अपने मकान के सामने चुप लडी रही। उसने कहा-- "आपको इननी दूर आने का कष्ट हुआ।" उसके स्वर की अस्थिरना से स्पष्ट या,

मन का भाव शब्दों के अर्थ में नहीं था।

मीने काले बादलों में उताबनी ने मागने चाद ने झाका, अवध लता भी फीती हुई आपों में सांक पहुंचा। बवस ने अस्मिर स्वर में कहा--'लेट बया, मैं तो अभी और चलना वाहता हूं, बिता करे चलते रहना चाहना हूं। "माहना हूं गह कभी समाच्य न हो।"

भवम की बात मुनकर सता के मुक्तों में कम्पन अनुसव हो गया। यन कुछ कह न सही। दोनों हाथ उठाकर विदा की अनुसति के तिए ममने कर दिवा और अपने कहान के नशी यह। सता जा सन न माना। दमने द्योगी में से मुमकर देखा, उसे अवस की थीठ ही दिलाई दी। यह

यना जा रहा था --छावा और श्वादनी में गर्दन ऊपर चठाए।

अवध को लौटने समय सडक पर वमहु-वमहु खहे पानी से पांव ववा नित का स्वास न रहा। अधिक में अधिक मोजला अपने हुएवर में पर पाने कि निए इस हमन बाढ़ में नार कड़ाए, पानी में नूता छरएउमता, धोरी मिं छोरों से मरता बता जा रहा था। उनने सता के हुदय में मरराई खंकि पुरा हु करने के लिए बाउ को मार्च देने कि सिए निरुक्षी खोल भी ने भी वस सिकार में सिकार में

मनध पर लौटकर मंत्र के समीर रखी कुर्ती पर बैठ गया। उनकी विद्याद पर नाव के दो दुकरों के बीच में दशे कोकना की तत्वीर सही थी। भिम पोमना की तत्वीर जिसे अवध ने पूर्व विकास से अपना हुद्य सीर

६८ मेरी जिस प्रतानिया

दिया था। तिस श्रीभना ने अत्य में निष्ट्रने पर प्राण त्याग देने नी प्रतिशा थीं भी और ती श्रीभना ए। दिन अतथ ती, एक अण के लिए एक बार मिलने की प्राथेना को अनुमूनी कर, मुद्रप्रतिशाओं को फून, पिन पे परामर्थ में एक आई । भी ० एम० की खाद ना महारा लेकर, ममानाए पत में अपना चित्र राणवा मधुमामिनी (Honeymoon) मनाने नहीं गई थी।

अवध ने अपनी मन्याना में शोभा की भेगकाई के जल पर अपनी बका दारी और जीवन की साध की समाजि बना ती थी। अवध ने उनी ममाधि में आहे भरते-भरते मर जाने का निकास कर निवा था। तक की उत्तेजन में शोभना की तस्तीर कांच के दुष्कें में में निकासकर सिड़की की गह परकराती हुई बासु में छोड़ दी।

अवध अनेक मिनों के यहां अनेक निमन्नण वा नुका था। व्यावहारि | कता के नाते उसने भी एक दिन मिनों को अपने यहां आमंत्रित किया था। वह अनुरोध करने गया था। तता अवध का स्थान जानती थी।

लता को रात में नींद बहुत विलम्य से आई थी। प्रातः उतने हीं विलम्य से नींद पुली। उम विलम्य के लिए माता के उलाहनों के कार्य दिन विताना कठिन हो रहा था, किसी तरह एक वजा। वह चल पड़ी और अवध के मकान पर पहुंच गई। अवध के अनुरोध करने पर उसने आ सकते में असमर्थता प्रकट की थी परन्तु आ पहुंची थी। वह लज्जा से मरी ज रही थी। अव योंही लौट पड़ना उपहास और लज्जा का कारण हो जाता। अपने-आपको संभालने के लिए साड़ी का आंचल सिर पर खींचते हुए दरवाजा लांचना ही पड़ा। वह भीतर पहुंचा तो अवध केरवानी पहन इर दूर्टी पर जाने के लिए मेज से कागज समेट रहा था। अवध का मति विक्षिन्त था। उसे लता के कदमों की आहट तक न सुनाई दी।

लता ने साहस वटोरकर कहा—''नमस्ते !'' अवध ने लाल उनींदी आंखें उठाकर चिकत हो लता की ओर देखा। सताने इन्कार कर दिया था----नहीं आ सकेगी और चली आई थी, अब क्या कह सकती थीं!

मनाको दुष्टि मंत्र पर रखे काली केम पर पत्र गई। यहनी दका आने पर उनने उस क्षेत्र में एक आधुनिक कड़की का चित्र देखा या और कोहूरन में उसे देर तक देखती रही थी। चित्र को देखकर सता ने कुछ कम्मा भी की थी। उसे दिस्सम हुआ, यह केम खाली ंै।

लता ने मेज के नमीप जा, खानी फ्रेम को छूकर अवध की ओर देख-कर पुछ निया--- "तस्बीर नया हुई?"

अवस ने दयराई आतो से बता की बोर देखकर उत्तर दिया—
"चनी गई---बो पदी जीवन में आ सकने वाली किरण को रोते हैं, उत्तरर
जीवन निष्ठावर कर देने से साम "---बीवन का द्वार नुवा रहना देहरर
है। गायर प्रकास की दूनरी किरण सिन्म सके !" उत्तर देकर उत्तने पर्वन
सका सी।

लता के पैर कांप गए। जीना बढते समय वह अपने को धिक्कार रही। भी---'बह क्यों का गर्द भी?' अब उसके चकराते हुए सस्तिष्क में धूम पड़ने लगा---'आए बिना रहनी कैसे?'

मता का हुद्ध कांप रहा या। अवस के मामने पहले कभी ऐसा नहीं . हुआ या परन्तु हुदस के मुनेपन की अपेक्षा कषकपी की पीड़ा में कितनी , मानवना सी · · · ।

日本

भस्मावृत चिनगारी

वह मेरे पट्टोम में उद्गा था। उसके प्रति मुझे एक प्रकार की थड़ी थीं । उसका व्यवहार एक रहस्य के कोहरे से घरा था । रहस्य बनावट का नहीं जो आणंकित कर देना है; मरलता का रहस्य, जो आकर्षण और महानुभूति पैदा करता है। वह साधारण से भिन्न था, शायद साधारण है

उसके बड़े और छोटे भाइयों ने अपने श्रम से पिता की कमाई सम्प्रीत कुछ ऊंचा। की वुनियाद पर स्वतंत्र कारोबार की इमारतें सफलतापूर्वक खड़ी करती थीं। वे सफल गृहस्य और सम्मानित नागरिक बन गए थे। वे पुराने परिवार-वक्ष की कलमों के रूप में नई भूमि पा,नये परिवारों की लहतहती चालाओं के रूप में कल्ला उठे थे। पिता को अपने दोनों पुत्रों की सफता

और 'वह' सब सुविधा और अवसर होने पर और अपने शैथिल है पर गर्व और संतोप था। कारण पिता की अधिक करणा पाकर भी कुछ न वन सका। उसने यल है नहीं किया। उसके पिता को इससे उदासी और निरुत्साह हुआ; प्रत्तु उसका आदर करता था। उसमें लोभ न था। वह संतोप की मूर्ति भ व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा उसमें न थी। वह त्यागी था। यही तो तपत्याही

पिता की मृत्यु के बाद दोनों कर्मठ व्यापारी भाइयों ने हुजारों है

आमरनी होने हए भी जब उत्तराधिकार की सम्पत्ति के बटवारे में पाई-पाई ना हिमाब कर, उसे केवल दो पुराने मकान देकर ही निवटा दिया; उमने कोई चिन्ता वा व्यवसा प्रकट न की । भाइयो की अपने से दस-बीस गुना अधिक आमदनो के प्रति उसे कभी ईपी करते नही देखा । घर में अर्थ-गंकट अनुभव करके भी उने कभी विचलित होने नहीं देखा। उसकी शान्त और मौन्दर्य की वृत्ति सभी जयह वालि और मौन्दर्य पा सकती थी। इनका स्रोग उमके भीतर था। वह अन्तर्म्स और आश्वरत था। कला के लिए उसका जीवन भा और कला ही उसके प्राण थी। कला में किसी प्रकार की म्बार्य-माधना उमे कला का अपमान जान पडता था।

उमके परिचय का क्षेत्र अधिक विस्तृत न या । परिचय से उसे घवडा-हिट होती थी। उसके विश्रो से प्रमावित होकर मैंने स्वय ही उससे परिचय किया था। वह कुछ अकुवाया और फिर जैसे उसने मुक्ते सह लिया और भार्त्ना भी बढ़नी गई। कभी वह सध्या, दीपहर या विलकुल तडके ही जा बैठता। उसका ममग्र कोई निश्चित न या। कभी अकेल ही शहर में भार-पास मील दूर जाकर बैठा रहता। उसका सब समयप्राय: किर्मिश्व-,मडी दिकटी के आमपास रग-पुत्ती व्यासियो और कृषियो के चनकर मे ,बात जाता था।

वह यहून कम बोलता था। जब बोलता उसमे बहुत-सी विधित्र वाने रहेरी भी । महमत हुए विना भी उनकी कड़ करनी पड़ती भी । क्योंनि वह एक अमाधारण व्यक्ति की बाते थीं। सूलकर ऐंड गए पत्तो और सूर्य की किरणों में मकड़ी के जाने पर अनमलाती ओस की बुदों में उसे जाने नमा-

गि दीखना था ? ⊶वह उनमें यो जाता था।

एक दिन मई महीने में ठीक दोपहर के समय मोटर में छावती में लीट हा था। सूर्य की किरणों में वाप्प वन रही धूल में, विसावान सडक पर ाने अकेते शहर की ओर सौटते देखा। उसके समीप गार्डा रोककर ी्कारा---"इस समय कहा ?"

"ऐसे हा जरा धूमने निक्ता था," उत्तर मिला।

विस्मायात्व होत्रस्य पद्या - "इम भूग में ?" कार का दस्याहा उनके विस्मानिकार अधार विया - "अपनी !"

'गर्टी, तुम वर्ता !'' अपनी भीती का छोट थामे, मेरे दिस्मय सी और प्यान दिए दिना उसने उत्तर दिया ।

एक नगर में जनगर ही उसे गाड़ी में येटा लिया। मजबूरी की हला में मेरे ममीप एडा धाप प्रधाप बेटकर उसने धीं में कहा—"देखी किना गुन्दर है ''जेंसे पालिश की हुई नादी कैस गई हों! जैसे ''जैसे ''जैसे ''वित्र उसके पर जाने के बाद उसका गुण बदल गया हो '' White heat (श्वेत उत्ताप) और देखी, नगल गरमी की लपटे कैसे पृथ्वी में आकाण की और उठ की हैं। जैसे पृथ्वी गरमी के नारों में भुनी जानर आकाश की ओर उड़ी की रही है। मेरी और दिस्ट कर उसने कहा—"जरा यह काला वक्षा उतारकर देखी!"

मजतूरन नण्मा उतारना पड़ा । आंगों में जैमें तीर-से नुभ गए। और फिर जो उसने कहा था, ठीक भी जनने लगा । सोचा, कितना असाधार है यह व्यक्ति ? यह णायद मंगार के लिए एक विभूति है।

ऐसे ही एक दूसरे दिन बारद् ऋतु की संध्या के समय बड़े पार्क किनारे वृक्षों के नीने में सूची घास पर गिरं सूचे, कुड़मुड़ाए पतीं के रोवते घोती का छोर थामे, अपना फटा पम्प शूरगड़ते उसे उतावती के चले जाते देखा।

पुनारा। उसने सुना नहीं।

अगले दिन उसके यहां जाकर देखा, वह तन्मय किर्मिच-मही दिक्टी सामने खड़ा कूची से रंग लगा रहा है। बहुत ही मुन्दर चित्र था— हात अस्त हुए सूर्य की गहरी, सिन्दूरी आभा आकाण में अर्धवृत्ताकार फैत ही थी। उस पृष्ठभूमि पर आकाण की ओर उठी हुई उंगली की तरह ही सुखे पेड़ की टहनी पर स्थाम चिरैया का जोड़ा प्रणयाकुल हो रहा था।

विस्मय-मुग्ध नेत्रों से कुछ देर तक चित्र को देखकर उससे पूर्ण ''कल तुम पार्क के समीप से जा रहे थे, पुकारा तो तुमने सुना ही नहीं।'

परनात्मक दृष्टि से उसने मेरी और देख, कुछ सोचकर उत्तर दिया--"कल पार्क में चिडिया के जोड़े को इस प्रकार देखा और वह शरल ही उड गया ''। मोचा, इस चीत्र को यदि स्यायी रूप दे सक ।"

उसके अनेक चित्रो 'निवासन', 'गौरीशकर', 'गगा और सागर' ने प्रसिद्धि नहीं परई परन्तु विश्वान से कह नकता है, जिस दिन पारखी आखें जन विद्यों को देख पाएगी, समार चिकत दह जाएगा। सुझे गर्व था ऐसे प्रतिमात्राली कलाकार की सैनी का ।

मेरा विचार था, वह सासारिकना से तटस्य है, भावुकता के साम्राज्य में ही वह रहता है। परन्तु एक दिन हम उसीके मकान पर बैठ मे। वह न पाने किम विचार में खो गया। उस चुप से उकताकर भी विध्न न हाता। मीबा, न जाने किम अमूहय इति के अंकूर इसके मस्तिष्क में जन्म पा रहे हों ?

. ममीप के जीने पर उसकी साढ़े तीन बरस की लडकी लेल रही थी। वह अलापने सनी--"पापा ...पापा !" मानी नीव से जागकर जमने कहा-"How sweet -- कितना मध्र :-- " समझा, कलाकार भी

¹ समुप्य श्रीता है।

लक्ष्मी के लिए विद्वानों ने चपला शब्द ठीक ही अयोग किया है। यह है स्पिर नहीं रहती। कलाकार के एक सकान में मूतों ने टेरा डाल दिमा और खमका किराये पर उठना कठिन हो गया। उमनी आमदनी कम होती मी। अच्छे-भने मध्यम खेणी के खाते-पीते जादभी से उसकी हालत र समा हो गई परन्तु उस ओर उसका अ्यान न यथा। उपाय सुझाने और अय उपाय कर देने के लिए वैयार होने पर भी उसने इस बात को महत्त्व र दिया। उमे इमसे कोई मतलव न था। त्याग और तपस्या क्या दूसरी बीज होती है ?

दूसरे वालक के प्रमत्र में पहले उसकी स्त्री वीमार हो गई। वह शिमारी अमाधारण थी । खर्च भी अमाधारण था। दो महीत मे साहे तीन एटार रच्या रहते हो एवा । एक भवान पहीर में भिरती था, दुमनाभी मधा । कोई जिल्हा हमें न भी । उसने में पत इतना करा-"मिर स्पेने मन्द्रम के प्राप्त अने सन्ति है भी यह किसी भी मूल्य पर महंगा नहीं। हिनी

इस दारण सक्छ के साद कलाकार की अवस्था और भी शोननीय है त्रत रही से प्राय नने ।" गाउँ परन्तु उसकी सरस्थता में किसी प्रकार का परितर्तन न आया। परी चण्य में भी यह इसना ही मनुष्ट था जिल्ला नि स्तेसकिए के पर्सा पहले दहले पर ।

अनेक दिन तक वह दिलाई न दिया। मुना, एक निय में द्यस्त है। विष्त न डालने के विचार में उसके घर भी न गया। मालूम होते पर्ह

निव का नाम था—'जन्म-मरण।' चित्र में प्रमूतिगृह का दृश्य व नया निष्ठ पूरा हो गया, देशने गया। स्रोत पर स्वयं उसकी स्थी। रोगिणी के जीणं, चरम पीड़ा से व्यक्ति मुल पर मृत्यु का आतक । उसकी आंग्रें नवजात शिशु की ओर त्र^{गी श} जो उसकी पीड़ा और यंत्रणा के मेघ से नक्षत्र की भांति अभी ही प्रकट हुँ था। प्रसूता के नेत्र प्रभात के आकाश की भांति कुहासे से धुंधले थे और जसकी पुतिलया बुझते हुए तारों की भांति निस्तेज हो रही थीं। उन दि इस चित्र को देख नुप रह गया। कुछ कह सकना भी सम्भव न या पर्ल अनेक दिन तक इम चित्र की स्मृति मस्तिष्क से न उतरी।

समाचार-पत्रों में पढ़ा, बम्बई में अखिल भारतीय चित्र-प्रदर्शनी हैं। जा रही है। कलाकार के सम्मुख उसके चित्र प्रदर्शनी में भेजते का प्रती किया। उसे उत्साह न था। उसका विश्वास था, स्वयं कला की पूर्णती ही कला की साधना का फल है।

तर्क अनेक हो सकते हैं। समझाया—कलाकार की प्रतिभा यदि कें उसके निजी सन्तोप के लिए ही सीमित न रहकर दूसरों के सन्तोप र भी कारण वन सके तो क्या हानि ?

बहुत अनुरोध कर उन चित्रों को अपने खर्च पर वम्बई भिजवावी

प्रायः पन्द्रह दिन बाद प्रदर्शनी के सयोजकों का तार मिला—"पूरोप का कोई ब्यापारी 'जन्य-मरण' चित्र के लिए पाच हवार रुपया कीमत देने के लिए नैयार है।"

चित्र भेरी ओर से भेने यह थे, इसिनए तार भी भेरे ही नाम आया या। क्लाकार सी प्रकृति जानने के काण्य यह प्रस्ताव उत्तर्क सम्भुव एकने में बहुत मंत्रीय हो जानने कर काण्य यह भी विचार चा कि यदि इस चित्र के पूरण से एक दुधी परिवार का नेत्रेय दूर हो सकता है तो यह कला वा अपसान नहीं है। यह भी सीचा— 'जो क्यांवन अपनी कमाई का पांच हुआर एक्या चित्र में अकिन कला और भावना से लिए ग्योछावर कर रहा है। वह कलाकार की अतिभा और भावना दीनों का ही सल्कार कर रहा है। वहुत नमसकर, अपनत संकीच में वहु प्रस्ताव उत्तर्क सामने एता। परिणाम वहु हिजा जिसकी आसा थी।

नार फे सोचा नामुक्यू होने की यूचना दे दी । उत्तर आता, पाहक मार फे सोचा नामुक्यू होने की यूचना दे दी । उत्तर आता, पाहक की दुवार देने को सैवार है। इस बार और भी अधिक सकोच में कलाकार की यूचना दी। उनने उत्तर दिया — 'की नहीं चाहता था, उन विमों की प्रवर्शीन में आ गाए। न में अपनी आवना का कोई सूच्य स्वीकार करने के निए सैवार हूं। दुम उन विजयों को बायस समझा तो!"

विभावन क्षेत्र में कहने निजा की वापस समझ दो । "विभावन क्षेत्र में कहने कथ्यवहाँ कि समझक्त भी कनाकार की त्याप्त मंद्र माने कालर को महत्व के अध्यक्ष उदाहरूल से न्वीकार करना मान वह या। कलाकार की निरुद्ध के अध्यक्ष उदाहरूल से न्वीकार करना प्रमा, कर्या औरत से भी कंची करत है, बेजक साधारण जन की पहुन बहातक नहीं परसु कन कक्ता का अहिन्द है अवका । मामारिक स्वृत्तवा में निजा एक हम उत्त करना का अहिन्द है अवका । मामारिक स्वृत्तवा में निजा एक हम उत्त करना का अहिन्द है अवका । मामारिक स्वृत्तवा में निजा एक हम उत्त करना का अहिन्द स्वत्तवा में निजा एक हम उत्त करना के अतिनिद्ध सुद्धा सन्ति की मान विभावन से किन का अहिन हम अहिन

परियार पर गतिदान इस महम का अमाण था कि एता से प्राप्त मनीत जीवन-रक्षा की भावना में भी जीवक प्रचल और महान है।

में स्वय कला की वेदी से दूर हैं। सामारितला की अड़वनों से छत्तर आए कला के प्रकाश की सूक्ष्म किल्ली की ही मैं पा सका हूं। मैं कला की आराधना उसके पुत्रारों के प्रति अपनी श्रद्धा और आदर से ही कर महत्ता था; जैसे यजमान पुरोहित द्वारा यजनाये का पुष्य प्राप्त करता है। नेरी उस श्रद्धा का स्थल स्वयं था, कला के पुरोहित कलाकार की सेवा के लिए नत्परता ।

फलाफार की स्त्री भने:-शनै: यति होते-होते एक दिन नवजात विश् को छोड़ चल यसी । कलाकार णोक के आघात से कुछ दिन संजाहीत-ना रहा। उसके पुत्र को स्त्री के भाई ले गए। संज्ञा सीटने पर कलाकारके होंठों पर एक मुस्कराहट आ गई। उनने एक और नित्र बनाया-एक प्रकाण्ड हिमस्तूप की दुरारोह चढ़ाई पर एक क्षीणगरीर तपस्वी चड़ रहा है। उसकी जीवनसंगिनी चढ़ाई में यलान्त और जर्जर होकर गिर पड़ी है। तपस्वी यात्री दुविधा में है। वह पूमकर अपनी बरफ पर गिर पड़ी निष्प्राण संगिनी की ओर देखता है। दूसरी ओर हिमस्तूप का जिलर सप्राण-सा हो उसे अपनी ओर आह्वान कर रहा है…।

इस चित्र की भाव-गरिमा से में अवाक् रह गया। चित्र क्या ग कलाकार की कूची से उसके जीवन की कहानी और उसके त्याग की महत्त्वाकांक्षा, कला के प्रति उसका सगर्व आत्म-समर्पण था। में अभिभून रह गया; उस महान उद्देश्य से परे लघु जीवन की वात क्या ?

फिर भी शंकालु मस्तिष्क में प्रश्न उठ ही आता था—कला की शिंवत जीवन में किस प्रकार चरितार्थ होनी चाहिए ? कलाकार ने अपना उत्तर रेखा के स्वरों में लिखकर चित्रपट पर स्थिर कर दिया था। प्रश्न कर्ल पर उसने कहा-- "अंधेरे आंगन में एक दीप जलता है। उस दीपक की आलोक वहुत दूर से भी दिखाई पड़ता है और समीप से भी। दीपक की सी के समीप आने आने से प्रकाश को उज्ज्वनता मिसती है और दृष्टि की मुस्पटना; परन्तु यह दीपक को प्राप्त कर सेना नहीं है। प्रकाश के इस केन्द्र में है केवन अग्नि।—को तन और बसी को जसाती है।

"रीपक को लो प्रकाश की ओर देखने वाले पियकों की चिन्ता नहीं करनी और दीपक जलना रहने के लिए तेल और बत्ती का जलने रहना आवस्यक है।"

भनाकार का मधीर दाख्तिय और सबसाद से शीण होता गया परन्तु असमें नेत्रों की प्रवादा सर्वतों नहीं । बहु भगी साधना में राग या। जितना ही गहुंग मुख्य वह अपनी दत्त आराधना के लिए अदा कर रहा था, उसी भन्नणान में उसकी निष्टा बढती जा रही थी।

बहुत सुबह उटने का अन्यास मुझे नहीं है, विशेषकर माथ की मर्दी में, परन्तु पिठने दिन बकावट अधिक हो वाले के कारण समय से एक चण्टे पूर्व में गया था इसिक्टए उटा भी कुछ गहते। ममय होने से बरामदे में बझ मामने फुनवाड़ी की ओर देस रहा बा—मासी कुछ करता भी है या नहीं !

हुग्ह-सुगह गरम रुपड़े गहने, हिर्म के खूर जैसे छोटे-छोटे जूनों से एट-गृह करने मनो ने जातर देरी जानी बाम बी-"पागा, अम छैर काने जा रुग हैं। पापा मैया भी माड़ी में जारा है। राखा भी जा रर्ष है। पाग, सम-"संत भी बारी?"

श्रीमतीशी शाल में निषटी बैठी रहती है वरन्तु बच्चों को मुबह ही गरम करवे पहनाकर आगर रामा के साथ मुखे को प्रथम किरती के सेवन के लिए सहक पर केज देती हैं। कारण—हमारा क्या है; परन्तु वच्चों का क्सास्य ही तो सब कड़ है।

बन्तों मुतें उननी से खींच निए जा रही थी, जैसे ऊट की नरेल थाने उत्तका सवार आगे-आये चना वा रहा हो । चेस्टर मे नर्दी से मिड्डता हुआ वेटी की आजा के अनुगत बना जा रहा था। वह मुझे सडक तक ले

७८ भेगे विव नहानिका

आई ओर छोडना न पाहनी भी । रात की पोसाक के धारीबार पावजाने में यो आमे जाना जीनन न था । यस्ती को बहुताने के लिए इधर-उधर ऐस रहा था ।

हमारे बगते से लगी बाई और की उमीन को माहब ने ली थी। वह इस बरत से योही पड़ी है। उस जमीन पर नारवीवारी तक नहीं मीबी गई थी। अपने बगते की नारवीवारी की पुरत पर दृष्टि पड़ी।

देया, मूर्य की प्रथम किरणों में, दीवार के माथ उगआए ओत हैं भीमें भाग-त्याए में, एक फटी दरी के तिहाई दुकड़े पर मनुष्य के गरीर का काला टाचा-मात्र पड़ा है; समीप टीन का एक दिक्या और रोटी का ऐंठा हुआ दुकड़ा है। सूर्ती कम्यल का एक दुकड़ा भी जो शरीर से नीचें लिसक आया था, टाचे पर पड़ा था। इस सर्दी में बस्त्र मंशालने की सुध जम गरीर में न थी।

क्षण-भर में उसके पूर्व इतिहास की कल्पना मस्तिष्क में कींध गई -'कोई भिष्तमंगा रात विता रहा होगा, जाड़े में ऐंट गया। शरीर निक्षेष था। शायद मर गया ?'

वच्चों गो तुरन्त उस दृष्य से हटाने के लिए राधा के साथ आगे भेन दिया। समीप जागर देखा। हाथ में स्पर्ण फरने में आणंगा हुई; शायर कोई छूत की वीमारी हो ? परन्तु था तो वह भी मनुष्य ही। छूकर देखा, बहुत क्षीण ऊं-ऊं स्वर। कराहट-सी सुनाई दी। अभी प्राण थे।

मनुष्य के प्रति करुणा और भय से मन विचलित हो गया। तुर्ति लौटकर हेल्थ-आफिसर अरोड़ा साहब को फोन किया। म्युनिसिपैलिटी की एम्बुलेंस आ गई। अपनी गाड़ी में में भी हस्पताल साथ गया। इधर-उधर कह-मुनकर उसे भरती करवा दिया। दो घण्टे बाद वह हस्पताल के गदेदार पलंग पर लेटा था। गरम पानी की बोतलें उसके पांव और बगत में रख दी गई थीं। टोंटीदार प्याले से उसके मुंह में ब्राण्डी-मिला दूध दिया जा रहा था।

जौटा तो दोपहर हो रही थी। अपने काम का हर्ज अवश्य हुआ पर्त्

मनीय भा । बंगरें। के शीतर गाडी पुगति से पहले, बर्गन की बाई शीर की पुनी उमीन के मामने कलाकार को परेवानी की-मी हातत में घटकों नंदगें में गीतने देता।

कनावार के नमीप जा पुतान — "जरे भाई, तुन्हें कीने मातून हुआ। "आज मुबह अधानक मेरी दृष्टि यह गई। कृत परटे-पर का मेहनान था। अब भी यथ जाए नी वडी बान जानो "औफ मनुष्य का भी कात हुं?"

उसी भटकी मुद्रा में बलाकार ने प्रदान "कहा गया कह ?"

"अरे भाई उमे ही हत्यनात पहचाकर आ नहा है। बड़ी मुहिन्ज में बान्टर से बहु-नुनकर अरनी कराया 'समसी लिशाब वा!"

बहु जैसे प्रयत्त निरासा में हताय होकर सीट पदा । अनेक बार बुनारे पर भी जगने सीटकर नहीं गुना । यहून सूर तक में पैदम उनके पीछे गया । उमने परटकर देखा नहीं । बेबमी में सीट आमा ।

मंध्या ममय एक जातह जाता जनरी या परानु करवारी की दान भी करूरी थी। शोद्यता ने काणज देश-देशकर दर्मानन करना जा रहा था कि क्याकार चौनदे से मुद्री विधिक निए करने से जा पुत्रा।

विसिष को मेरी ही मेज पर रशकर होम-भरे त्वर से उसने बहा-"दो दिन से इस बना रहा था । नुसने खेडा बक कर दिया । अब मुक्ती इस समानो !" अधूरे निक को छोडार बह मीड गया ।

विभिन पर अध्यते चित्र से मुन्ह ना दूरर जाय उटा था, यहाँ मून-मान भियमपा । नामें नाने में महा उनका पतर पटी परी ने दूरहे पर एचिंग रमाना हुना नमा ने बाहू में अधिन बीधमा हो उटा या। प्रमत्ते हैंपे, पुँगे हैंचे और हाजाम मासे मुहार से आक्षा की और उटी हूँ ची। चित्र कमी मुन्दे या परन्तु उपकी उप बीधमाना अध्यन्त नमीप थी। वीमा भी समीट से निज पर उनका की बेह निकास का धारमाइन करारी!"

क्षणकार हो कि में कर ६००० -- वहा दा । हो दिन हो

अर्थ केरी विश्व महानिवा

सियमाण नर-काबाल पृष्ट् की यालमा महण्याचा नि कणा जीवनकी निनामि के पृष्ट्र की भरम में अल्ब्लिटिव लीवर युवने का प्रयक्षिती सम्पूर्ण दारण की माणका के मोरदर्ग महिल प्रस्तृत कर महि।

उस नार-भवाद की उनकी दादी बिता में द्रम्यान के पर्नगप ही। भर भेने गया की पृथ्वि में त्याचार द्वार दिमा था। भेरा यह अनाना मानामार के निम् अगदा था।

निय में मृत्यु की याता में गृहार के जिल्ला हुए नर-संकाल के हावीं में कला मेरे अना नार के प्रशि दुहाई दे रही भी भाग कला की आत्मा मेरी भरतना कर रही भी। में कला के सम्मृत अपराधी था।

भेरा युर्भाग्य यह कि मुझे अपने अपराध के लिए पञ्चाताप का महि भी नहीं ।

बह निव, मानाता का निव अब भी बैमा ही है। कलाकार कुछ है। कला अपूर्ण हैं · · शायद पूर्णता की प्रतीक्षा में है। मोफेनर बत्यक्षत ने जिन सर्यों से एस०इन-सो० धान किया या, ऐनी क्षकता प्राप्त करनेपासों की महत्या बहुत कम थी । यदि ने चाहुँ तो त्वर्गनेट कांक्षित्र से मोफेनरी या कोई हुमरी क्रवी तीकरी जिस महत्ती थी परन बह बार उन्होंने सोची सी तही।

ार पुरास पहारा भाषा ना नहा । कहन्य दे देशान के प्रयाद हाता बिज के करवार का वन सेकर बिट्-प्रवाद गार्श के आतीयन महत्त्व वन गए थे। उन्होंने बीवन-घर प्रयानक रादे माविक की वीविका पर देखें को बेदताल और निशार देने का कटिन को ने मिशा धार

काजन ने परिवर्धी एपायन-विज्ञान को आध्यस्त मो विधा का परानु हम मिशा के अन मैरा करनेजाते प्रभाव से वे बचे रह ये। रनेवा अध्यस्त दिशान या कि वे सब प्रपार्थ, जो गरंद दिखा से वाने जाने हैं उन मक्का भीड़ भूच रेक्टर है। गढ़ नरूत विधाओं का भूत और आदि जान का एक-मान संगर वेद है। परिवर्धी जीतिक जान के आधार पर संगर की बन्धित की आमा उन्हें एक अवनुर्ध अहंबार-मान्न आन परणा मा, ऐसे हो वैसे की में बूछ मोठ की एक गांठ बुरावर समग्रे कि उनने पणार्थी की हकान पानी है

प्रसार प्राप्त प्रतिब वैद्यानिक सूटन जी बाद दोहराना वरने पे 🛫

सम्दर्भ विनारे पर १ कर जा गई एक स्ट्रिंग नमनदार मोर्ग से ही प्रकार रम होते नहर समारत। उस नहीं जानते कि ईपार की जनवि और अमरा घोर हो के सामर में ऐसे कि नि अनुमोत रहन भरे पड़े हैं। इन भगभी व वर्षा की दम चमकी कृता और जान के विना नहीं या गरते। भीपीसर प्रताह । पश्चिमी विज्ञान आरकोष्यनायान और इसकी गुनना में वैदिस ज्ञान ही डोम नक्षेत्रपति, कार्य-कारण परंतरा और नित्यता प्रमाणित करण थे। उनके विश्वास में देश की विदेशी स्वामी, दरिद्रना तथा देख भी भारत के वेदलान से विमुख हो जाने का ही परिणाम था अन्यशासि समय यह देश ब्रह्मां वर्ष के वर्ष के बेटजान का स्वामी था---

> 'एनहेणप्रमुतस्य स्वत्याद् अप्रजन्मनः । रयं स्वं चरित्रं णिक्षेरम् पृथिबर्गा सर्वमानवाः।"

(एस देश में उत्पन्न होनेवाल संसार के ज्येष्ठ शिक्षक है। मंनार के मनुष्य दस देश में जन्मे लोगों से अपने धर्म और चरित्र की जिसा पाते र्द ।) ब्रह्मत्रत प्रायः ही प्राचीन भारत में ब्रह्मचर्य के बल प्राप्त हो^{नेवाते} ज्ञान के प्रमाण में इस दलोक का उदारण अपने व्याख्यानों में दिया करते थे।

प्रोफेसर प्रहायत के जन्म-समय की राशि के विचार से बातक का नाम सुझानेवाला पुरोहित कुछ शृंगारी स्वभाव का रहा होगा । वातक का पहला नाम रखा गया था, राधारमण।

राधारमण ने लाहाँर के एंग्लोवैदिक, कालिज में पढ़ते सम्ब अब्रह्मचयं से विनाण और ब्रह्मचयं से शक्ति के मार्ग की पहचाना। जीवन में विलासिता और अब्रह्मचर्य के सब चिह्न दूर कर देने के साथ-साय जन्होंने माता राधा से विलास का संकेत करनेवाले अक्लील नाम को भी त्याग दिया और ब्रह्मव्रत नाम ग्रहण कर लिया । उन्होंने वोडिंग के अपर्व कमरे की दीवार पर मोटे अक्षरों में लिख दिया था-

"ओ३म्" ''ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत''

"ब्रह्मचर्य हो जीवन है।"

शानेज के दूसरे विज्ञायियों की वरह बहाबत के शिर पर नेत और भंधी में स्वारी हुई जुल्के न रहती थीं। अधीन से बराबर छटे वाजों में समृद्ध गढ़िके मंत्री स्वारी है दिखाई देती थीं। बन्द वर्ष के फोट, म कर म भूता पहुंचे का पावजायां और देती जुता। उनके दन वेदा में एम॰ एस-मी॰ तक परिवर्डन न आया और ओफेसर बन जाने वर भी नहीं आया। महमुक्तों की दिलामिता के लब्द में परिवात साता-पिजा प्रोफेसर हम की मार्या की प्रमास द्वार्डण कर है अनुस्त्यीय बनाकर रूपने थे।

बहाजारे का महत्त्व न समझनेवाल, कुसतकारी से क्से ब्रह्मका के साता-पिता ने जहां और भूतें को यो बहा एट्टेम में एटने समय हो लबते का विवाह भी कर दिया थां। ब्रह्मका का महत्त्व समझने पर ब्रह्मका ने निश्चय किया कि कानिज को छुट्टियों के समय कवे अपने देहाती बनसे के पर में जाए, उनको नवाइजी पत्ती अपने नैहर चली जाया करे।

मूल नवस्त्र पति के इस सद्वित्तार का अधिकार और महरत न ममस पाने पर भी कुछ न नह सकी परन्तु स्वयं बहाबत के आना-निया और समू के माना-पिना को बहुद की हुना से विश्वदेत नवके ना यह अध्याचार स्वीकार नहुंचा। पद्योग और बिनाइसी के लोग की हमके अनेक अर्थ लगाने गये—पहके को बहु पमाद नहीं है सा शहद में बहु बूनरा ब्याह करेगा क्रांटि-आहि।

बताबत को बुनंस्कारों के मतर्थक बहुबाद के सम्युव स्कृत बाता पड़ा। जिस स्था कि मास्त्र में तिला है, दशका परिणाम की हुबा। बताबत अभी सैं। एए-भी॰ में ही भीर सानिब की पत्रिका में 'बहुम्बर्प रक्षा' पर निकार तिला रहें थे, यर से आए पत्र में उन्हें गुरु मुन्दर बन्या के निता बर्व अपने का मासवार विकासन

र्रे सन्तात के जन्म की सबर ने बढाबत को खपना कर खरिस्त हो जाते के प्रमाण के प्रति शोध और भ्वाति ही टूर्ड । इस अवसाध का प्रायदिक्स करते के निष्ट उन्होंने बायह कर्ष तक पत्ती से सहसाम ज करने का निस्थय कर तिया । ईंटरब ने अपना मंद्रण समार में के ताने के लिए उन्हें जो गीत की है, के उसका नाज नहीं करेंगे।

नातीर पत्राय में पश्चिमी विश्वा का बैक्ट था। दोषीनर अहायत से विश्वाम था कि उस नगर के क्लिम और स्थान के ताला रण में ब्रह्म के आदर्श मा पालन सम्भव नहीं था। उन्होंने आम गर्दी के तह पर के एक छोटे कम्बे में 'एम्लोबिटिक हा स्नृत्य की अध्यक्षना स्वीकार कर की थी। उन्हें विश्वाम था कि नगरों में दूर अपेशासून मार्वे और स्वस्थ बात परण में पन नफ़्तों को उच्चित बैदिक जिशा देकर कापियों हारा दिए बैदि जान का प्रचार विश्व में करने के योग्य बना सकेंगे। आयों के पित उद्देश्य "शुष्ट्रकाते विश्वमायम्" (मकल विश्व को आम बनाओ) की पृष्टि जुल्कों में मुगन्धित तेल लगा-लगाकर और मिगरेह पी-पीकर पीले पहलाते वाले, प्रकृति से विमुत्त घहर के नवतुवकों से नहीं हो सकती। इस उद्देश में प्रकृति माता की गोद से अवित पानेवाले, स्वस्थ, अप्रहानमें तथा व्यक्ति के पात्र पात्र की मोद से प्रकृति पात्र की सकते हैं।

प्रोफेसर ब्रह्मप्रत ने गम्बे से दो मीन दूर, नदी किनारे वने 'एंकी' वैदिक' स्कूल के समीप एक 'वह्मचारी वोडिग' की स्थापना की थी। दोडिंग के छात्रों को महर और वाजार जाने की आजा नहीं थी। दोडिंग के चारों ओर ऊंची दीवार खिचवाकर उसपर कांच के दुकड़े लगवा हिं गए थे। लड़कों के भोजन-वस्त्र तथा उपयोग की वस्तुएं सव कुछ ब्रह्म के नियमों के अनुसार ही होता था। ब्रह्मप्रत स्वयं कड़ी आंस रखते थे किसी भी व्यसनी प्रभाव को वहां स्थान न मिले।

ब्रह्मवत प्रति संध्या छात्रों को उपदेश देते थे— "ईश्वर ने यह सुन्ते शरीर और स्वास्थ्य हमें अपने आदेशों और नियमों का पालन करने लिए दिए हैं। ब्रह्मचर्य से शरीर की शक्ति और वुद्धि वढ़ती है। अब्रह्मचं से शरीर और वुद्धि का नाश होता है।" वे ब्राह्ममुहूर्त में उठकर शौक स्नान, व्यायाम आदि का उपदेश देते। वे समझाते थे कि ब्रह्मचयं की रहा

के तिए त्यायाम और मीतन वन से स्नान बायब्यक है। कोई पुतिवार में आने ही गायत्री मंत्र का बाद करना चाहिए। मिनरेट, पटाई, निर्म, श्रीय मोदा बहुत्त्वर के लिए हानिकारक है। बस्तील नवतें और वित्र बहुत्वर्य के बिरोगी है। ऐने अपराध होने पर वे छात्री को तेत से पीटकर कर देने और उपरेस देने कि ऐना करना बहुत्वर्य का नाथ है, बहुत्वर्य का नाम आपनारण है।

यहार्य्य भी महिमा और धशहाय्य की निन्दा बार-वार मुनने में विकारी में प्रायः कौनुहल बाग उटना कि बहहावर्ष क्या है, अब हा वर्ष में क्या होना है ? उन्हें सदाई-मिथं धाने की और बहुत डेंच कर कि नाना से वर्षों में इच्छा होनी और इस प्रकार बहावर्ष सोहने के साहन से संतीय होना। भणिय जाननेवाने हुन्दे लहनों को अधिमान से बतातें — असनी भनदार्थ्य सहिच्यों और सक्ता में सं, स्त्री-पुराये के सम्बन्ध की बुरी बातों में होना है।

पहिने से कुनस्कार पाए हुए विकारों ने बोहिन में दो-सीन बार अवहा-भूष के कुमरित किए भी । प्रोफेसर महानान ने क्षम्य विद्याचियों को सिक्षा हैने के निष्य अवस्थित के बंद आरकर बक्क दिवा और बोहिम से निकान दिया था। पूर्णरे छात्र कहें दिन तक इन अपराधों के विषय में करना और निकास करते रहे थे।

प्रीकेगर बहुमता समाज और विश्व के कत्याण के तिए आगान, हुनैकारों और व्यवनों है सड़ रहे थे। वे स्वयं कठिन संयम से ब्रह्मचर्य का पानन करने में, अपने छात्रों से वह का पानन कराते के और नसार के क्षाण के जिल भी जबरेज हो में — "वो सारिक्क खानन को र साला पान की तहा की कि उत्तर के स्वयं को पूर एने में है, वह व्यवनों हारा किन उत्तर के प्रत्यं को पूर एने में है, वह व्यवनों हारा करना के दिए सरीर को नस्ट करने में कहा गान करती है। व्यवनों का आनन सिर्फ के स्वाद की चार्य है। प्रकृति हमें गान हम हमें के कहा जाने के साव की हो। प्रकृति हमें हमें हमें से कहा होता है। प्रकृति कर उत्तर के स्वाद की स्वाद

मुजर्भ करो। समय भगवान उपारे सबभे जाजा और सक्षीच प्रतास रखेहे। यह दर्भ भगवान द्वारा चे पातनी हो है है हमें ईंग्वर की चेतावनी को गर समा चाहिए। भागर, प्रतित और पानित ईंग्वर की प्राज्ञ के पानन हैं है।"

प्रोपेनर कारावा के उपदेशों और आचरण की भी समाज ^{में बहुत} प्रतिष्टा थीं ।

त्रोपोसर त्रहाजत वायह पथे से त्रहाचर्य का पर दूड भे परल्य जनकी पृत्री ने छटे वर्ष में पान परा उन्हें उसकी शिक्षा की चिला हुई। पृत्री का नाम उन्होंने रसा था--ज्ञानवर्ती। पुत्री और उसकी माना ने अपने साथ रखने में छः वर्ष क ज्ञाव ज्ञानक के लिए आगंका थी।

शानमय ईंग्यर ने अपने अनन्त और अज्ञेय विधान से कठिन समस्या^न स्नद्रायत की महायता की । शानवती की माता के लिए इस पृथ्वी पर निह्ति कार्य और समय समाप्त हो गया था । वह पति के महान उद्देश्य के ^{मार्ग हो} \ निर्वाध कर देने के लिए परम पिता परमात्मा की गोद में लौट गई।

ब्रह्मव्रत ज्ञानवती को दादा-दादी के कुर्सस्कार पूर्ण और लाइ मरे वातावरण से ले आए। मां और दादी ने लड़की की छोटी-छोटी कताई वे 'पर सोने के कंगन पहना दिए थे। उसके छोटे-छोटे हाथों में मेंहदी रवी हैं 'थी और मैल में भरे केश गुंधे हुए थे।

पिता ने ज्ञानवती के गरीर पर में वह सब फूहड़पन दुलार से फुनक कर और बुछ अनुणातन से दूर कर दिया। उसके केश लड़कों की तर्र कटवा दिए। नमस्ते कहना सिखाया और गायत्री मन्त्र कण्ठस्य करा दिवां इंश्वर-भिवत के बुछ गाने भी निखा दिए। वह उसे 'बेटा ज्ञान' कहरी पुकारते थे। अतिथियों के सामने वह सुद्ध उच्चारण से गायत्री हैं सुनाती थी।

पिता प्रश्न करते — "तुम वया बनोगी ?" पुत्री उत्तर देती — "चारिणी।"

भोजन के पश्चात् या किसी समय डकार या हिचकी आ जान

सहकी के मुल में निकल जाता--- औ रेम् ।

पत्नी के बभाव में बानिका के लिए घर धर समुचित प्रकार में अनु-विधा देगकर प्रोफेगर बहाउत ने आन को कृषि-बचन के अनुसार कन्या पुरुष्टुन में राजिल करा दिया था। बादह वर्ष के निए, बानना के ओवन में मुख्यस्या हो गई थी। पुरुक्तु में निक्षा का अवनाल होने पर भी प्रीफेगर पुत्री को मुसस्कारों में बचाने के लिए बायम में वाहर न तान।

आगरेगी पुरस्त में बारह वर्ष की जिला पूर्ण कर चुकी भी। उसने संस्कृत और वेदिक साहित्य का यवेष्ट जान प्रास्त किया था। यह 'महा-भाव्य' और 'निष्तत्र' की व्याच्या कर नक्ती थी। शरीर उनका गुरस्तुत के पति जीवन से दुवला और रूखा जान वहना था परन्तु नह स्वरूप थी। स्पर्धा से पीवन का भार उद्याग नैरानन-भी दिगाई पहती थी। स्वय की और नेनार ने वहनाजने के यहने से स्वराचीय-नी दीनाती थी।

मानवती को मुक्कूल से लोटे दो हो। मान बीन थे। बोहिन के समीप हैं। उनके पिना के लिए भी मकान बनावर नावर था। मकान में नीन कमरे हैं। एक करों में पुरुषकों की आनमारियां और न्यून के प्रवस्थ मा वर्तर था। एक कमरे में निल्म करें। एक कमरे में पुरुषकों की आनमारियां और न्यून के प्रवस्थ मा वर्तर था। मानवती के आ जाने पर तुरुष्ठ तरक तैवार न हो सकने के जारण हुमरे कमरे में एक बारवाई बात दी गई थी। प्रोक्तर का नोकर संतरिया रसीई में या वरामदे में ही सी रहुष्टा। मोनीर्याण नहकरने के प्रकेशनर महामान के यहा पूर्व के तारण हिन्दी पढ़ गया था। वह रामायण, महामारत और हुमरी पुन्ति पढ़ पूर्वा था। वह रामायण, महामारत और हुमरी पुन्ति पुन्त प्राप्त का मानव को ला पुन्त के प्रकेशनर महामारत और हुमरी पुन्ति पुन्त प्रवार प्रकार मानव को ना प्रकार के प्रकार प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार प्रवार प्रवार के प्रवार के प्रवार के प्रवार प्रवार

जिम समय जानवनी कमता के दूध में धान सेने के लिए परिवार में र मीम्मिलन हुई, कमका आयः वर्ष-बर दूस दे चुकी थी। उनका पुत्र 'केम' अनावरयक होने और अधिक उपद्रव करने के कारण करी दूर भेजू

रहती आई थी।

का प्राथ था। समापा द्रायम ही दे पही भी। भोकीयर महायस ने जानकी कि सप में स्वेल राज्य का ध्यान कर भी कर मोजीराम की बाहर से एक सेट द्राय रोजाना और जाने भी आला दे की भी।

शान पर्या और दूध पीने से भी अधिक सम्मीप ममना की सेवा के अवस्य में होता था। यमना उम घर में मदा में पुत्रपी को हो देखती आई थी। मर में आई पुत्रपी नारी आनवसी को अपना सवर्गीय पाकर पुत्रपित और

सकुरित हो जानी भी। अपनी बारी-बादी स्मीनी आंग्रें शानवती की बोर

उद्यापन, रनेट में को सल नवर में मान रम्भाकर पुकार लेती। जानकी को कमला के लिकने रोमपूर्ण प्रशित पर हाथ फैरने में, उसके गले के कम्बन को हाओं ने सहजानों में सुख मिलता। यह अपनी दोनों बोहें गैया के पत्रें में जान देती। सजीव स्वचा का ऐमा स्पर्ध उपने कभी अनुभव गिन्ध भी। उसने मोतीराम संबंधि की प्रशित स्वचा के में साम लिया। मोतीराम संबंधि नी परने पुजा के साम की साम

बह्मनपश्चिम ना नमय पूरा कर नुकने के कारण नियमानुसार हों? यती को मटाई और मिर्च खाने का अधिकार था। इन पदायों के स्वाद के उनकी एचि भी थी। प्रोफेगर महाशय का भोजन ऐसे उत्तेजक पदार्थों के सदा शूच्य रहता था। मोतीराम अलग से उनका सेवन करता था। ज्ञानहीं की रुचि उन और देशकर उसने ज्ञपणता नहीं की, किसीको संतुष्ट की देने में स्वयं भी तो संतोष होता है।

मोतीराम ने हिन्दी पढ़ना और मुछ लिखना भी सीख लिया था। हैं कभी-कभी आर्यसमाज मन्दिर में रहनेवाले पण्डितजो से अथवा रहते मास्टरों से एकाध पुस्तक अपना समय काटने और पढ़ने का आनन्द वार्ती लिए मांग लाता था। इनमें 'स्वामी दयानन्द का जीवन-चरित्र' के अतिरिक्त 'चन्द्रकान्ता सन्तिति' अथवा दूसरेसाम्बिं और जायारी

और जामूसी उपन्यात रहते थे। घर में अकेली ज्ञानवती के लिए हिं विताने के लिए इन पुस्तकों को पढ़ने के अतिरिक्त दूसरा उपाय मर्द रेन पुष्परों में प्रातनकी को ऐसा है। मनोद होता जैया निरस्तर पथ्य सेवन के बाद विकासक बादा निविज्ञ पटपोट भोजन में होता है। पिता की पुल्पोंं में में कह बेदों और उपनिषदों के भाष्यों और बंद-प्रनार की वारिक रियोटों में निरस्तर रुचि सही वे मनती थी।

प्रशेष में पर महागर ने बिन नाम का वर्ष भी जान का निशा के नित् प्रशेष में के दिया बा बहु नाम है और मायती मन बोननेवाला जिलोगा-मान भी। मुद्दुन से अटाइट वर्ष आतु मूर्ण कर लोड़ी जातवारी जोगा-पूर्वी होने पर भी मन्युकती थी। बितरून बेगी ही बुदनी जेगी जहारर भूषी होने पर भी मन्युकती थी। बितरून बेगी ही बुदनी जेगी जहारर मर्प हुई काहबा के कारिक से बुदने नाम बारों पर जाने पर जानकी ही मोपूरनी थी। नित्ते कम्मून बराबय के कारण उन्हें बारू वर्ष ब्रामर्थ ना बन बहुन करना पहा था।

जानका की देनकर प्रोत्तर सहाजय के सन में जान की मां की स्पृति जाए उठारी थी। बेटी जय-रन में ग्राय को जीनी ही थी, दरन्तु स्पर-हार में बहुत मिला! मां गंदोचगोल, और दरहरूप थी। बेटी जिला के अधिवार ते बड़ और करेज मां त्री की गयति हो अतरस्यन प्रोत्तर जान-मां में गदीय अनुसद करते थे। उत्सदी और ते पृष्टि बसाए रहते

 विषय में बाद बच्में का उन्हें माहम में हुआ।

बोरी सर महाराय ने शानवाँ। के ब्रह्म को का पानन होते हुए वेद ज्ञान के प्रचार का पार्च करते। उहने की बात भी सोनी। ऐसे समय यह भी विचार आया कि शानवंधी के स्थान पर यदि पुत्र मन्तान होती तो उनके जीवन की समस्या किल्मी सरन होती! ऐसा विचार मन में अने पर प्रोपेसर महाराय ने अपने-आपको निविचार, सदा सत्य और पूर्व ब्रह्म के स्थाम और विधान पर सरोह करने के लिए धिरानचा। परमेश्वर ने नर और नारी को समान गए में अपने ज्ञान का प्रकाश करने के लिए रचा है। नर और नारी दोनों में ब्रह्म के ज्ञान की पूर्णता है। अधोक के पुत्र और पुत्री महेन्द्र और महेन्द्री दोनों धर्म-प्रचार के लिए गए थे।

वार-वार नारी का ध्यान आने से प्रोफेसर महाशय को स्वयं अर्त ऊपर कोध आया। उन्होंने अपने मन को तुर्क से समझाया — कृषिवार का दमन ही पुरुषार्थ है। रुत्री की चिता वासना है। वह ज्ञान का सबते बड़ा णत्रु है। वासना के आकर्षण के प्रति उपेक्षा भय का कारण है।

युवती पुत्री के घर में अकेली रहते समय उन्होंने बहुत दिन से भुता अपनी एक वृद्धा बुआ को घर में बुलाकर रम लेने की तात सोची। अपने घर पर युवा विद्याधियों और अध्मापकों का अधिक आना-जाना न होने देने के लिए वे अधिकांण ममय स्वयं भी स्कूल के दक्तर में ही रहने लें।

लाहीर में रविवार के दिन मध्याह्न में 'वेद-प्रचार सभा' की वैड़ी थी। प्रोफेसर महायण का वहां जाना आवश्यक था। वे प्रातः गाड़ी है लाहीर चले गए थे।

दोपहर का समय था। मोतीराम सीदा लेने वाजार गया था। जा वती अपनी चारपाई पर लेटी कोई पुस्तक पढ़ रही थी। मकान के विष् वाड़े से गैया कमला के जोर से रम्भाने का स्वर सुनाई दिया। ज्ञानकी का मन पुस्तक में रमा था। गैया की रम्भाहट वार-वार सुनकर जी वती को गैया पर दया और मोतीराम पर खीक्ष आई—बहुत दुष्टर्स इनने गैया को सू*मा न*हीं दिया हीगा ।

मानवनी पुस्तक छोड़कर छठी और एक टोकरी भूमा लंकर उसने गैया की नाद में छोड़ दिया। कमला ने भूमे की ओर नहीं देखा। यह और भी व्याक्तता से रंभा उठी।

शानवनी विम्ना संक्षमला की और देख रही थी। असने अनुमान निया और एक बास्टी जल लाकर वैया के सामने रश दिया। वह कमना की प्रकारने सगी। कमता ने जस को और ध्यान नहीं दिया और जोर से सिर हिलाकर

रमाने लगी। गया ब्याकुनता से खूंदे का चनकर लगा रही थी और रस्सी तौड दैना चाहनी थी। ज्ञानवती उनकी व्यथा से दुवी ही कर बुधकार रही भी और पूछ रही थी-- "कमला बयाहै, बया हुआ ? ... बया चाहती है ?" मोरीराम लीड आया। ज्ञानवनी ने मुखी स्वर में उसे कमला की

सवस्या मुनाई। गैया अब भी ब्याकुनता से रम्मी सुडा रही थी। मोती-राम ने वैया को देखा और वेयरवाही से बीसा-"गैया वाहर जाएगी। बीबीजी, एक रुपया दें। ! "

"कहा ?" ज्ञानवती ने जिन्ता से पूछा--"पशु-अस्पताल ?" "नाइ के पाम जागुगी।" मोतीराम ज्ञानवनी के अज्ञान पर हम

विया।

"ह्राम, वरी ?" जानवनी ने विस्मय का गहरा सास शिया ! "नाइ के पान जाती है न सैया।"

"त्या बान है ?" ज्ञानवती ने फिर आग्रह से पूछा ।

मह समस्या गुरक्त में कभी उसके सामने व आई थी। किसी पुस्तक में इस विषय में कुछ नहीं पढ़ा ।

"आप रुपया दीजिए।"

प्रोफेनर महाक्षय मोतीराम से पैसे-पैसे का हिमान पूछते थे। जान-अ यती ने भी पूछा—"रमम का बया होबा ?" "सोड बाला लेना है।"

"विम लित ?"

"पैया नहें होगी, दीक ही बाल्वी हैं

"गैमें नहीं होती है ?" फिर जान र ते ने आगर विमा।

'सोटकर बताऊगा।"

भागवती ने विता की अवधारी में निकालकर पांच एपी ना नीट है दिया। मोमीराम गैमा को रस्त्री ने धामकर ते गया।

ज्ञानवती किया में कभी कमरों का वस्तर काटवी, कभी चास्तर पर लेंट जाती। गैया के दृश्य में उसका मन भारी हो गया था।

त्यं ्यतं के समय मोतीराम क्या को लीटा लाया । कमला वितर्क णात की ।

कमना को देखकर ही झानवती ने पृष्टा—"नया बात थी बनाओं?" मोनीराम मुहकराया—"तुम नहीं जानतीं, गैया सोंड के पास जानी

"हाम!" निना से आंखें फैलाए मांग गीचकर ज्ञानवनी ने पूर्ण "सांड ने बेचारी कमला को मारा तो नहीं ? क्याहुआ बताओं सन्सर्वी

मोतीराम एंगी बात से कतरा जाने के लिए रगोई की ओर वर्ज जाना चाहता था परन्तु ज्ञानवती हठ कर रही थी। इस हठ से मोतीराज उत्तेजित हो उठा। उसकी आंग्डें गुलाधी होकर ज्ञान लड़सड़ाने संगी उसने कह दिया—"अरे, जैसे गर्द-औरत करते हैं।"

ज्ञानवती के कौतूहल की सीमा न थी-"कैसे क्या करते हैं?" ह

वार फिर उसने पूछा।

मोतीराम अश्लीलता पर आ गया । ज्ञानवती समझी तो सहसा रोहीं से पानी छूट गया । उसने आंचल दांतों से दवाकर धमकाया—"हर्ट, हैंड तो वड़ी सुशील और पवित्र होती है । यह तो वड़ी बुरी बात है।"

मोतीराम यों दिलाई गई उत्तेजना से अपने वस में न रहा था। इने ज्ञानवती को कोहनी से पकड़कर कहा— "आओ तुम्हें वताएं।"

ज्ञानवती ने यों पकड़े जाने का विरोध किया परन्तु नाराज न हो ही

यह विरोध ऐसा था कि मोनीराम को अपनी जाबन का उन्माद अधिक अनुभव होने लगा।

ज्ञानवती ने पकड सी जाने पर मोतीराम के समीप हो लड़ पड़ाने

गम्दों में कहा - "नहीं, यह तो बुरा काम है।"

मांशीराम ने अनुरोध किया-"एक बार देखा तो ! युरा क्या है ? यह तो भी रामचन्द्रजी, सीताजी और श्रीकृष्णजी भी करते वे ।" ज्ञानवती ने पिता का मय याद दिलाया। मोनी राम ने उत्तर दिया---

"वे तो साहीर गए हैं । बान जाएते ।"

ज्ञानवती ने देखा मोतीराम नहीं मानेगा और वह मना भी नहीं कर पा रही थी। मिर चकरा जाने में उसका विरोध शिविल हो गया। पाप के भय को मन ने उत्तर दिया — उसको ब्रह्मचर्य की आयु समाप्त हो चुकी हैं। ऋषियों-मुनियों के युग में भी ऐसा होता था कि कत्या युवा पनि की बर नेती थी। ब्रह्मवर्येण तपसा नन्या विन्दने युवानं पतिस् ।

मीनीराम की उपना के सन्मुख मधुर पराजय स्वीकार करने के लिए, नतस्य का ज्ञान रहने-रहने ज्ञानवती ने मोतीराम के अंचल हायी को अपने शिधित हायों में रोककर समझाया-- "जल्दी से विवाह का मन्त्र पढ़ ली,

'भोम् विष्णुयोनि नत्पयतु स्वच्टा---'

वे दोना रसोई और साने-पीने की बात भून गए।

वे दोनों रात में चोरों के भय से भगन का दरवाजा बन्द करने की बात भी भूस गए।

त्रोकेमर महाभव बहुन सुबह की गाड़ी में साहीर बले वर्ष थे। उन्होंने मध्यातुमे चार वर्त्र तक समाक काम में भाग निया। घर पर अवेगी छोडो हुई मुवा बन्या की जिन्हा ने उन्हें घर सौट आने के निए विवस कर दिया। वे मंद्र्या की गाही में और पड़े 1

रात नौ मज स्टेशन पर गाडी से उत्र वे अपना मोटा मोटा हाम में भीर बागडों का बस्ता बगन में इवाए बेनों के बीच की परहण्डी ले

मनान मी और नत दिए में।

पान भीग गई थी परन्तु पार्त की श्वना पीरम की जांदनी से कि मा प्रकाश नारो और फैल कहा था। जीतन समीर में थोड़ों ने मेहे के मुनहरे होते, नदी किनारे तक फीट किए सहरे के रहे थे। नदी किनारे है टिटितरी तीर्ग रवर में गुकार-पुकारकर जान्दनी रात में निजंन, नीख णान्य मीन्दर्य की और ध्यान दिला रही थी। तीन भील का रान्ता था।

ब्रह्माथन घर में बैटी मृता राज्यों के भित्रम की बात सोनते आ है थ--'गदि वह वेद-प्रचार का कार्य हमी आयु से आरम्भ कर दे ? परतु जिस समय यह सभा के मच ने ज्ञान और ब्रह्मनये का उपदेश देगी, विसासी लोग उसके नग-जिल को, केणों को, उभरे हुए वश को देखेंगे ... यदि वह केवल स्त्रियों में वेद-प्रचार फरे तब भी तह युवा पुरुषों के संग में आएगी। विलासिता और वामना के गमम में में न आने से अब तक उसका ब्रह्मकर् सुरक्षित है परन्तु संसार तो विलासियों और व्यमनियों से भरा है। उसने यनाने के लिए व्यक्ति में स्वयं बल होना नाहिए। यह बल केवल संयम के निरंतर अभ्यास से आता है। भैंने यह बल कितने अभ्यास से पाया है।

जीवन में पग-पग पर परीक्षा के अवसर आए हैं...' ब्रह्मचर्यं ब्रत कितना कठिन है —यह सोचते समय उन्हें अपने इक्ती वर्ष में फिसल जाने की बात याद आ गई। उसीका परिणाम यह लड़ी थी। इसके परचात् कितनी कठोरता ने उन्होंने वासना का दमन किया है।

यह क्या सब लोगों के लिए सम्भव है ? प्रोफेसर को अपनी भूल की याद से याद आ गया —ज्ञानवती की म 'लाजो' तब ऐसी ही थी जैसी ज्ञानवती अब है। वह तो वासना की प्रव नदी थी ''लाजो के चिकने, यत्न से गूंथे केशों से आनेवाली धर्निये केते की सुगन्ध उनकी नाक में अनुभव हो गई। कुआर की ऐसी ही चांदनी र में, मकान की छत पर ।। ज्ञानवती का कद लाजो से ऊंचा है। वह ही कर चलती थी, यह सीधी रहती है। इसका सीना उसकी अपेक्षा "।

प्रोफेसर के जूते की ठोकर एक झाड़ी से लगी और वे गिरते-गिही

बचे। उसी समय टिटिहरी ने तीमें स्वर में चेतावनी-सी दी। प्रोफेसर ने सचेन होकर अनुभव किया — उनके रक्त का वेग तीव और गरीर उसेजित हो गया था। उन्होने प्राणायाम से स्वास रोककर शरीर के आवेग को मात किया ! मायत्री मन्त्रपटा और अपने-आपको फटकारा —'वह तुम्हारी पुत्री है। संसार की सब युवा स्थिया सुम्हारी पुत्रिया, बहनें और माता है।' सोचने सरो - 'बहावयं के तप का पासन कितनांकठिन है। ब्रह्मचर्य के अमूल्य रत्न को मनुष्य से लूट सेने के लिए किनने दस्यु विचार मनुष्य के पीछे पड़े रहेने हैं। ज्ञानवती बना ऐसे गरीर को लेकर ***। प्रोफेसर ने फिर अपने-आपको चेताबनी दी—'स्त्री के शरीर का विचार मन में न आना चाहिए।' मन को शांत करने के लिए ये निरंतर गायत्री मंत्र का पाठ करते गए।

मकान के दरवाजे इननी रात में खुले देखकर प्रोफेसर को मौकर और लडकी की वेपरवाही पर कोश आ नया। रोजनी भी नहीं जल रही थी। यह नया हो रहा है · · · क्या नहीं है ? ऐसी अवस्था से कोई भी चोर भीतर

प्रोफेसर बिनापुकारे भीतर चले गए। अपने कमरे से ज्ञानवती क कमर के दरवारों परजाकर वे उसें पुकारना ही चाहने थे किसामने चारपाई पर नीकर के माथ लडकी को देखकर उनके हाथ का बढा उठ गया। डडा, आहट पाकर उठ छड़े हुए मोतीराम के कन्धे पर पड़ा 1

मोजीराम चौट लाकर आयन के दरवाती की और से भाग गया। मोक्षेत्रर ने दूतरा इंडा ज्ञान को भारा। ज्ञानवती ने चोट से बचने के लिए बाहे उटा दी। मुख में बह बुछ बह न सकी।

प्रोफ्तेगर ने डंडा परे फूंक दिया। अस्तव्यस्त वस्त्री में चारपाई पर पटो जानवनी को बप्पडों और पूर्वों से पीटने के निए उसपर हुन पड़े। टनके हाथ जान के शरीर पर जहा-तहा यह रहे थे। जान के शरीर का स्पर्ण उनके हामों को उत्तेतिन कर रहा था। कुछ ही समय पूर्व चाइनी में पाडदी पर धनने समर झान के हनी सीने भी सुनना साओ ने मीने से बरने की स्मृति उनके मन्तिष्क में बाग उठी। उनके बोध में 🎉

मिलाक में अस्तरह तमें पूर्व का जिल आग उद्ध । उसी हाय शान के शरीर की पीटने की अवेदार मुखने, नी की और पन दो नागे ।

हान व दिहा की मार प्रवास गह में भी परन्तु उनने जिलके इस्कृतित शार्थ का राजने का मान किया । तिरोध में बोली—"विताबी, जान क्या कर गहे हैं हैं

श्रीफेसर मुद्र हो भूते थे। इस्होने श्रास्त्रणी की पुकार रोनने के लिए उसके मृत्य पर हाथ परवाप उसे चल में यह में जरना नाहा, परन्तु ज्ञान भी नित्रमिताकर उनकी पराह से छूट गई और फ्रास्टारकर बोली— 'विवाली, भाव मुहसे व्यक्तिकार करना नाहों है! ऐसा पाप नहीं बच्छे प्रमी।

प्रोफिसर ने दांत पीसकर ज्ञान को फिर परवृत्ते का यत करते हुए धमकाया — "पापिन, सू नीकर के साथ व्यक्तिचार नहीं कर रही थीं !"

झान ने झोफेसर को दोनों हाथों ने दूर नराने का गतन कर निर्भग, जैंवे नगर में उत्तर दिया—"नहीं, भैने ब्रह्मानर्थ ने पुवा पुरुष को बरा है। ^{भैने} गर्भाधान मन्त्र का पाठ कर लिया था।"

प्रोफेसर को काठ मार गया। वे एक धण निर्वाक ज्ञान की बोर देखें रहे। फिर लड़ाई में हारे हुए गाड की तरह न्यनाय नेज कदमों से मकाव के बाहर नने गए।

उज्जवन नांदनी का नाद पश्चिम की और हलने लगा। प्रोक्तिर तीन घंटे से तेज कदमों से घर की परिश्रमा किए जा रहे थे। अत्मग्तानि में उनका मन नाहता था कि ईट या पत्थर मारकर सिर फोड़ लें। जीवनिश्र के ब्रत और साधन को वे एक क्षण में कैसे गो बैठे ? ऐसे हीन औरति रहीं जीवन से क्या लाभ ? वे समाज को, संसार को मुख दिखाने लागक नहीं हैं। आत्महत्या के सिवा उनके लिए उपाय नहीं है।

प्रोफेसर सिर झुकाए व्यास नदी के पुल की ओर चले गए। पूल के जल में गिरकर समाप्त हो जाना ही आत्महत्या का सरल मार्ग था। वे आत्महत्या के संकल्प से पुल की ओर चले जा रहे थे और सोचते जा है

ये —'अब वनकर जीउन वृत्तिन उद्देश्य के नितृ निर्णक है। यदि वे आत्म-एता नहीं करेंगे नो क्या करेंगे ?'

प्रोडेंगर अपनी आरमा की नद्गति के लिए, मृत्यु के समय मन को मिन और परित्र रमने के लिए 'ओडम्' कट्ट और मासबी मंत्र का पाठ नरने जा रहें में ! वे कामना कर रहें थे, पुनर्जन्म सेवे पूर्ण बहाचारी तपस्वी बन सक्षें।

प्रोफेतर में पुन पर पहुंचों ही दिदिहरी में फिर बहुत तीये स्वर में पुनारा। प्रोफेतर का उद्देश वाल हो चुका था, तोचा — 'वगवान अब यह वस चेतावनों है रहे हैं ?' महुवा उन्हें ऋषि-वचन याद ही आया —

"अमूर्या नाम ने लोगा अन्धेन तमसायुताः। ताले प्रस्याभिगच्छन्ति ये थे च आत्मह्नो जनाः॥"

(शास्महत्या करनेवाने नो सूर्य के प्रकाश से श्रन्य नरक लोक से जाने है।)

प्रोफेंगर ने विचार किया—'पाप नहीं धुल सकता। पाप का अन्त प्रापरिचल और लप से ही हो सकता है।'

नदी के पूल पर गांगु अधिक कीतल बा। अस्तिर बैठकर सोधने रंग — भाग के एक स्वाप्त हो जाते ने जीवन के उद्देश को, परमाता के तार्य को बड़ों होंड हूं ? त्वी कात मा नदेस्य का तात्र है। यह परिस्थित्यों वा दांच था। मैं कल ही पूर्ण संख्यात वहण करूं — या लीवन में गूहरूप की आदरपारणा को पूर्ण करता हुआ अपना काम करूं ! — नहीं, यह मेरे समान के अनुदुल ने होंगा। मैं सल्यास श्रदण करंगा। ' प्रोचेतर पूर्ण से स्थान पर मोट आए।

प्रोफेसर में मकान पर भीटकर भीतन जल से स्नाम किया। नीद में मोर्द भावती को भी जायान जिस भी ऐसा ही करने के लिए कहा। फिर जहोंने हवन किया और यह भी पवित्र अलि के मम्भूप की भावती को जिसेहा दिया—"कत नुमने असंग्रम और चाप किया है। कन्या का विवाह भी भीता-"कत नुमने असंग्रम और चाप किया है। हमी अपराध कर इण्ड मेने त्रहे दिया था। आज मे मंत्राम प्रह्म करेंगा। आलमो या पादन महर्का विधित व् अपना नहीं त्र में मांग्य पर से तुम्हों विधान में रण देना महर्का महर्का विधित व् अपना नहीं त्र में में मान गानुक्ति होता है। गुम ईएन ज्वा मार्ग्य कर प्रदिश्च करों कि तुम इस पाद की मानी मानी मानी मानि करेंगी। अस्पता इस पात के पात में तुम्हास जीवन मान्यमा और काल्यमा हो जाएगा। उत्ति जीवन ही धर्म का उद्देस है। असे-रक्षा में लिए गानी आवश्यक है।

प्रतिष्ठाका बोक

नमत सीजिए, उमका नाम केवलचन्द या ।

नेवस बन्द को अपने हो छहर अव्वासा ने, 'मिसिटरी इजीनियरिंग मिन के रहनर में सीमटी मिस गई थी। वसे १६४६ में मसा मिसामर बर ग्ये को मेंदिरी मिस जाने हैं तस्त्येष हुआ था। अव्यासा में उत्यास अपना छोडा-मा प्रकार था। ११४६ में व्यवस्व बीजों के बाम बीजुने हो गए पी १४४ रुपये माहबार मिसने पर भी हाच वाली ही रह जाते में, हुए अपना ही जोड़ था। गुरुद्देशोंगी निवाहस भी समन्त नहीं हो रहा था।

अभ्याता के "मिनिक्टरी इंजीनियरिंग सिंबम' के कुछ कोगों में आन्योतन "प्यामा कि उनका अहंगाई भला अन्या लाहिए, उन्हें अवार्टर मिनने प्रािट्र, उनके साम सम्मानपूर्ण व्यवहार होना पाहिए, कि बताबब भी इस आन्दोलन से मस्मिनित हुआ। इस आन्दोतन कर परिवास यह हुआ कि अमें बड़कर बात करहेवाने लोग कर्जास्त हो गए। केवनम्बन के पर की अवस्था सराम थी। फिना की मृत्यु हो गुकी थी, बूढ़ी या को दमा या, कुछ ही महीने पहले उनका निवाद हुआ वा और पर्ता आदि दी शीमार रहने गरी भी। रहने का मकान अवना खहर था परन्तु महाजन के यहा देहत या। उसने आन्दोनन में माल लेने के किए मुमस्यी मांत भी। बहु नीकरी ने यक्षीन दो। गरी हुआ परन्तु उसकी अदगी लक्तक में हो गई थी।

र र भेगे दिव प्रतिवास

हमी अवस्था का दण्ड मेने वृत्ये दिया था। बाज में मंग्यास प्रहा क जालको का पापन संपन्नी विभिन्न करना वाहिए। में मीम पर मैं विवाह की क्षाबरका बाधना । साथ बंद मारण वारने से मन गलुपि है। मुग देश रेंग का रमस्य कर प्रतिका करों कि लुग इस पाप की चा भूतकर भी नहीं करोगी अन्यक्ष इस पाप के पता में तुम्हार गलकम्प और मन्द्रमय हो जानुसा। जीवन सीचन सीधर्म पा उ धर्म-रक्षा के लिए यही अववयक है।"

प्रतिच्छा का बीक

समझ मीजिए, उमका नाम केवलकृद था।

केरन कर को अपने ही बहुर अध्यामा में, 'विनिटरी इजीनियरिंग मिन' के रामर में नौकरी मिल गई थां। उसे १६४६ में भागा मिलाकर नर्थ मने को नौकरी मिल जाने से सत्तीय हुआ था। अध्यासा में उसका अपना छोटा-मा ककान था। १८४६ में करवा बीजों के दाम बीगुने हो गए ती १०१ गयं महिवार मिलने पर भी हाय गानी ही रह जाने में, कुछ अनना ही नहीं था। गफेर पोणी निवाहना भी सम्मन नहीं हो रहा था।

अनवाना ने 'मिनिटरी ६ ची निर्मारंग गविंत' के कुछ सोगों ने आन्योगत ने नाम कि उनका सहँगाई भागा बहुगा जाहिए, उन्हें बचार्टर मिनले ने नाम कि उनका सहँगाई भागा बहुगा जाहिए, उनके मार्च मारामुक्त कर्युर होना चाहिए, विकास क्षार मारामुक्त कर्युर होना चाहिए, विकास क्षार भी इस आन्दोलन का परिचास यह हुआ कि आगे वकुर बात महदेवाले लोग बलांग्य हो गए। केवनाम्य के पर के अक्सा रास्त कर्यु १ (का स्वत हुए में चूर्ण) में, बुक्त मार्च वेचा मा मारामुक्त करिया एता के (का स्वत हुए में चूर्ण) में, बुक्त मार्च वेचा मा मारामुक्त करिया एता कि सहस्य क्षार करिया है। बीमार पहले ने मार्च करिया करिया

इसी अपरांत का काल मेरे सुरहे दिया था। वाप में संस्थास महि जाकमा का पापन महको विभिन्न बहमा लाहिए। मे मीम्प पर विवाह मी व्यवस्था बक्तात । साम मी रमस्य बस्से से मनका है। सुम देशतर का रमत्रा कर प्रतिहा करों कि तुम उस पाप पी भूतकर भी नहीं बागेशी अस्पता इस पात के पता से पुरु कलकमय और कल्डमय हो जाएगा। अवित कीवन ही धर्म क भर्म-रक्षा के लिए यहाँ आवश्यक है।"

प्रतिष्ठा का बोक

समझ मीबिए, उनका माम केवपपन्द या ।

वेतमबन्द को अपने ही जहर अध्याता में, मिनिटरी इनीनियरिय कींगों के दक्तर से मोकरी मिल गई थी। उसे १९४६ में आता नियापतर वेद करों की जीकरी मिल खाने में मन्त्रोय हुआ था। अध्याता में उसका मनता छोताना मनान था। १९४६ में जबनाय बीजीने दाम चीतुर्ते हो। यह वी १९६ यह माहनार मिलने करा भी हाथ जानी ही यह जाते में हुए बनता ही नहीं था। मनेव्योधी जिलाहना भी सरमय नहीं ही रहा था।

सम्पान के 'विभिन्नते द्वेशीवयरित गविंग' के बुछ स्तेमों में आन्दोलन बनाव हि जनम महंगाई भला बदला बातिए, उन्हें बनारेट मिमने भारिए, उन्हें गार सम्मान्युकं व्यवस्टर होना वाहिए। विभक्षत मन्य भी इन भारतिन के गीमिनन हुआ। इन आन्दोसन का विश्वाम यह हुआ कि जाने कहर बान बहुतेबार तीन बारीसन हो गए। केवलपाय के पर की कराया त्याव की। विना की मृत्यु हो बूकी भी, बूढ़ी मां को बसा था, हुछ री नहींत पहने वास्ता हिवा हुआ था और पाती आने हो साम रही भी भी। एने वा मकान अपना कर या वरना महान के पही रही है।

में बनांच नो नहीं हवा परन्तु उसकी यहानी लालनऊ में हो गई

👯 भेगे विव बलानिया

वीक दासरद प्रथमिक संकर्पर (दा १४) जस्त हु दी-सूंदरी काहरूमर वी राइको, सरवारी, महिचके, महन्दर और अदानों में परिनित ही गण । रहा धी किस्मुक्तिस्स रवर की प्रांत्यधी का औरक प्रमन्ति देगा । सिवित साल भीर कोरियों, समार्थ के असम में यहार ब्हुत्सा रहते था। बहु बड़े लोगों की जगह की । यह कहर की विच-विष्य, विरोगक जगहीं में, पहीं ^{तीर} मनाम पर मनान जनानर जानार के तहे विजयों में रहें थे, वहां नी समार दृष करा था। भेजल ऐसी जयह से भी कहने के लिए सैनार न भा जता प्रहर-भर का मल भीनेवाल घोषी, मेहतर या वीकानेरी मोनी नह के किनारे भुजान्म में को उर्ग के जीवन के सब काम पूरे करते रही हैं। ^{नही} मानम भी बहुनी म के बाहर बाली में मल-मूत्र से मुनित पाकर वहतीत के भीतर पुन्हें पर पेट के लिए अन्त रंधना रहता है और वहीं चूले के उपलों ने उठने धुएं में, गर्टन नगरे और देह की दुर्गन्ध में मनुष्य के जीवन की मृष्टि और अवसान की सब कियाएं पूरी होती रहती हैं। ऐसे सेंग णहर का गन्दा आनल छोड़ हर इनलिए नहीं जा सकते कि जहर के मार्कि गम्पन्न लोगों को अपनी मेता कराने के लिए इनाई आवश्यकता रहती है।

केवल को इन लोगों के ऐसा अमानुषिक कीवन स्वीकार करने पर कोध आया--यह तोग ऐमा जीवन क्यों स्वीकार करते हैं, क्यों जानिमें की सेवा करते हैं ? उत्तर था - तुम क्यों मि० इ० स० की नीकी करते हो ! ये लोग करें वया ? गाएं वया ? इनके लिए यही विधान है। केवतः चन्द के लिए भी विधान था कि उसे दरतर में बैठकर 'ड्राफ्टमैनी' करती होगी और लगनक शहर में ही रहना होगा।

मकान न मिलने की समन्या ने उसके मन में, मकानों का मनमाना किराया वसूल करनेवालों के प्रति और जब दूसरों को सिर छिपाने ही जगह भी नहीं मिल रही हो तच हर काम के लिए एक-एक पूरा कमरी रखनेवालों के प्रति और अपने मकानों के सामने यहे-बड़े बाग लगा कर जगह घर लेनेवालों के प्रति एक कटुता भर दी। जहां भी रहते लाग जगह मिलती, किराया मांगा जाता — पचास-साठ रुपये। यह थी किर्त

मी लाठो, जिमके बल पर उसे साली जगह में भी घुटने नहीं दियाजा रहाथा।

पंडित जिनराम के पुत्र की बढ़नी मुगलसराय में हो गई थी। वहां ननाटर मिल जाने के कारण पंडित जो का पुत्र पत्नी को भी ते गया था। पुत्र और पुत्र-सुद्र के मोने की जगह, करार टीन में छाई बरसाती खानी हो गई थी। पंडित जो ने दे सास का स्वराया पैत्रागी लेकर वह सरसाती के सक्तवार को तीम करणे आधिक पर है ही।

केंद्रमचन्द उस बरमाती में अपना विस्तर और वनसा रख कर एक पाट जरीद कर सीटा ही या कि उसे गली में, ऐरे-गैरे गुण्डो को समा लेंगे

के विरोध का कोलाहल मुनाई दिया।

पिंत जी की बरसासीसे प्रायः आठ-इस हायजयह छोड़कर तिमजिलें मकान की दोबार पक्की होंने के खड़ी थी। सावद पिंत जी के विरोध के गांज हो इस दोबार में लिवकियां नहीं बताई जा सकी थी। इस उचें मजान की दीबार ये जिड़किया बनने से साथ के प्रकारों का पदी विघडता था। ऐसे हो कारणों से पड़ोज़ बगैर का कारण बन खाता है।

इस निर्माजिन मकाम की तीसरी मजिन के छज्ये से एक स्यून सारीर मीर महिला मूह बीर लाखे देनाकर और हाथ बढ़ा-बढ़ा कर छन्ने स्वर में पुकार रही भी- "आप कमें ऐसी कमाई में। आग कमें ऐसे कालव में। इन कमी को डेंट है इंट बज बाए। मुहस्ते में मोड लाकर समा रहे हैं। मुहस्ते री बहु बेंटियों के पड़ें और इस्ट्रत का कोई लवास नहीं।"

संग गर्मी के दूजरी बोर के सकान की खिड़की से भी एक सावती. इसी-मी भी में बोज करी-"'' अपने न बुखे, गर्सी में लोट पर का रहे हैं। अपनी बहु के तो कपाई के लिए परदेग केन दिया। इसरों को आपत कर रहे हैं। भीधा माने बात की आत को इरनत कर क्या ब्याल। देस पर बात देते हैं। आप को ऐसे सोच में!" इस विरोध के खाद महिला ने गरी में दसाती के लागते गुनने वाली अपनी स्विटकिया भीषण आहट से सन्द कर से। बाई और के स्पान संभी विरोध हो दहा था।

६६ में में विम कहा निया

भगवान के इजायम में होती इस फरियाद पर एवतरका जिसी ही जाने की आरंका में पहिलानी भी अपने दरवाजे पर आ गड़ी हुई। बहर हीन सीने पर एक हाथ ने भोती का आनव जीने, दूबरी बांह फैनकर पित्तानी पुताई देने लगी —"अपने मनानों में नार-वार किरामेदार मेर रोगे है। दूबरों को दो पैसा अवा देखकर जिनके कोचे में आग लगती है। उनमें भगवान समर्थे। इन्हीं कभी में तो हवानी में संप्र हुई। दूबरों का पीना खाकर को आग गया है यह कभी जिन्हा न मोटे। …"

पंडियानी ने निमंदिन मदान की मालिक मुत्रानी के अपरमी को भी प्रचार आरम्भ कर दिया ।

्रगामने गली पार के छठके में एक बहु कुछ उधेड्युन कर रही ^{यी।}

उसने उदनार पर्वे के लिए जगने पर एक चयरा डाल तिया।

वार ओर के मकान में एक बातू हाथ में छतरी लिए दफ्तर जाने ही पीणाक में निकल । पान का बीडा भरे मूंह में उन्होंने कलह करती सिकीं को आण्यासन दिया - "पष्टित को लोटने दो । सब पूछताछ हो जाएती। गृहस्थों के मुहल्लों में ऐरे-मैरे लोगों का बसना कैसे हो सकता है ? अहेते रहने वालों के लिए बाजार में बैटनों है, होटल है।"

मेयलचन्द को स्वयं दपतर जाने की जल्दी थी। इस विरोध से उनके हाथ-पांव उलभा रहे थे। वह कुछ न वोला। कोठरी में ताला लगाकर सिर सुकाए गली से जा रहा था। ग्रथानी ने उसे लक्षकर विरोध का स्वर जंब

कर दिया।

संध्या समय केवलचन्द, संकट को जितनी देर हो सके टालने के विचार से विलम्ब से मकान पर लौटा। अपनी सज्जनता के प्रति विश्वति पैदा करने के लिए वह गली में आते समय आंखें नीचे किए था। इस पर से जस पर में आती-जाती, जर्जर और मैली धोतियों में दृष्टि की पहुंच अपर्याप्त रूप से रक्षित नारियों को पर्दा कर लेने के लिए सचेत करते जिले के लिए वह खांसता भी जा रहा था।

खत्रानी अब भी प्रतीक्षा में छज्जे पर खड़ी थी। केबल को देव^{ें है}

वने गुनह में स्थमित संवाम की ललकार से गली की गुंजा दिया।

इन मनकार मे पहिनानी भी बाहर निकल आई और सत्रानी के रमी ना विज्ञापन कर उसका इतिहास बलानने लगी। केवलचन्द उर्द् रि हिनावी हिन्दी बाजना था । जननक की स्वानीय बीजी समझने में में उनसन हो रही भी परन्तु इस पहनी ही मंद्रवा उसे अपने पद्टोमियों का गैंन परिचय मिलना जा रहा था।

अधेरा हो जाने और सब बकाना के रोशनी जल जाने पर केवल ने भी म मोगवती जना सी । नारी युद्ध का कोलाहुन कुछ गमय पूर्व दय चुका । नीषे गली से पुषार स्नाई दी-"त् नवं बाव, साहव ! जरा नीषे

गरीक माने की तकसीफ गवारा की जिए।"

मनी में पुरुषों वा एक प्रतिनिधि मण्डल उपस्थित था। कोई प्रश्न रए दिना उन सोगों ने गृहस्यों के मुहस्त में अकेले पुरुषों के आबार रहने अनीचित्य पर अपना मन प्रकट विया। वेदम्बन्द पहित की अपना रिवार ने आने की बान कह बुका था। बही आध्वामन उसने इन सोगी मामने भी दोहराया कि गीन-बार दिन की छुड़ी मिलने ही यह परिवार ों ने भार्गाः। इस पर उनके जान-गांत, बस और पर की पूछ-बाछ हुई भीर प्रतिनिधि सम्बन्त उसे सबकी प्रवृत्त का रामाना करने सीझ ही स्त्रीः [प को से आने की नमीहत देवर चना गया।

केंचन में साट घर मेट कर विश्वास की मास सी। परिवार की में अनि FI बाहरामन मा उसने दे दिया था परम्नु ही खाटो ने क्षेत्र हता के बराबर बेरह में पूरे परिवाद को की बैठाए और सींद आए तो किमें ? बूबरा कहा बनाएमा ' अपि पर से पानी दोने-होते उसकी बान सवाह हो आएगी।

पुरर्श के मनुष्ट ही बार्न पर भी नारी-ममाज में विशेश का मान्योजन विन्तुन मही यह गया था । विरोध कर निमहिन सकान के अपर धारे पाने में। परियाम प्राया निवारी में कमह होता और नेवन का मर्ग के के सहात से सदया तिर्मावका आहा है इसे मानूम हो तमा हि वाहरे के सहात से सदया तिर्मावका अहात दिलाव सम्बाती वह है है दर्ग है।

१०० भेरी जिए कशानिया

किरामुदार है। खतानी दो ही मन्तान के बाद बीम-दक्षीम बरस बी आहु
से विधवा है। उनकी लड़की मह जुनी है। जनका तम उस में ही गृह
सिरतं तमा था। उनह होते ही बरी यहन बना घाटा मन्ते के महे में गा
बैठा और नेनदारों के अब में आग मया था। मनानी में दो और भी मनति
थे। तिनदारों को उसने अमृदा दिखा दिया था। चुक्के-चुक्के महना रवकर
गामा गृद पर देशी ती। नह उसकी बन्नी मुख्य है। वह मास से दो बक्के
आमें है। माम उसे विभी के बहां आने-जाने नहीं देती। युद महर में गते
करती है और बह की पर में छोड़ नाला लगा जाती है।

तिरोध का पहला उनाल बैठ गया था। केवल नन्द के आ जाते के परोग के मकानों में गुरक्षित नाकी मीन्दमें के प्रतिआगंका का जो कोहरान उठ पड़ा हुआ था, उमने केवल के मन में उत्मुक्ता जगा दी थी। अब गती के लोग केवल को महने लग गए थे। पड़ोशी उने अपने कार्ड पर राकी और लीगी ला देने के लिए कहने लगे। दूसरी सहायता भी लेने लगे। अब कुछ ताल-मांक भी करने लगा। सामने के मकान की सिड़कियां अव उत्ती सरती से बन्द न रहती थीं। राजानी के मकान में स्विमां छजे के जंगले पर भीगी धोतियां सुमाने के लिए फैलाने आती तो केवल की विड़ित्र की ओर भी नजर डाल जातीं। बीच की मंजिल की बंगालिन आंवत अस्त-व्यस्त होने पर भी बिना ज्ञिलके छज्जे पर बैठी तरकारी छीतती सहती। यो दिखाई दे जाने वाली स्विमां प्रामः पीली, सांवली और मुर्ही हुई थीं। अलबत्ता मामने के मकान में नह की आंधे बड़ी नशीली थीं और उसका चेहरा भी खागा नमकीन था। केवल को इधर-उधर देवते ही विशेष रुचि न होती थी। कहीं दृष्टि जाने पर बह वितृष्णा से मुल्ती देता--व्या इसीके लिए इतना णोर था।

गली के लोग केवलचन्द को सहने लगे थे परन्तु उधर खनाती ही विरोध विलकुल गांत नहीं हो गया या। वह पड़ोस की और अपने किर्मा दारों की बहुओं को 'पंजावी' की आगंकामय उपस्थिति से सतक किर्मा रहती थी। उसकी अपनी वह यदि क्षण भर को भी छज्जे में ठिठक जी

नी बनती हाय से छूट मई कांसे की बान्ती की तराह इतने बोर से सत्ता उठरी कि नेवलवन की दृष्टि छज्वे की बोर उठ विना न रह मकती। दृष्टि उपर उठती थी सी हक भी जानी थी। बहुके दृष्टि से ओझल हो जाने पर नेवल के हुस्य ये एक महरी सात उठ जाती थी जैसे माम में से कांद्र कोच ताजा जाने पर एक पीडा-सी होती है।

केनमण्य कि हृदय न पा । कमानी की बहु सख्मी की देसकर उसे मेंगें के बीव से सावने भाद, अमेन के खूरी नामा के पुन, तानाव में तह- मारां कमान की उपमा बाद न आई। उसे पुना जान पड़ा कि लीही से हिंदी कमान में दिवसा नुम काने पर कई में सिपटे किसी मोती पर उसकी दृष्टि पर गई हो। मधमी का रंग उसे ऐसा जान पड़ा वेंगे केने का पे १ जाइकर भीत से सबेद दिकना शंवा निकास निवा हो। उसकी बड़ी-बड़ी भागी माने पह सब प्रकार में दिवस की स्वी पता पड़ा है। इस माने पेता में माने पता की सबेद दिवस हो। वह उन्ने पर पता कि किमी है हाथी दान में नाला मान बहु दिया हो। वह उन्ने पर बातों में उसती की उस के सब दिवस हो। वह उन्ने पर बातों में उसती हो। वह उन्ने पर बातों में उसती हो। वह उन्ने पर बातों में उसती हो। वह ती विकास की विकास में साथ से साथ महीं जागी।

कैननथन के उम मानी में आने पर जो किरोम हुआ था उमकी साद से मीडे मुचियत माहम करने भय स्वामाधिक था, फिर खवाणों के ही घर? यह वार्षिम की माद में जाकर उनके वक्के पर हाथ डामना था परन्तु उनकी आज खमानी के छज्ये भी खोर बरवल उठ जाती और यह को धार पहीं दिनी रहुनी। दी समाह हो बीते के लिएमी से उतकी आज मह पहीं । बादमी ने देखा और खड़ी गहीं। दीन-बार दिन याद फिर आज मिननं पर लिएमी ने मुक्कर दिया। उस समय केवल यह भेर नहीं नर पाया कि पुन सर एन या मोजी बरख गए। बहु बेबत होनर अपनी साट में उठन पड़ा—परिणाम की फ्लार न कर सख्यी की और देलने समा। गरीम पहुन मकने के लिए बहु मुख्य धी बर मुख्यने के लिए होयार ही

धमी प्रायः युनाईकदाई का काम लेकर छन्ने में केवल की वर-

२०२ मेरी धिम बहानिया

मानी की और जा वैराति। यह भर की मौहें के उने हुए उन्ने की आह में हीने के कारण सामने और इभर-एथर के मकामों की निर्मियों ने विरम्भाई में पड़ती थी। उन्ने के देवी कर जीम समाए मह केवल की और देवती रहती के कारण यह तो केवल की प्रत्येक की स्वाप्त की स्थाप की सामने वैर्थ है। सक्षमी कभी जगर की मुनी उनक की सामने की दिवस की सामने की दिवस की सामने की सामने की दिवस की सामने की सामने की दिवस की सामने सामने की सामने सामने की सामने सामने की सामने की सामने की सामने सामने की सामने सामने की सामने साम

फैयल का मन जाहता कि अपनी यरमाती में ही बैठा रहे, दस्तर ने जाए। लछकी को मामने मुहकराने देनकर उसका मन ऐसे एउपडा उसकी कि सिर पूटने की जिला न कर मामने के छउने पर नड़ जाए। उसकी आंगों ने दीवार की इंटे मिनकर हिगाब लगा निया था कि उसकी छत पर जाता है। उसकी छत पर जाता वाली, प्रवानी के मकतन की दूसरी मंजिल बारह पुट ईवी है और तीसरी मंजिल दस पुट है। छउने की जचाई दो पुट होगी। छ पुट तो यह बाद रप्पकर चढ़ जाएगा। दोष आगे छः पुट क्या है। दिवर में जापट मंगकर चढ़ जाएगा। दोष आगे छः पुट क्या है। दिवर में जापट मंगकर चढ़ जाएगा। देश आगे छः पुट क्या है। दिवर में जापट मंगकर चढ़ जाएगा। देश आगे छा पुट क्या है। दिवर में जापट मंगकर चढ़ जाएगा। देश आगे छा पुट क्या है। दिवर में जापट मंगकर चढ़ काएगा। देश आगे छा पुट क्या है। दिवर में जापट मंगकर चढ़ काएगा। देश आगे छा पुट क्या है। दिवर में जापट मंगकर ही अंगों की सामने नाचती दियाई देती रहती।

नवम्बर का महीना जा रहा था। ऊपर टीन की छत होने के कार केवल की बरसाती रात में खूब ठर जाती थी। पड़ोस की गिलयों में ब्राह हो रहे थे। ठंड से नींद न आने पर वह स्त्रियों के गाने सुनता रहता और कुछ समझकर मुस्कराता जाता। वह लखनऊ आया था तो गरमी की मीसम था। वोझ से बचने के लिए वह लिहाफ साथ न लाया था। दिन हैं तो उसे जाड़ा मालूम होता परन्तु रात में जाड़े से नींद टूट जाती थी। ज समय सोचता—छज्जे पर से चढ़कर लछ्मी के पास पहुंच जाए। इतवार की छुट्टी के दिन दोपहर में टीनों से छनती गरमी में लेटा वह तगाता लछ्मी के छज्जे की ओर देखता रहा। लछ्मी भी लाल ऊन और हता ईयां लिए छज्जे में आ बैठी थी। थोड़ी-थोड़ी देर में उसकी ओर देवार

मुख्या देती थी।

में नत क्षोच रहा या—मोटी (परोक्ष में सनानी को गली के लोग इमी नाम में पुकारों के) इस समय चादर ओडकर महत पूमने गई होंगी या नियों के यहा मारी ब्लाह में मई होंगी। तमी लग्गी निषदक इननी देर में देंगे हैं। जीने में गानन समाकर गई होंगी। वह छन्ने से जा सकता या। संगहर थी, पहोंग के सब लोग देख केते। लग्गी से पहले बात ही नाए तब नो? बात कमें हो?

केवल ने सफ्सी को दूर में ही कुछ बार देखा-घर था। बात कर सकते गा प्रान ही नहीं था परन्तु लग्जो के प्यार में उनका मरीर और मन्तिक न्या जा रहा था। बहु उत प्यार के लिए जोविय उठाने को तैया था। यह प्यार कैमा था ? को-पुरस का प्यार, जिसका कारण केवल प्रकृति होती है।

देवन प्रस्थान अपनी बरखानी में बढ़ गया। गोबा,सान-बहु बसीना-बार में हुपान को के मन्दिर का रही है। बहु सीटपड़ा और तेड बड़मी से अरोताबाद की ओर पना। बाबार में हुए ही हुर अकर उनको आयो ने रानाको हुद्द निया। जहें निवाहंस की बहुबाबार के हुमगी और पनने समा।

मन्तिर के बाहर बनार और फुरों की हुए जो पर बेहर भी हती। माम ने कह को टेन-बारे से बचाने के निए एक और बडा कर दिया और पुत्र मेंने के निए भी ह में प्राप्त के निए एक और बडा कर दिया और

१०४ मेरी द्रिय महानिया

सीचे, मेहदी से दंगी नस्पई हथेली पर प्रसाद का दोना टिकाए एक और सादी रही । उसकी यही-पड़ी आंधें औड़ पर ग्रेर रही थी।

मेवल माम को लाइने के लिए आंग्रें भीड़ को और रंगे लहमी के समीप यह आया।

यह ने हन्के ने होंद्र दवा लिए। फेवन धीमें से योना — "प्याद करनी हो ?" महामी ने आंग झपककर अनुमति दी। "मिलीगी नहीं?" यह ने फिर आंग झपकी।

बहुन (फरआर) "क्रब ?"

"आज रात अम्मां गीनों मे जाएंगी।"

''आएं ?''

"किरायेदार हैं।"

"छज्जे से आ आएं ?"

बहू ने कह दिया —"किरायदार जल्दी मो जाते हैं।"

फेवल सास के आने में पहले टल गया।

लीट कर केवलचन्द दुविधा में था। सत्रानी का जीना उसने देखा न था और छज्जे से चढ़ने में गिरने का काफी भय था। लौट ते समय उसने आंखों ही आंखों में खत्रानी के जीने का सर्वे किया और खाट पर बैठकर छज्जे की बनावट और दीवार के साथ लगे पानी के नल पर लगी कीतों की दूरी देखता रहा। उसकी दृष्टि बरावर उसी ओर लगी थी। लड़मी छज्जे पर दिखाई दी और उसने सिर पर आंचल सम्भालने के बहाने हाथ दिखाकर अभी ठहरने का संकेत कर दिया। केवल स्वयं भी दूसरी मंजित में वत्ती बुझ जाने की प्रतीक्षा में था। इन कमरों के भीतर से छज्जे पर प्रकाश आ रहा था। सामने के मकानों में खिड़कियां सर्दी के कारण मुंदी थीं। केवलचन्द वाहर अंधेरी रात के पाले में वेचैनी से घूम-घूमकर प्रतीक्षा कर रहा था। पष्टापर से नौ का घच्टा धजने पर दूसरी मंजिस की वती बुझ गई। हेवन ने पन्टह मितट और अजीक्षा की। इस वीच सखमी कई बार छज्जे

पर धूम गई यी।

केवस स्वा नी वर्षे लाट से उठ वाहर बाया। साट खत्रानी के मकान नी रीवार से क्रांकर वह चढ़ने को ही था कि उत्तर में कुछ उसके विद एर दरका। केवस ने उत्तर झांका। अंग्रेरे में सहभी के गोरे हाथ ने अभी और उत्तरों का सकेव कर दिया।

केवन ने बिना साहट किए खाट उठा शी और भीतर आकर छज्जे नी ओर रेखता प्रतीक्षा करने स्था। घण्टाघर में साढे भी की 'टन्न' मुनाई थी। उस समय सछभी ने सकेत किया—आ जाओ!

केवन की बाट इसरी मंजिन की कराई में आये में कुछ नीचे पहुंची रर हु वह वीवार के महारे काट की अर की पटिया रर पान रज खाता हो गया। बाट उठकर तीवारी मजित के अपने के जीचे छेदों में मंजूपि फना भी और सरीर को तोजकर बारीर को अरूर उठाया। मोहे के एक नम्में की मुदेर पर पांत्र टिका जिया। हरता महारा पाकर उवका हुनरा होय जाते के विरे पर पांत्र क्या वाह उवककर वपने के भीतर जा पहुंचा। सक्षमी उने बाह में बाम सुरन्त भीतर के नहीं।

केवल को प्रभीना आ गया का बीर उसका कलेवा चक्चक कर रही मान प्रमान की ठाड चक रही थी परन्तु उससे भी अधिक उम्र भी उससे माह। उनने सबसे को बाहो में हतने चोर से ममेट सिया कि उसे अपने मरीर में ही मसेट लेता। वह उसके होंटों को खा जाना चाहता

या •••।

ष्ठरमा जीने के किनाड़ों को सांक्स सन्तनाकर थिरने की आर्ट टूर्व भीर माथ ही किनाड धून गए श्रदशाना सुननेते जीने की बसी का प्रकाम भीनर किन याता शाम ने भीनर करन रमा और आर्थे मना मुद्द कैतार. इस्को-नक्की बाढ़ी रहे गई।

/

साम ने बोर से चिल्लाने के लिए सीने मे मांस मरा…।

१०६ मेरी विश्व कलाविका

के तत्त और वाहों में सिमारी तहाभी प्रायः बेगुध हो गई थी। केवल उसे लेंगे ही फो पर भिर जाने दिया। आहमरथा के लिए वह सामने पड़ी पुकारने के लिए तैयार साम पर दूर पत्त । पुत्रार्म के लिए गुले साम के मुद्द में पदद निकल पाने में पहने ही केवल ने साम के भरपूर गरी को बाहों में देवर सभीप पहें पर्लग पर इत्यावर अवर में दवा लिया ""

केवन ने मान का गला नहीं दबाया परन्तु अवस्था ऐसी थी कि सार जिल्ला न सकती थीं। साम ने दबे स्वर में विरोध किया—"हैं, हैं, की गरने हो ?"

फैबल के लिए विरोध को स्वीकार करना जीने-मरने का प्रश्न था।

यह मुभ सम्भालने ही कमरे में भाग गई थी। दस मिनट बाद अब माम ने केवल की बांहीं से मुक्ति पाई ती

केवल की गाल पर ठुनका देकर मुस्तराकर जिकायत की—"बड़े वैसे हैं तुम !" सास ने पूछा—"जीने में तो ताला था, आए किधर से ?"

कार ने पूछा—"जान मंता ताला था, आए कियर से व केवल ने बताया। भय में सास के और्ष खड़े हो गए। उसके मुखर्ष निकला—"हाय दैय्या!"

सास केवल को जीने की राह नीचे पहुंचा देने को तैयार घी परतृ केवल अपनी वरसाती के जीने में भीतर से सांकल लगाकर आया थी। सास ने उसे अपनी धोती दी कि छउजे के सम्भे में बांधकर आहिस्ती हैं

नीचे उतर जाए। अब खबानी बहू को छज्जे पर देखकर झुंझलाती तो बहुत धीमें हैं और प्रायः स्वयं छज्जे में आ बैठती। कभी बहु आते-जाते केवल को गर्ज

से पुकार लेती—"भैये, तुम्हारे दफ्तर में चीनी रासन का कारट मित्री होगा ? भैये, चीनी की बड़ी किल्लत है। तुम तो होटल में पा जाते होते। घर-बार वालों को मुसीवत है।" कभी पुकार लेती, "भैये, दफ्तर से डी रहे हो ? चाय तैयार है। एक गिलास पी लो बड़ा जाड़ा पड़ रहा है। कभी केवल कोई चीज मांगने या पहुंच।ने स्वयं भी चला जाता। वह कि एम्प देवता कि साम न हो । केवल गली के लिए उपयोगी था । वह अपने रिवार को अध्याता से नहीं सा सका परन्तु अब इस विषय में कोई चर्चा रहीं स्टली थी।

१६४४-४१ में क्लबर्स पर जापानियों के बम पड़ने के खनरे से बड़ी-ष्ट्री क्रमतियों के दक्षार वृष्ट पी। वे वा गएथे । वंगालियों ने बावार लख-मंद्र, इनाराबाद बनारम, जागरा में जो भी जैसा भी स्थान मिला ले िया। हिरावे इयोदे-दूने तभी हो गए वे और फिर वटने ही गए। खनानी ने भी भारता घर-बार करर की महिल में ममेटकर दसरी महिल भूकर्जी दाव दो नीम रुपये माहवार पर उठा दी थी। सन् प्रेथ के अस्त और ४६ हे बनवरी में बनवसा निभेष हो जाने पर बवानी सीय सौटने लगे । मुकर्मी पन् भी मीट गए।

केरण को गरी में रोककर सत्राना ने कहा-"भैवे, उस टीन के ए सर के की वे के से युकर होती होगी। इस्तर से बरमी बा रही है। मारो मा मुस्को बाबू की जगह का जाजी, जाराम से रह तर पाओंने !"

देश प्रमानका में मुख्यीं की जनह चना गया।

रनी में फिर से कोहराम कब गवा । पब्लितानी ने दरवाड़े में खड़ी रिनर करोबों के पेट पर ताल मारने वाली को भीरत बाबा की मौंगा। नप्रभी ने शैन के विवरे में क्लाकर सीवी को जुटने बालों की गालिया रें — "त्यने लनम बना रिया या; बा रहा है तो इसे आए लग रही है। देश लऐश हुआ दुनाम है बसा ?"

देहत ने दनी के कोमी से कायदे की बात वही-प्यननी जगह में वह प्य-स्वतं को कैने माता ? अब इस की बगह मिली है तो जाकर उन भेती को में बाएता ह

इतानी मोह की ध्नेच्छ होते हैं, भाग महत्ती साने वाने। इतत हिता हा १ बरोरा और सकी में क्या मेद । अबट में केवनवर राजाती का विरुदेशक हो का। भीतर अपर की दोनों में बिगों में बिहक मेद न रहा परना नाम बह पर कही नियाह रखतीथी। कभी धमकाती कि मावके भिज हंगी। फिर फहती कि इसके घर के लोग बड़े वैसे हैं, जो कुछ ले जाएगी सब वही रख लेंगे। केंगल और बहु को कभी-तभी ही एकाल में गुस्कराने का अवसर मिलता। केंबल के लिए बह—अहनिकर परिश्रम नहने का पुरस्कार था।

बरतानी में रहते नमग केवल चन्द घर के लिए कुछ भी ध्यान भेज गका था। उस माग उसने घर में आए दु: रा भरे पत्र के जवाब में अपनी आधी तनगाह भेज दी। होटल वाले को भी कुछ न दे पाया। आए मान किराया देने के बजाय खत्रानी से दो मी और उधार लेकर कर्जे उतारे, पुछ घर भेजा और भला आदमी दिखाई देने के लिए एक सूट मिला लिया।

फेवल के पान मास मौज में कट गए। त्यानी प्राय: सुवह-शाम उसे त्याने के लिए भी बुला लेती — "भैये, वाजार का जाना क्या अच्छा लगता होगा; यहीं का लो।" त्यानी को भी फायदा था कि केवल के राशन कार्ड पर चीजें आधे दामों मिल जाती थीं। ऋण के लिए उसने केवल को परेशान नहीं किया। अलवत्ता कभी याद दिला देती, "भैये अवकी तनखाह पर हमें दे देना। हमें जरूरत हैगी। तुम जानते हो हिसाब भाई-भाई और वाप-बेट में भी ठीक हाता है।"

संघ्या समय केवल को असुविधा होती। वह लक्षमी से बात करना चाहता और सास अपने भारी-भरकम शरीर की आड़ में लछमी को छिपा कर डॉट देती—"तू जाकर लेटती क्यों नहीं। पराए मर्द के मुंह लगती है, मुंहजली।"

छः मास बीत गए । खत्रानी का स्नेह केवल को संकट मालूम होने लगा। सोचता—कहीं दूसरी जगह कमरा ले ले । उसे अनुभव होता था, वह बहुत कमजोर होता जा रहा है परन्तु करता क्या ? यह उसकी मर्दा-नगी को चुनौती थी। रात नौ-दस वज जाने पर भी यदि खत्रानी सोने के ए उपर न चली जाती तो वह धवराने लगता और बाहर छज्जे पर बाहर खड़ा हो जाता ! अपनी पुरानी वरसाती की ओर देखकर सोचता ----रेममे तो वही अच्छा था !

रुप्त ता यहा अच्छा या। केवन को छत्र्वे पर बहुत देर लड़े देखकर लत्रामी मृहू में पान भरे धीने में पुकार बैटडी—"भैये, अब सोओपे नहीं ?"

केवत का जी चाहना कि छत्रजे से धोती सटकाकर उतर जाए, जैसे एक बार जान पर खेलकर यहा चढ़ आने पर लौटा था।

जान पर केतना अब जान का जजान हो गया था। सख्मी भी अब उसे ऐसे समने सगी थी जैसे मुन्दर चमकीला साथ हो। बहु उससे भी कनराता रहता।

दम्मर बाते और शीटते समय वह प्रतिदिन सोषता—यदि वह अपने बत्तर और बनन के लिए न सोट तो क्या है ? विस्तर और बन्स का मूल्य

विभागिक वर्षे संभिष्यक न था। परन्तु अव गली में उनकी स्थिति दूसरी थी। सोंग उसे सदेह और विगीय को दृष्टि से नहीं परिचय और विषयात से देखते थे। सलीके से

बिरोम को दृष्टि वे नहीं परिचय और विश्वस से बेलते थे। सलीके से पहरें उनके मुटके काएव उत्तरारी केबालू लोग उत्तरे अपनेपन और कमानता को स्ववहार स्तरें थे। यह सब खोकबर बहु कर्ज के कर से मागने का कमी-गरन करें ? चौर की तरह गृती-यनी छिपता, नारा-गरर किरें ?

नारत करें ? चीर की तरह यती-यांची छिपता, नारा-नारा किरे ? ... सनका गरीर निर्देश और अन उदाल होता जा रहा था। कमर में रिस रहाग सा परन्तु वह नाती के जम यह अपनी सफेटपोनी की प्रतिष्ठा के सेंस को निवाहे जा रहा था...। मुक्ते यदि संकीणंता और संघर्ष से भरे नगरों में ही अपना जीवन यिताना पड़ता तो में या तो आत्महत्या कर लेता या पागल हो जाता। भाष्य में बरस में तीन मास के लिए कालिज में अवकाश हो जाता है और में नगरों के बैमनस्यपूर्ण संघर्ष से भाग कर पहाड़ में, अपने गांव चला जाता हूं।

गेरा गांव आधुनिक क्षुट्धता से बहुत दूर, हिमालय के आंचल में हैं। भगवान की दया से रेल, मोटर और तार के अभिशाप ने इस गांव को अभी तक नहीं छुआ है। पहाड़ी भूमि अपना प्राकृतिक श्रृंगार लिए है। मनुष्य उसकी उत्पादन शक्ति से संतुष्ट है।

हमारे यहां गांव वहुत छोटे-छोटे हैं। कहीं-कहीं तो बहुत ही छोटे, दस-बीस घर से लेकर पांच-छः घर तक और बहुत पास-पास। एक गांव पहाड़ की तलहटी में है तो दूसरा उसकी ढलवान पर। मुंह पर हाथ लगां कर पुकारने से दूसरे गांव तक बात कह दी जा सकती है। गरीबी है, अधिक्षा भी है परन्तु वैमनस्य और असंतोष कम है।

बंकू साह की छप्पर से छायी दूकान गांव की सभी आवश्यकतायें पूरी कर देती है। उनकी दूकान का वरामदा ही गांव की चौपाल या क्लव है। वराकदे के सामने दालान मेंपीपल के नीचे बच्चे खेलते हैं और ढोर बैठकर

नुगानी भी करते रहते हैं।

मुन्ह से जोर की वारिश हो रही थी। बाहर जाना सम्भव न था स्निन्ए बाजकल के एक प्रगतिशील लेखक का उपन्यास पढ रहा था।

परानी थीं "एक निर्मत कुसीन युवक का विवाह एक मिशित पुनी में हो गया था। मार के जीवन में युवक की आमदनी से गुड़ारा प्रनान देखर इसके स्थान में युवक की आमदनी से गुड़ारा प्रनान देखर पुरुष हों। ये भी मीकरी कर कुछ कमाना चाहा परन्तु मह बाद वृक्षक के आपसनमान को स्वीकार न थीं। उनके सतान पैदा हो गई, होंगी हीं थीं। एक, दो और फिर तीन बच्चे। यहनाई के जमाने में मूर्ची मारने की भीवन का गई। उनका बीमार हो आना। अपनी न्त्री की राम से नमुक्त का एक सेट जी के यहां नीकरी करना और जनका युक्ताल हो जाना।

"एक दिन राज कुला कि नवचुक्त की खुराहाली का मीन जनकी मंग्रावत नहीं, उनकी धनती की इच्छल थी। पति ने कोण के आदेश में पत्ती का गांधिन का मान्य किया पत्ती में निपतिहातक स्वाम मंग्री—भी कुछ किया इन बच्चों के निष्कृ किया। पत्ती ने केवल कच्चों रे पाल सनने के लिए प्राण-क्रिया माग्री। पत्ति सोचने लगा—मेरी स्वाम समने के लिए प्राण-क्रिया माग्री। पत्ति सोचने लगा—मेरी स्वाम समने के लिए प्राण-क्रिया माग्री।

मैंने ग्लानि से कुमार पटक थी। सोचा—मह है हमारी गिराबट भी मोंगी मात्र ऐसा गाहित्य बन रहा है जिससे मानिवार के निए नवाई में जाती है। मह साहित्य हमारी नक्ष्मित मात्र बेमा। हमारी में जाती है। मह साहित्य हमारी नक्ष्मित ना ना जा प्टा है। कार्य से मेंग रिजन पिछाना और सारोमार हमें बहु हमार किए है रही है। हम मात्र के साहित्य की सोचा के साहित्य की मों कुछ है दिवारा किए मात्र के साहित्य की साहित्य की सुकत हो है हिवारा किए साहित्य की साहित्य की सुकत हो पह साहित्य की सुकत हो है हिवारा कार्य हमारी कार्य कार्य की मात्र की सुकत हो है हिवारा मात्र हमारी कार्य कार्य की मात्र को साहित्य की साहित

११२ भेगी विच बहातिया

ऐसे ही विचार तम में उठ रहे थे।

वारित भगवार भूग निवात आई भी। पर में दवाई के निए पूछ भाजवायन की रक्षारत भी। पर में निभाग गड़ा कि येकू साह के यहाँ है ते भाज।

यक् माह की दुकान के अरामदे में पान-मात भने आदमी बैठे थे। हुकका चार रहा था। सामने गाव के उच्चे 'की हा-तीक़ी' का रोल सेन प्हें थे। साह की पान करम की लड़की चूलों भी उन्हीं में थी।

पान बरम की लड़की का पहरनी और ओड़ना नया ? एक कुर्ती कंपे से लटका था। फनो की समाई हमारे मान से फलीग भर दूर 'चूला' गांव में संसू में हो गई थी।

मन्तू की उस रही होगी, यही सात बरस । सात बरस का लड़का क्या करेगा ? घर में दो भैसें, एक गाम और दो बैल थे। ढोर चरने जाते तो संतू छड़ी लेकर उन्हें देनता और खेलता भी रहता; ढोर काहे को किसी के गेत में जाएं। सांझ को उन्हें घर हाक लाता।

वारिण थमने पर संतू अपने छोरों को छलवान की हरियाली में हांक कर ले जा रहा था। वंकू साह की दुकान के सामने पीपल के नीचे वच्चों को खेलते देखा तो उधर ही आ गया।

सन्तू को खेल में आया देखकर सुनार का छः वरस का लड़का हरिया चिल्ला उठा---''आहा, फूलो का दूल्हा आया ! ''

दूसरे बच्चे भी उसी तरह चिल्लाने लगे।

यच्चे वहें-बूढ़ों को देखकर विना वताए-समझाए भी सव कुछ सीख और जान जाते हैं। यों ही मनुष्य के ज्ञान और संस्कृति की परम्परा चलती रहती है। फूलो पांच वरस की वच्ची थी तो क्या? वह जानती थी, दूल्हें से लज्जा करनी चाहिए। उसने अपनी मां को, गांव की सभी भली स्त्रियों को लज्जा से घूंघट और परदा करते देखा था। उसके संस्कारों ने उसे समझा दिया था, लज्जा से मुंह ढक लेना उचित है।

वच्चों के उस चिल्लाने से फूलो लजा गई परन्तु वह करती तो क्या ?

एक दूरता ही तो उसके कंछों में मटक रहा था। उसके दोको हायो से कुरने का बादम बटाकर अपना मन्य छिपा सिया। एमर के मामने, हक्ते को घेरकर बँठे औड घले आदमी फुलो की इस

नग्बा ही देखहर बहुबहु। लगाहर हम पढ़े । काका रामभिष्ट ने पत्नों को प्यार से समजाकर कुरता मीचे करने के

निए समझाया । शरारती लडके मजाक समझकर 'हो-हो' करने सर्ग । बंद साह के यहां दवाई के लिए बोड़ी अजबायन लेने आया था परन्तु

पूर्मी भी नरलता से मन चटिया गया । यो ही सीट चसा । मोचता जा रहा वा -वदनी स्थिति में भी परम्परागत मंस्कार से ही

नैतिकना और सञ्जा की रक्षा करने के प्रयत्न के क्या हो जाता है। प्रगतिशीस नेतकों की उचाकी-उचाकी कार्ते ...।

हम फलो के कृरते के आचन में शरण पाने का प्रयस्त कर उपहरे चले पारहे हैं और नया समक हमारे चेहरे से कुरता नीचें सींघ देना पाहता

₹····1

उत्तराधिकारी

दानुषर के इताके की गरीबी के खवाल से हरसिंह का परिवार अच्छा साया-गीता था। उनके बाप और चाचा ने पुरतैनी जमीन बांटी नहीं थी। उसके चाचा के लड़के, दो छोटे भाई भी थे। मेती के काम-काज के लिए घर में आदिमियों की कभी न भी। उतनी जमीन पर कितने आदमी काम मारत ? पहार के छोटे-छोटे रोतों में एक आदमी मेहनत करे या दो, फसल की निकासी में कुछ फरक नहीं पड़ता। मदं रोत जोतकर औरतों के हवाले कर देते हैं और खुनाई तक वे ही उन्हें संभालती हैं। गोरू और भेड़-यकरी की रख़याली वच्चे कर लेते हैं। उनके सीधे-साद जीवन की सभी आवश्य-कताएं वहां पूरी हो जाती हैं। अपने सेतों के मंडुआ और नुआ का अनाज, गीओं से दूध-धी और घर की भेड़ों की ऊन से कता बुना कपड़ा। मर्दों के वांधों से कमर तक, घर के बुने कम्बल का गाता लोहे के एक वड़े सुए से संभला रहता है। कमर ढकने के लिए कभी हाथ-भर और कभी बालिस्त-भर चौड़ा कपड़ा। स्त्रियां भी ऐसा ही गाता और नीचे मोटा लहंगा पहने रहती हैं। शौक किया तो गाते के सुए में चांदी की जंजीर लटका ली।

पहाड़ी देहातों के आपसी विनिमय में रुपये-पैसे की ज़रूरत प्राय: नहीं पड़ती परन्तु कुछ काम हैं जो रुपये से ही पूरे होते हैं। सरकारी माल-गुजारी, गहना, ज्याह-शादी का दस्तूर और कभी अदालत-कचहरी का नाम सप्ये के बिना निम नहीं सकते । दानपुर में ऐसी कोई पैदाबार या नोरोबार नहीं जो रचया चाए। जितना पैदा होता है, वहीं धप जाना है। रामुर में रचया आता है—कुछ तो निमहा की चटाइयों को विकी से और मान कर यरकारों कानाने के सिपादियों की तनपाहों और पेरणनों के एवं हैं।

...

रानपुर को पट्टी खूब फैली हुई है परन्तु खेती और बस्ती कम, जनक और रहाइ श्यादा। सरकारी खजाने से सवनम दो साझ दरवा सालाना तमाहों और रेमनो के रूप में बहु। आता है। इस रुप्ते का मुख्य दान-प्रित्ते अपने त्वानों को जिल्लाकों और खून से चुकार्त हैं। बातपुरिया पत्रामों के पढ़ीले, समन और दृढ़ सारेत, उनकी निर्मयता और मोसेपन के कारण विटिया सामाञ्याहों को सेनाओं के सिए धरती करनेवाले मन्तर रुप्ते तथा जायऔर तस्त्रापत की शुटिन दे स्वत्र पढ़े हैं। बातपुरिया रेंग पीदार होगा जिनने जेता को जबान म रिए हो। बातपुर के जवानों के रिष्टियों से हुर-दूर देवों की भूमि उन्देश हुई है। बातपुरियों ने पान रंगण कमाने का हुनवा जवात है भी नहीं।

सानपुर से आह कम उम्र ने ही हो जाते है। हरशिह का भी आह जनी हो ही गया मा। उनकी यह बारह बत्त की हुई तो समुरान आ गई। घर और बेदी जा ताम बदाने को दो हाब की रही गए। हरशिह के से पेनरे छोटे भाई भी ने। बहुने गई तो बहुए आने सगी। हरशिह बोन महाने महाने गया या। यह नामोनेत जाकर अग्रेज मरकार सराहुर थी भीज मे भरती हो। गया।

र्रिमहर्क बाप और जाना निभाने नने बा रहे से परन्तु परिवार ने बात को सटलट भी होने सभी। हर्तिमहर्के भाना में सड़कों मा पदार्थ भा-दाम तो नव हम हो करते हैं, बमीन कहने को माझी है। गाऊ मा महारा परन्त में चला यथा और उमकी तनकाह ताळ खबनी जैब में ग्रार्थ सेना है।

हरसिंह का बाप सोचना-'अब में सहके की कमाई ने नेन-अमीन

प्रशिद्ध है। उसमें हिम्लेदार दुसरे भी होते !' आविद पंचारत में बंदेबारा हो एका।

हरसिंह जरम के जरम हुट्टी पर भागा और अपनी वह मानी की भरती हुई जनानी देखता। हरिनह की जह पंद्रह बरम की हो रही थी। उस मान हरिनह ध्रृट्टी पर घर नहीं आ मका। पड़ोसी गांवों के दूसरे मिनादियों में भी गहुत कम घर आए। हरिसह छुट्टी पर नहीं आग तिना पड़वारी के यहा में हरिनह के घर मंदेश आगा कि तुम्हारा तड़ती साम पर ममुद्र-पार जला गया है। तुम डाकराने जाकर उसकी तनसाह ते गां। हरिनह जब एक समुद्र-पार बहेगा, हर माह इसी प्रकार तनखाह मिनाती बहेगी।

मानी ने अपने आदमी के समुद्र-पार लाम पर चले जाने की बात मुनी तो उदास हो गई, पर उदास होकर बैठने से नलता कैसे ? घर और वेती का काम तो करना ही था, उदासी हो या सुणहाली ! और आंख की ओट जैसा एक कीम, बैमा मी कोस। यों भी तो बरस में महीने-भर को ही आता था।

दो बरस और बीत गए। मानी के शरीर पर ऐसी सुडौल जवानी पूट रही थी कि जिसके पास से गुजरती, एक नज़र देसे बिना न रह पाता। गांव के और पड़ोसी गांवों के भी अधिकतर जवान सरकारी फौज में भर्ती थे; लेकिन गांवों में आदमी तो थे ही। मानी लोगों की आंखें पहनाने लगी और आंखों में देखने भी लगी। दिन-भर की हाड़-तोड़ मेहनत में जरा हंस लेने, मुस्करा लेने से मन हल्का हो जाता था। घर में बूड़े-बुड़िया के सामने कब तक मुंह लटकाए बैठी रहे।

मानी के सास-ससुर उसे खेतों और घर के काम-काज में या पश्जों के प्रित वेपरवाही के लिए डांटते ही रहते थे। अब सास लोगों से बोलने चालने पर भी डांटने लगी। कुछ दिन तो मानी इस डांट-फटकार को कार्व की पीछे डाल चुप रह गई लेकिन जब उसके आने-जाने पर रोक-टोक लगने लगी तो मानी ने भौंहें टेढ़ी कर जवाब दे दिया—"घर में रहने नहीं देती

हों मों बना दो ! •••दो रोटिया ही तो खानी हूं । घेरे लिए बहा बमा रचना है ?•••वब बाएगा, उमे जो चहना होगा, वह लगा ! •••नुमहें भागे हो गही हूँ, वो बह दो; घेरे भी हाथ-पाब चलते हैं •••दुनिया बहुत गडी हैं !*

रमगर भी जब समुर ने धमकावा तो नुबह पमुत्री के निए धान महने जाकर भानी रान को भी न सौटी। समुर छमे नुनामद कर पड़ोंग के या दे सीटर लावा। बुझ बदनामी में डर रावा और सीचा—बेटर सो साम पर रावा है, यह भी चही कि लोते का काम कीन निमाएगा? पर में कोई बच्चे थी नहीं कि शोक ही रदा थेनर। पानी, ईधन और प्रमुंग के लिए पास-पात की मदद ने भी जाए।

नार बरम बाद साम सतम हुई। कुछ विचाही लोट और कुछ नहीं भीटे। इर्तिगह नहीं सीटा लेकिन उमकी तनलाह बगबर मिननी रही। भारति मही बहु लाम में जुकनी हो गया था, अन्यताल में है। चगा होकर बगला।

सी बेच एक दिन मानी के मसूर के पेट से मरोड उठी और वह बन बना। बुड़िया वेचारी हसियों से हन जुनवाकर यह के नाथ नेती तिना रही थी। भागी का मन नहीं तमता था। शरीर वडावट में दिक्सा-दिक्सर जना था। सह मन को मारती चरन्तु पडीबी खास कर जुहार, येचन कर देरे "बहु देवन ही जानी।

सारी किर पहोस के गांव बली गई। जुहार को बाटी (भरवासी) कैंग्रों में दिवार था परलू मानी हो साम ने जावर पट्टो के रामकी-हवस-चार के सामने दुराई दो कि उनका बेटा मरकार को मौसरी में गृत बट्टा पिट है और मौग उनकी बहु को भाग के गए। गरकार हमारा हमता भी क्यान गूरी करेगी? रामकी-हवसदार को भी पताक नहीं भा कि उन केंग्रा मानी को समावदर बेठ जाए। हजबनार ने चूटार को प्रमान दिया। यह मानी के हतने-मेमने को तो बट्टा कीम तेजार के मिलक उन अपने यहां मानी के का निकार किरोड़ी जा था।

×

नर्गति विदेश साधान्य की रक्षा के निए महायुद्ध में बहुता हुआ सरागत बुद्ध स्थान हो र के समय युपी तरह में सममी हो गया था। उसकी क्यार के आगलाज लग्नेवार जन्म बहुत गेनीदा थे। विपैती गैस का समाव और एमके स्वास्थ्य पर महुरा गड़ा था। प्रायः डेड् बरस तर फीजी अस्पत्ता में उसका इलाज होता रहा। यह प्रजोनिफरने के लायक हो गया प्रस्तु भई नहीं रहा। असेज सरकार में उसकी सफादारी और युद्ध में उद्यों में बेक्सर हो जाने के बारण उसे आधी नीमरी में ही पूरी पेन्सन देवर सुट्टी दे ही।

हर्गनह पूर गाउँ जार गरम बाद गाव लीटा। लीटकर देखा, उसका यूटा नाप नहीं रहा था। घर में उसकी मां, यह और उसका एक लड़की मौजूद था। अपनी अनुपान्थिति में हो गया लड़का देख हरसिंह कोंध से धानता उटा। उपने सोचा, लड़का उसका होता तो चार बरस से ज्यादी जा होता। बच्चा था केवल दो बरस का। हरसिंह की मां ने माथे पर हाथ भारकर कहा—""तों में क्या करती ? "में ही जानती हूं जैसे मैंने इस पुड़िल को गिथमाकर रोके रखा। अब बह सब जाने दे ! तू भी तो ऐसे बगत चला गया । उसकी जवानी का अंधड़ था। कौन नहीं जानता बरसात की पहली आंधी में पेड़ गिरा ही करते हैं। अब ढंग से निभा! लड़का है तो जवान भी होगा। तेरा ही है…।"

हर्रीसह ज्यों-ज्यों इस वारे में सोचता, उसके सिर में खून चढ़ती जाता। उसका व्यवहार मानी से ऐसा था जैसे जेलर का अपराधी से होता है। मानी सिर भुकाए चुप रह जाती या रो देती। जहां तक वन पड़ता, वह पित की आंखों से ओझल रहकर घर या खेती के काम में उलझी रहती। कभी हरिसह मानी पर हाथ छोड़ बैठता। मानी वह भी सह जाती परन्तु हर्रीसह का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था। वह मानी की हर वात पर आग-वगूला हो जाता। वात-वात में बच्चे को ठोकर मार देता। मानी और तो सब सह जाती पर वेकसूर बच्चे पर मार न सह सकती।

मानी ने बच्चे को मारने पर एतराज किया। हरसिंह और भी विगड़

हैं। -- "मैं अभी नुष्टें और तेरे इस हरामी को काटकर फेलता हुः।"

हर्पेन्ह सप्तमुच छन की धन्ती में गोंसे हुए सकडी काटने के दाव की भीर मतका । मानो के करीर से मानो नारा रक्त गित्र मया परन्तु प्रतीक्षा ररिवारिवान रा अवसर नहीं या। अपने बच्चे को छाती से विपटाकर ^{क्}ट्रपुरी शक्ति से भाग गई ३

हानिह जब धन्ती से दांव धींचकर भौटा नो मानी बक्ते को शेवर भार पृथी सी 1 उत्ता नेड सायकर जवान मानी को पर इसेना हर्गागह के मास्त्रं में नहीं या । होठ वाटवर उसने मोचा— 'भाग गईं । । धैर जब भौतिका ।

मानी मान तक नहीं लौटी। माने कोटी नेंक दो परन्तु हक्सिट न्यो नरी नवा। बहु पुत्रान पर कम्मन विद्यावक भेटा नो दाव निराहने रख रिया। मानी की दुष्टना का करमा मिस् बिना कह विन्दा रहते. को सैयार ने या। अप मानी आधी गातता भी न लौटी नो यसे नित्वस हो गया, थड नहीं आएगी । सोचा--'जुरूप के सहा नई होगी, जाए ! मैं सरपाई को अपने यहा नहीं स्वयम है

इपरे दिन भी मानी नहीं भौड़ी तो हर्यग्रह ने डोट भी । यह सम्प्रमूच पुरार के दहा गई थी । बहु खुरार के दारा यून्सा । बुरार और परवा काई

िय ये दार मेरद सामने आए और बोले--व्याम स्था बनमा ?" हर्रामह ने बहा-"ब्रव्हा, दक्षे के वीवान होता है

हरिता ने प्रवासन कराई १ वर्षा के नावान, और काम १ कर नावार राषर वीमना दिया---वानी हर्गाना की क्यानन क्षीरत है पुगर प्रानी मादारी (परवाली) प्रवास कारण है की प्रारंत्य की प्रवास का रूपांजा मार्ग बर-देवर की कीवन की कावा दें ह

हर्यातम के प्रश्ने द्वापून है जुन्मर है को शरफ केश्य में भी पर एक्ट कर दर करा बाद जार करी हुआ है।

I PRINTERING OF MAKE !



हैं। तोगो ने हबनि की रकम सीन मौ मुनी तो हैरान रह गए।

'क्पकोट' के पाम हर्रानह ने एक रात जिस किसान के यहां देरा किया पा रात में सब्बाद् भीने हुए उसीको अपनी परेशानी कह सुनाई कि इसनी बनान, गोक और शब (अड़-बक्टी) हैं लेकिन वह पसटन में या तो उसकी परामनी को सीन बहका से गए। वह पर बनाने के कैट में हैं।

उनके प्रकाश (निक्का के सह । वह यर बनाने के फेर से हैं।
उनके प्रकाश (निक्का) कि कहान ने मिन पर हाय मार अपना
द्वारा मुनाया कि जमने अपनी लडकी कुमलों, नरमा गाव के अच्छे यादेपी किना को क्यारी थी। येवारी के दो वर्ष भी हुए पर देवता सी
पास से दोनों जाते दें। यस कम्यका ने दूसरा व्याह कर निया है और
वनकी लडकी के हूर याव की अपनी जमीन से राल दिया। " जसे सुधी
भारतें हैं, नरास पीता है, जुमा खेनता है। कहाँ में 'शीनल' की अपनी
सेनी वेच थी। कुमनी को सीत के यहा से पथा। गीन वसे सहती गई।। "
कहाँ है, अपने वच्चे सा गई; हमनी छाता निरं वच्चो को सुधी है। एक

रीव उसे दोनों ने मारा । येचारी रोती हुई आकर मायके बैठ गई…। हर्रोनट कशली के आदमी को जरूजेवर का सर्वा हेकर कराली की

हर्रीनह कुशली के आदमी को जर-जैवर का खर्चा देकर कुराली को शरी बनाने के लिए तैयार हो गया। उसने बूढे से कहा — 'तू उसके बादमी से बाद कर के हैं — " के के ला कर है हैं कि कहा कर कि

नादमी से बात कर से, में साची लेकर बाता हूं।" कुमली का आदमी औरत से जान छुदाना चाहता था लेकिन हर्वांगा मागा तो हतना चमवा ! हर्रासह ने थचों के सामने हर्वांगा गिन विद्या और

पुरानी को से आया। हर्रामह के बहा आकर कुकती पत्तप गई। उसके चेहरे पर भी सुर्थी अगर्प । यह सुनी-दुनी पर और खेती का काम करती। हर्रासह उसे बडी

आ गई । यह पुती-पुती पर बोर खेती का काम करती । हरिंवह उसे वडी गांतिर से हामों-हाम रमता परन्तु , उमकी गोद भरने का कोई सक्षण दिताई मही दे रहा था। माब के बवान उसमे माभी का रिस्ता वोडकर उच्छु हतता दिगाने । यह होठ दवाकर बांख फेर सेती । उसे निवाने के तिए गाव की औरते हरिंबह के क्यर में गोनी सबने की बान बताकर वहुती—"--मी ही आह किया है इसने तो। "

१२४ मेरी शिय फहानिया

शिवपां इममानं सभी और लोग उन्हें महारा देने लगे। कोई-कोई रोने और जिल्लाने भी सभी परला उनके सम्बन्धी उन्हें थामे रहे। कुणली को महारा देनेवाला कोई नहीं था। यह पत्यर की मूलि की तरह खड़ी रहीं। आधी रात बाद उने जान पड़ने लगा कि उमकी विञ्लियों बरफ के पैने फलों से भटी जा रही है। यह तना कटकर गिर जानेवाले पेड़ की तरह गिर पड़ेगी। उनने अपने दात दवा लिए बहु नहीं गिरेगी। उसे अनुभव हुआ, उसका गरीर हिल रहा है। उसने भिष्टाय किया, वह डिगेगी नहीं। कुणली को मालूम हुआ—गामने का मिन्दर हिलने लगा, हिलकर कबूतर की तरह लालाव के बारों और उज्ले लगा, पहाइ भी भूले की बरितयों की तरह लालाव के बारों और उज्ले लगा, पहाइ भी भूले की बरितयों की तरह लालाव के बारों और उज्ले लगा, पहाइ भी भूले की बरितयों की तरह लालाव के बारों और अजने लगा, पहाइ भी भूले की बरितयों की तरह पूमने लगे, परन्तु वह कहती रही—"नहीं गिरूंगी, नहीं गिरूंगी…" सन्तमुच गिरने लगी तो उसने महायता के लिए पुकारा परन्तु होंड गुल नहीं पाए। उसे अपनी अजली का दीपक दिखाई नहीं दे रहा था। आंखों के सामने वादल छा गए थे वह गई! • फिर मालूम हुआ कि थम गई। किसीने उसे थाम लिया; उसे जान पड़ा, देवता ने उसे थाम लिया।

जय जोर-जोर से घंटे-घड़ियाल और गख वजने लगे तो उसे मालूम हुआ कि उसकी अंजली से दीपक हट गया। कोई उसे घसीटकर जल के बाहर ले जा रहा है, कोई उसे थामे हुए है। वह जमीन पर बैठा दी गई। कोई जोर-जोर से उसके पांवों और पिडलियों को मल रहा है। वह अनुभव कर रही थी परन्तु उसके न हाथ हिल सकते थे और न होंठ।

कुशाली के कानों में सुनाई दिया—"ले चाय पी ले।" गरम-गरम चाय उसके होंठों से लगी और जीभ तक वह गई। गले में पहुंचने पर गले ने घूंट भर लिया। तव उसके होंठ और घूंट भर सके।

कुशली को दिखाई देने लगा तो जाना कि कोई आदमी उसका सिर मल रहा है, कभी उसकी पिंडलियों को मलने लगता है। वह सिमट गई। मुंह से वोले विना उसने आदमी के हाथ हटा दिए।

आदमी हंस दिया और बोला—"थाम न

पहली ?"

हुगती ने अधनुनी आयों से उसकी और देखकर आखें भूका ली; मानो कह रही हो--'ठीक कहना है, तूने बडी दया की ।'

सूर्य की किरकें जमीन पर फैल गई थी । कुअली की इन किरणी से आराम मिल रहा या। वह अपनी पीठ किरणो की और कर लेटी रही।

वह आदमी अपना कम्बल वही छोड उठकर कुछ दूर गया और लौटा वो पते पर गरम जलेबी लिए या। बोला—"ले, वह खा ले ! जिस्म मे गरमी आ जाएगी।"

कुगली धुप में मन्दिर के हाने की दीवार से पीठ लगा बैठ गई और जलेबी खाने लगी। अब मुध आने पर कुजली ने उसे पहचाना । पिछले दो पहाद से यह आदमी यात्रियों में उसके साय ही था । कुशली को अकेल दैखकर उसने पूछा था — "तू इननी दूर से अकेसी कैने आई ? "

उस समय कुणली ने जवाब दिवा था-"ऐसे ही । ...तुले बया ?" परन्तु अब वह बात करने लगा तो कुगली सब कुछ बवाती गई।

दोपहर तक कुलली की तबीयत ठीक हो गई तो उस आदमी ने कहा —"जरा थठ, चल मेला देखें।"

कोई औरत अकेले नहीं घुम रही थी। कुशली भी उस आदमी के साथ पुमने लगी। उसे देवता की पूजा ठीक से हो जाने का मतोप था। उसने लहेंगे का कपड़ा खरीदा, गिलट के खड़ुए और पीतल का मुलम्मा-चड़ा गुजुबन्द भी । बहु आदमी रखनाली में उसीके लाय बना रहा कि कोई उसे ठग म ले. जैसे बहु उमीका आदमी हो। कुशली को झेंप मालूम होती पर अच्छा भी लगता. अकेले भी तो अच्छा नहीं सगता ।

रात गए तक मेला होता रहा । जगह-अगह गैम अल रहे थे । कुगली को जान पह रहा था कि दिन से स्थादा और अच्छी रोशनी हो रही है। उम आदमी ने बुधनी को सेव, पूरिया और मिठाई फिलाई । ऐसा तमाना · -- "क्मनी ने कभी नहीं देखा था। वह कभी घरकर उस आदमी

१२६ मेरी विम स्थानिया

कै माथ के 5 जाती और कभी सम्बद्ध समामा देखने समगी।

नेंद्र का समय आया । कुलती साह में जिन यातियों की भीड़ के साय आई थी, उन्हें स्वीतने सभी । मनेर्नित ने, यही उस आदमी का नाम पा, कहा—अवेद, क्या दृत्वी है। कीन यो नेंद्र समे हे? " नारों तरफ पेड़ों के सीन निर्दे आदमियों की ओर सकेत कर उसने कहा — "हम लीग भी ऐसे ही कहा एक तरक पड़ बहुंगे।"

"नहीं," ब्रावती ने कहा। उसे उर-मा लगा।

गभगित में जिद की -"तमारी द्वनी-मी बात नहीं मानेगी ?" मुश्नी च्य रह गई मो उसने भीभे-से मजाक किया—"तो फिर इतनी सक्तीफ करके दिया वर्षों जलाया था ? "देवता का बरदान खाली जाएगा?"

कुशनी को लज्जा से मधुर कंपकपी-मी आ गई। "हट्ट," उसने सिर इका पीठ फिराकर कहा और चुप रह गई।

दूसरे दिन एक पहर दिन चढ़े वे दोनों मेले से चले तो गीत गाते लोगों गी। भीड़ के साथ नहीं, पीछे-पीछे, अलग-अलग से चल रहे थे। कुशली जानती थी, उसे मीलों चलकर फिर हरसिंह के ही पास जाना है लेकिन इस आदमी का साथ अच्छा लग रहा था। उसका बोल, उसकी नजरें, उसके पसीने की गन्ध—सुहानी-सुहानी, मदं जैसी! कुशली को ऐसा जान पड़ रहा था जैसे देवता की तपस्या से पाया वरदान उसपर छाकर उसके शरीर को बोझिल और शिथिल किए दे रहा हो। वह बोझ ऐसे ही प्यारा लग रहा था जैसे भारी गहनों का बोझ हो। वह बैठने की जगह देख बार-बार बैठ जाती। वह इतनी शिथिलता से चली कि बड़ी कठिनता से वे एक ही पड़ाव पार कर सके।

अगले दिन गनेरिसह ने अधिकार के स्वर में कहा—"अव तू दानपुर की वीहड़ पहाड़ियों में कहां जाएगी? मेरे घर चल। मेरी सैणी (घरवाली) पिछले साल डेढ़ बरस का लड़का छोड़कर मर गई है। उसे भी पालना और अपने पेट को भी! "मेरी पच्चीस नाली जमीन है, भैंस है, गाय है, ^{नैन है}। त्रु मुक्ते देवताने दी है। चलकर मेरा घर बसा। ^{...} मैं तुझे नहीं अने दूगा! "

हुँगती रो पड़ी परन्तु इसरोने में अभिमान और सुन था। फिर उदाम होनर बोली—"नहीं, में तो जाऊमी। वो भला आदमी है! …गम हैरेगा। उपने मेरी बाटी के तीन मौ दिए है।"

निर्मित नहीं माना—"वो नेवा लेता आदमी है…? तेरा आदमी तो है। मेरे तम नहीं स्वेचना । मैं नेरी बाटी का हुवीना भर दूणा, चाहे रिनों क्योंन सेव दू!' उसने हुवाली को बाहों मे कस निया और योजा— "वाह, मेरा पर उनाडेंगी? "मेरी नहीं है है"

इगनी बीन नहीं बाई, जुप रह गई। उसे हर्तानह का बहुन स्वाल धा र गनेर्ताह की बिद हे अधिमान अनुसव हो रहा था। वह उनने माथ वनी जा रही थी। दिल कहता था, दानपुर चल; बाद चने जा रहे थे गैनेर्ताह के शाव की ओर।

बारह दिन बीत गए और हुमती बांतरबंद से नहीं लीटी तो हर्रीनह में चिना होने लगी। परहाँ दिन भी बीन गए तो बह पराता ही गया। मेन बो ममाना—पर्दाह मादी है। यह पर है। से-बार दिन में महिंगी होंगी। येने रान-रान-बार भीट न आनी। सोचना—'बसा ही गया उमे, महा बनी गई? यहा ही लोग देने तकने गहने थे। थी भी वहीं मनी!... बांगर है भीरत हो बात!

हारितह को नित्तवय हो गया कि कुमती बाती गई और मिर्छ औरन मही, उत्तका देवता ने पाया उत्तराधिकारी सहका थी बच्चा प्रया । इसे मेंस्सी होने के बारण बाते कारीरित्त अगायार्थ का भी बच्चान आता राज्य गर अपने अशिकार को बात जोकता — हेगों मेरी औरन ! यहे यह थी प्रमाश हुआ कि उनने अशिक्षार आती को घर से बनो निकान दिया भा। बात उत्तका सहका विकास कर हो बचा है ! जोक बाला कितना नवा है! उस नवके बो देवकर हार्यवह वे सब मे केह उसाने

र्श्य मेर्ग क्रिय क्यानिया

लगा। पर प्रमानी जात करके जवकी हैंगी कराने से क्या साभ था ?

हरिनद का पात अब ठोक हो गया था। यह मुश्राक्षी का पता लगाने सार्वर द की ओर पत दिया। पर्देह दिन नाद लीटा तो अकेला, नेहरे पर एटरी भवान और पर्देशभी लिए। गेनों में प्रमुल तैयार हो रही थी, इस-विए बहुत दिन के लिए घर नहीं छोड़ मकता था। उनकी यूड़ी मां के हाय-गोड़ अब कटिनना में घलों थे। यह दम-पद्धह मील के चक्कर में पूमकर पना थेना रहा। ओठ में महुआ यो देनेके बाद उसने जानयरों की रखवाली सुड़िया के मिर छोड़ी ओर रमोट की और नालीस मील का चनकर लगा आया पर निष्यल ।

उसके गाववानों और वारिमदारों ने समझाया कि जो औरत तेरे पर नहीं यमनी, उसके पीछे तू वयों परेणान है। हां, इस बात से सब सहमत थे कि कुण नी को जो रनते, यह हर्रासह का हर्जाना भरे, परन्तु मालूम तो हों कि बालेश्वर से कुणनी को कौन, कहा ले गया ? अगर अल्मोड़ा-रानी- ग्वेत की राह हल्द्वानी पार कर देण में उतर गई तो फिर क्या पता चलता है। यहर के बौहड़, गुंजानों में कहीं आदमी की गिनती हो सकती है या उसके ठौर-ठिकाने का पता लग मकता है? लेकिन हर्रीसह हाथ पर हाथ रख बैठने के लिए तैयार नहीं था। उसके बारिस निश्चंक थे कि उसके औलाद हो नहीं सकती, इमलिए उसे प्रसन्न करने के लिए कुणली का पता लगाने के लिए तैयार हो गए।

सवा वरस वीत चुका था कुशली को गए। पड़ोस के गांव 'सौवट' का ब्राह्मण कुपादत्त पिथौरागढ़ किसी गवाही में गया था। उसने लौटकर हरिसह को खबर दी कि मैं कटेरा गांव के पड़ोस से गुजर रहा था तो बाट में कुशली घास का बोझ लिए मिली थी। मैंने पूछा— "कैसे चली आई?" पहले चुप रह गई फिर आंखों में आंसू भर बोली—"जब तक वहां थी तो भली थी, अब आ गई तो आ ही गई। 'तुम्हारे लिए कहती थी—"आदमी तो बेनारा भला है परन्तु सब जानते हैं कि अंग-भंग है।"

मैंने कहा कि हर्रासह का हर्जाना तो मिलना चाहिए तो बोली—''जो

पूर्व माया है, वह हर्जाना घरेगा नया नही ? नहीं होगा, जभीन वेच कर भरेगा। अब मैं क्या करू ? " उसकी गोद में लडका भी है। उसके आदमी नानाम-ठिकानाम**व** पतासे आया है। अदालन में हरजाने का दाया कर रे। थौरत का अब क्या है, वहा वस गई। उस आदमी से उसका लक्ष्का भी है। अब उसे गनेरसिंह की ही औरत समझ पर तेरा हर्वाना तो मिलना पाहिए। तीन मौ कम भी तो नहीं होना।

हर्रामह ने सब बात ध्यान में सुनकर कहा - "वेलुवा महाराज ।"

फपल का मौका था इसलिए हरसिट चुप रहा। लोगो ने समझा, मन मार गया परन्तु हर्रासह माना नहीं या। उमने अवसर देखनर अपने गाव में तीन-चार बादमियों को लिया और मटेरा पहुचा।

गनैर्रामह ने कहा-"भाई में झनडा नहीं करता। सु अंग-मग है। भौग्त अपनी गुणी से मेरे साथ आई है। पचायत जो कहे, हर्वाना भरने **गो तैयार हं।"**

हर्गमह ने मिरहिलाकर कहा-"मैं हवार श्यम भी हर्वाना सने को

तैयार नहीं। में तो अपना लडका लेने आया हूं।"

"तेरा सहका ?" गनेरॉनह विस्मय से होठ और आये पैनाए रह रावा ।

आखिर पश्चायन बैठी । हर्रामह बच्चे को मांग रहा या।

पर्यों ने कहा-"बब्बा तुन्हें कैसे दिलाई । औरन के तेरे घर से जाने के बरम भर बाद लक्ष्या हुआ है। लहका नेरा कैसे होगा ? --- औरन सेरे माप याने नो सैयार नहीं। नोई भैस-वनरी तो है नहीं जो बाधवर भेज दें!

रैं। ह हर्जाने का हेकदार है।"

हर्रातह ने पना से न्याय माना - "पनो, जब तक मेरा हर्याना नहीं मिया, औरत मेरी रही। हर्जाना मियने वे बाद नहवा होता, को मेरा नहीं या ।"

पनो ने कहा -- "औरत तेरी थी, पर तेरे घर से तो नहीं थीं।" हर्गमह ने किर दुराई दी। उनने बमीन पर सबीर गरेंच कर कहा -- ंत्रको, न्याय व हो ! यह त्रकोल लक्षीर में इस पार मेरी और लकीर में उस पार मेरी-सीम को । मेरे खेत की सवाही को केन फैनकर मनेस्- ियह के छोत में बारों मई । बीनों पानी, नामही किमकी मानीमें ? ... जिसकी येत उसकी बावाडी ... जिसकी भीरत उसकी बच्चा ! हजींना देने में पहले को मंगरियह की डाटी मानते हो, तो बच्चा उसका ! में अपना स्टेका मृगा । सटके की मा आभी है, मेरे सिर-आसी पर आए; मही आती तो उसका मन ! में हजींने का एक पैसा मामूं तो मेरे लिए गाय का छून ! पंत्री, यह परमेरतर का न्याय है, नहीं तो अग्रेज बहादुर की अदालत है । पान स्थाय नहीं देंगे तो हरियह अंग्रेज की अदालत में जाएगा । मेरा पर-वार है, जमीन-जायदाय है, में लड़कों को बना महंगा ? ... मुक्ते पान की कोली कीन देगा ? ...

पंचों ने एक-दूसरे की ओर देसा और स्वीकार कर लिया कि जब औरत हरसिंह की थी तो सड़का भी हरसिंह का है।

गुगली एक और बैठी थी। पंची का फैसला मुना तो वच्चे को छाती से चिपटा कर चीप्त उठी —"मैं अपना बच्चा किसी को नहीं दंगी।"

हरमिंह के स्वर में कोध नहीं था, धमकी नहीं थी, पंचायत का न्याय जीत लेने का अभिमान भी नहीं था। मुलायम शब्दों में उसने कुशली को ममझाया—"अरी भागवान, तेरा बच्चा कीन छीनता है तुझसे? अपने घर चल। तू उस घर की मालकिन है!"

हरसिंह अपने एक बरस के उत्तराधिकारी को बड़े लाड़ और सन्तोप से गोद में उठाए दानपुर की ओर चला जा रहाँ था। कुशली उसके पीछे-पीछे चली आ रही थी, जैसे नई ब्याई गैया अपना बछड़ा उठाए खाले के पीछे चली जाती है।

तुमने यथों कहा था में सुन्दर हैं

"अच्छा हमारा एक फोटो बना दीजिए।" माया ने मकुचाने हुए वह बाला।

निगम की बहुन अच्छा लगा-- "बाहु, जलर।" उसने आस्वानन रिया । भाषा से इननी बात कहला सकते में नियम का लयभग है है भाग सा

समय और प्रयत्न लगा था। इस प्रयत्न का इतिहास बहुत रोचक न होने पर भी उसका महस्य है।

निगम और माया दोनों ही क्षय शेग की ऐसी आर्राज्यक अवस्था म थ, जब मायग्रानी, उपचार और पच्च से रोग का इनाज निश्चित रूप मे री महना था।

रोग हो जाने की आधाका की कारण दोनों के लिए अपग-असगे था। मारा को उसके पनि ने हमें से पीडिन, आयु से यहे हुए, विसी भी काम के लिए अमोग्य, सम्बन्ध से अपने बड़े भाई की गरशाय में इताब के लिए भेंबा था। इताब के निए दोनो एक ही जगह, मुक्तानों में थे। एक ही बनी का भाषा-आधा भाग लेकर रह रहे थे । इनाम एक ही शक्टर का और नगभग एक ही जैला या । क्षम का दोन जिल्ला भरकर है, इंपाय उपका उत्तर हो मीपा और

१३२ मेरी प्रिय कहानियां

सरल है। पूर्ण विश्राम, अच्छा भोजन और प्रसन्न रहना। डाक्टर साहव अपने रोगियों को स्पष्ट शब्दों में कहते रहते थे— "डाक्टर जादू से आपका इलाज नहीं कर सकता। इलाज आपके हाथ में है। डाक्टर केवल सुझाव देकर और दवा बताकर सहायता कर सकता है।"

इसी रपण्टवादिता के सिलसिले में डाक्टर साहव माया को सहानुभूति भरी डांट भी सुनाते रहते थे। डाक्टर हर सातवें दिन अपने मरीज
को तौलकर उनका वजन घटने-बढ़ने से उनके स्वास्थ्य में सुधार का
अनुमान करते रहने थे। माया के वजन में कभी तोला-भर भी बढ़ती न
पाकर और अपने नुस्खे असफल होते देखकर वे परेशानी में माया के
जेठ से पूछते—"क्या वात है ? "यह क्या खाती है ? कितना खाती
हैं ? "कभी घूमने जाती है या नहीं ? कभी हंसती-बोलती है ? "
वगैरह-वगैरह।

माया के जेठ मुन्शी जी दमे और वृद्धावस्था की दुर्बलता के कारण रेंगते से स्वर में सब वातों के लिए असन्तोगजनक उत्तर देकर अपने समझाने का कुछ असर न होने की शिकायत कर देते।

डाक्टर जिम्मेदारी के अधिकार से रोगी को डांटले—"क्या गुम-सुम वनीबैठी रहती हैं आप? इलाज नहीं कराना हैतो आगरा लौट जाइए! ... हमारी बदनामी कराने से आपका क्या फायदा? इन्हें देखिए!" डाक्टर साहब निगम की ओर संकेत करते, "पन्द्रह दिन में तीन पौण्ड बजन वढ़ गया। आप डेढ़ महीने से यों ही पड़ी हैं। ... अभी कुछ विगड़ा नहीं है लेकिन आपका यही ढंग रहा तो रोग बढ़ जाएगा...।"

लौटते समय डाक्टर साहव माया के जेठ, उनके पड़ोसी निगम और निगम की मां 'चाची' सबसे अपील कर जाते—"आप लोग इन्हें समझाइए ... कुछ खिलाइए-पिलाइए और हंसाइए!"

निगम साधारणतः स्वस्थ परिश्रमी और महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति है। वह चित्रकार है। पिछले वर्ष दिसम्बर में वह अमरीका में होने वाली एक प्रदर्शनी में भेजने के लिए कुछ चित्र वना रहा था। उसे इनफ्लूएंजा हो

सा। बोमारी में विद्याम न करने के कारण उसका बुखार टिक गया। महारो है परामर्थ से इलाज में जलवायु की महायता लेने के लिए वह भृति । स्ता गया। उसे तुरन्त ही लाभ हुआ। स्वस्य ही जाने पर वह देग और गृत्यु पर जीवन की विजय' का एक चित्र बनाना चाहता था। ि भावनाको वह अपने चारों ओर अनुभव कर रहा था। स्वाम्ध्य और र्रोत के प्रति माया के निरुत्साह से उसके मन में दर्द-मा होता था।

माया के गुम-सुस और खुप वहने पर भी निगम को 'चार्थी' से सह मन्त्रम हो गया था कि माया आगरे के एक समृद्ध कायस्थ वकील की तीमरी क्ली है। चौत्रीम-पच्चीस वर्षकी आयुमे भी उसकी गोद सूनी रहने पर भी बर कातूनन बकील साहब के पांच बक्चो की मा है। माया के विवाह में पहले वजीत साहब की पहली पत्नी दो लडकिया, एक लडका और इसरी पत्नी दो लडकियां छोडकर एक दूसरी के बाद क्षय रोग से चल देगी थीं। जब बकील माहब की आयु प्रायः छियालीस वर्ष की थी, उन्होने रिन्धी संमालने और अपना अकेलापन दूर करने के लिए माया को पत्नी हैं हप में स्वीकार कर सिया था। माया के बीस वर्ष की हो जाने तक भी देन के पिताको लडकी के लिए कोई अच्छावरन मिलाया। शासद वे < नील माहब की दूसरी पत्नी की मृत्यु की ही प्रनीक्षा कर रहे थे।

माया अपने जीवन का क्या अवितब्य समझ बैटी है, यह अनुमान न र सेना निगम के लिए कठिन न या। उसका मन सहानुमूनि से माया की श्रीर सुक गया । एक भरे यौवन का यो बरवाद हो जाना उमे अन्याय जान पह रहा या ।

माया के लिए 'भरे बौबन' शब्द का प्रयोग केवल महानुभूति से ही रग बिगड जाए और नेवल बाह्यावृति हो बची रहे !

१३२ मेरी प्रिय कहानियां

सरल है। पूर्ण विश्राम, अच्छा भोजन और प्रसन्न रहना । डाक्टर साहव अपने रोगियों को स्पष्ट शब्दों में कहते रहते थे—"डाक्टर जादू से आपका इलाज नहीं कर सकता। इलाज आपके हाथ में है। डाक्टर केवल सुझाव देकर और दवा वताकर सहायता कर सकता है।"

इसी रपण्टवादिता के सिलसिले में डाक्टर साहव माया को सहानुभूति भरी डांट भी सुनाते रहते थे। डाक्टर हर सातवें दिन अपने मरीज
को तीलकर उनका वजन घटने-वढ़ने से उनके स्वास्थ्य में सुधार का
अनुमान करते रहने थे। माया के वजन में कभी तोला-भर भी बढ़ती न
पाकर और अपने नुस्खे असफल होते देखकर वे परेशानी में माया के
जेट से पूछते—"क्या वात है? "यह क्या खाती है? कितना खाती
है? "कभी घूमने जाती है या नहीं? कभी हंसती-बोलती है?"
वगैरह-वगैरह।

माया के जेठ मुन्शी जी दमे और वृदावस्था की दुर्वलता के कारण रेंगते से स्वर में सब वालों के लिए असन्तोगजनक उत्तर देकर अपने समझाने का कुछ असर नहोने की शिकायत कर देते।

डाक्टर जिम्मेदारी के अधिकार से रोगी को डांटते—"क्या गुम-सुम वनीवैठी रहती हैं आप? इलाज नहीं कराना हैतो आगरा लौट जाइए ! ... हमारी वदनामी कराने से आपका क्या फायदा ? इन्हें देखिए ! अवस्टर साहव निगम की ओर संकेत करते, "पन्द्रह दिन में तीन पौण्ड वजन वढ़ गया। आप डेढ़ महीने से यों ही पड़ी हैं। ... अभी कुछ विगड़ा नहीं है लेकिन आपका यही ढंग रहा तो रोग वढ़ जाएगा…।"

लौटते समय डाक्टर साहव माया के जेठ, उनके पड़ोसी निगम और निगम की मां 'चाची' सबसे अपील कर जाते—"आप लोग इन्हें समझाइए : कुछ खिलाइए-पिलाइए और हंसाइए!"

निगम साधारणतः स्वस्थ परिश्रमी और महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति है। वह चित्रकार है। पिछले वर्ष दिसम्बर में वह अमरीका में होने वाली एक प्रदर्शनी में भेजने के लिए कुछ चित्र बना रहा था। उसे इनफ्लूएंजा हो भा । बीतारी में विश्वास न करते के कारण जसका बुखार टिक गया। तारमें के प्रायम ने इलाज में जलवायु की महायाजा लेने के लिए वह मार्ग क्लामा। उसे पुरत्त ही लाम हुआ। स्वस्य हो जाने पर यह मार्ग कीर मुद्द प्रजीवन की विश्वय का एक जिल बनाना माहता था। ती भनना की वह अपने चारों और अपन्नय कर नहा था। । जानास्थ्य में मैंतन के प्रति मारा के निस्ताह में जसके मन में दर्द-शा होना था।

माया अपने जीवन का क्या भवितव्य समार देही है, यह अनुमान कर नेता निगम के लिए कटिन न था। उसका थन सहानुभूति ने माया की किए कटिन न था। उसका थन सहानुभूति ने माया की पर दक्त था। एक भरे योजन का यों बरबाद हो जाता उत्ते अन्याय जान पर दक्त था।

माया के लिए 'मरे योवन' कच्य का प्रयोग केवल कहानुभूति से ही दिया जा मकता या। आयु चौरीक-पच्चीत को ही थो। करोर भी छरहरा बीर बांचा सुकीत था। करोते चेहरे पर नवक की या परम्नु आयुओं से नमीं से सील कर बहा जा रहा था। जोयों के नीचे और तालों से गई परे हुए से, जैसे दिशी अपो-सांसे वने विकाय पर सेवा पाली पर जाने से रूप दिवा आयु और नेवा वालाइनि ही निवा से स्व

ग दिन इ आए और नेवल बाह्या होते हा बची रहे

१३४ मेरी प्रिय कहानियां

निगम ने जिस नेकनीयती और मन की सफाई से माया की ओर आत्मीयता का आक्रमण किया था, उसकी उपेक्षा और विरोध दोनों ही सम्भव न थे। हाथ में ताश की गड्डी फरफराते हुए वह चाची से घर और चौंके का काम छुड़वा कर उन्हें जबर्दस्ती वरामदे में बुला लेता और फिर माया के जेठ को ललकारता 'आइए मुन्शी जी, दो-दो हाथ हो जाएं।' इसके साथ ही माया से भी खेल में शामिल होने का अनुरोध करता। विरादरी के नाते वह माया को निधड़क 'सक्सेना भाभी' कह कर सम्बोधन करता।

उस महिफल में त्रुप का ही खेल चलता। निगम बड़े जोश से 'वह मारा पापड़वाले को!' चिल्ला कर गलत पत्ता चल देता और फिर अपनी भूल पर विस्मय में सिर खुजाते हुए 'अरे!' पुकार कर सबको हंसा देता।

माया के रक्तहीन होंठ मुस्कराए विना न रह सकते।

निगम चुनौती देता-- "आप हंसती हैं ? अच्छा अवकी लीजिए !"

पांच-सात मिनिट में फिर कोई जवरदस्त दांव दिखाई पड़ जाता।
पुकार उठता—"यह देखिए खरा खेल फरक्कावादी" और फिर वैसी ही
भूल हो जाती।

ताश के खेल के अतिरिक्त निगम की आपवीती, हंसोड़ कहानियों का अक्षय भंडार भी माया को विस्मय से मुनने के लिए विवश कर देता था। माया की उदासी कुछ पल के लिए दूर हो जाती। वह कभी माया को कोई कहानी की पुस्तक, पित्रका या चुने हुए चित्रों का अलवम ही दिल वहलाने के लिए दे देता। निगम ने इन चित्रों को अपने व्यवसाय में उपयोग के लिए चुना था। उनमें अनेक देशी-विदेशी अर्धनग्न या नग्न चित्र भी थे। इनका उपयोग निगम अपने चित्रों में अंगों के अनुपात ठीक वना सकने के लिए करता था। माया को अलवम देते समय शिष्टाचार के विचार से ऐसे चित्र निकाल लेता था।

निगम की सहदयता के प्रभाव से माया की चुप्पी कुछ-कुछ हिलने लगी थी पर वैसे ही जैसे बहुत दिन से उपयोग में न अप्रे

XF9

वर्भा मोटी काई कभी बायू के झोंके से फट सो जाती है परन्तु तुरन्त ही मिल भी जाती है। माबापुस्तको या पत्रिकाओं की कितना पढती और स्पत्ततो थी, इस विषय की कभी कोई चर्चान होती थी। हा, जब निगम बगत के आगन से दिलाई देनेवाले दृष्यों के, भाषा के सामने जीने हुए फोटो माया को दिलाता, तो स्नुति की मुम्कराहट जरूर माया के होठी पर आ जानी और वह दो-चार शब्दों में फोटों की प्रशसा भी कर देती।

माया को उत्पाहित करने के लिए नियम कह देता—"आप भी सीख लीजिए न फोटो बनाना । · · वडा आमान है। कुछ करना थोड़े ही होता है। बम अच्छे दूरव के सामने कैमरा खोल देना और बन्द कर देना, तसबीर हो आपसे आप बन जाती है।"

"क्या करूगी ? · मुझे क्या करना है ?" माबा टाल देती। निगम उरे जीदन के प्रति उदास न होने की नभीहत देने सगता। उस वात से जान वनाने के लिए कोई दूमरी बान करने लगती, "यह मेरा मौकर बाबार जाता है तो वही मी रहता है। देखू जायद आ नया हो।"

ऐमें ही एक दिन निगम सामा को नये बनाए फोटो दिखा रहा था श्रीर समझा रहा था-- "आदमी कुछ करता रहता है तो उदामी नही थेरती।"

माया कह यैठी -- ''अच्छा हमारा एक फोटो बना दीनिए।'' "जनर !" निगम ने उत्साह से उत्तर दिया, "अब कहिए !" "बरे जब हो, चाह अभी बना दीजिए।"

अवसर की बात, उस समय निगम के पास फिल्म समाप्त हो चकी थी। फिल्म समाप्त हो जाने का कारण बताकर उसने विश्वास दिलाया कि किमी दिन वह खुद या जनका नौकर करमसिंह नैनीताल जाएगा तो फिल्म आ आएगी, बह सबसे पहले मामा ना फोटो बना देगा।

माया का फोटो बना देने की बात होने के चौथे या पाचने दिन परमितृ कुछ सामान लेने नैनीताल गया था। लगमग दिन ट्वने के समय शीटकर करमांसह सामान और जने हुए पैसे नियम की सहेज रहा था।

१३६ मेरी प्रिय कहानियां

माया ने आकर पूछ लिया—"भाई साहव, फिल्म मंगवा लिया है।"
'हां हां, क्यों नहीं!" फिल्म की वावत भूल जाने की वात निगम
स्वीकार न कर सका, 'क्यों, क्या फोटो अभी खिचवाइएगा?" उसने
उत्साह प्रकट किया।

"अभी बना दीजिए।" माया को भी एतराज न था।

"मुंशी जी को बुला लें ?" निगम ने सोचकर कहा।

"वे तो वाजार गए हैं देर में लौटेंगे!"

"आप भी तो कपड़े बदलेंगी, तब तक रोशनी कम हो जाएगी।" निगम ने दूसरा वहाना सोचा।

"कपड़ों से क्या है?" उपेक्षा से माया ने उत्तर दिया, "कपड़े बदल कर क्या करना है? ठीक तो हैं?"

कोई और वहाना सोचते हुए निगम कैमरे में फिल्म लगा लाने के लिए भीतर चला गया। फोटो के सामान की आलमारी के सामने खड़ा वह सोच रहा था, माया का मन रखने के लिए बोले हुए झूठ को कैसे निवाहे! उसकी उंगलियां उन चित्रों को पलट रही थीं जिन्हें उसने एलवम माया को देने से पहले निकाल लिया था। मन में एक बात कींदकर उसके होंठों पर मुस्कान आ गई। कैमरे में फिल्म की जगह पर समा सकने लायक एक फोटो उसने चुन लिया।

दो मिनट के वाद निगम कैमरे को तैयार हालत में लिए बाहर आया— ''लीजिए कैमरा तो तैयार है।'' उसने माया को सम्बोधन किया।

"अच्छा।" माया भी तैयार थी।

"साड़ी नहीं वदली आपने ?" निगम ने पूछा।

"ठीक है। क्या जरूरत है?"

"आप कहती हैं न, साड़ी की तसवीर थोड़े ही वनवानी है।" निगम मूस्कराया।

"हां, साड़ी से क्या होगा ? जैसी हूं वैसी ही रहूंगी।" "आपके बैठने के लिए कुर्सी लाऊं ?"

e:f 9

"न, ऐसे ही डीक है।"

"जैसे में बहूं बैठ जाइए ।"

"बन्हा।"

"बगमरे में सामने से रोजनी आ गही है। यहा कर्ण पर बैठ जाहए। ज्यों बाह में देक से सीजिए। "चार्यी बाह को सामने देगे रहने दीजिए। "पर्यत्र बग क्यों कीजिए।" हा, मिर उधर कर सीजिए जैंग खन गैंड में बोटो पर देव गढ़ी हो. "सां!"

माया निगम के निर्देशानुसार बैठ गई।

निगम ने बेनावनी दी-"अब आग्रामिनट विस्कुल हिलिएगा नहीं।" बहु स्वय दो गज परे फर्क पर उकडूं बैठकर कैमरे की माया की और तांध रहे था। कैमरे की काल लुक्त का और धन्द होने का 'टिब' गण्द हुआ।

'धैन्यू, धम हो गया ।" निगम ने हसकर कहा ।

"जाने कैमी बनेगी !" मावा फर्ज से उटती हुई बोसी।

"अभी मानूम हो जाएगा ।" निगम ने तटस्थता से उत्तर दिया । "अभी कैसे ?" माया ने निस्मय प्रकट किया, "एक-दो दिन सो लगने

है बनाने में।"

"हा ऐंगे कैमरे और फिल्म भी होते है।" नियम ने स्थीकार किया भीर बनाया, "यह दूसरी तरह का कैमरा है।"

"मह कैमा है ?" माथा का विश्मय बढा ।

"इम कैमरे से फोटो पाच मिनट में आप ही तैयार हो जाती है।" निगम ने समझाया और अपनी फलाई पर घडी की ओर देखकर घोला,

"अभी दो मिनट ही हुए हैं।"

मेप क्षीन मिनट माया जस्मुक्ता से प्रतीक्षा करती रही। दो मिनट और मुबर जाने पर नियम में टिटक्वर कहां—''आधा मिनट और टहर जाना अच्छा है। जहते करने ने क्यो-क्यो में होटो को हुवा तप जाती है।'' माया उत्मुक्ता से अध्यक्ष कंकरे की और देशकी रही।

निगम कैमरे को ऐसी बेबाकों से माया को आखो के सामने सांलने

लगा कि सन्देह का कोई अवसर न रहे। जैसे जादूगर दर्शकों के सामने झाड़कर दिखा देने के वाद लपेट लिए रूमाल में से अद्भुत वस्तु निकालते समय आहिस्ते-आहिस्ते, दिखा-दिखाकर तह खोलता है। कैंमरे का पिछला हिस्सा जुला। फोटो की सफेंद पीठ दिखाई दी। निगम ने फोटो को स्वयं देखे विना माया की ओर वड़ा दिया।

माया का हाथ उत्सुकता से फोटो की ओर बढ़ गया था; परन्तु फीटो आंखों के सामने आते ही उसके हाथ से गिर गई, आंखों झपक गई और शरीर में थोड़ा-बहुत जो भी रक्त था, पीले चेहरे पर खिच आया।

"क्यों ?" भोले स्वर में निगम ने विस्मय प्रकट किया।

"यह हमारा फोटो है ?" माया आंखें न उठा सकी परन्तु होंठों पर आई मुस्कान भी छिपी न रही ।

निगम ने आरोप का विरोध किया—"आपके सामने ही तो फोटो लेकर कैमरा खोला है।"

"इसमें हमारे कपड़े कहां हैं?" तिनक आंख उठाकर माया ने साहस किया। फोटो में माया की तरह छरहरे शरीर परन्तु बहुत सुन्दर अनुपात के अवयव की निरावरण युवती; दायीं बाह का सहारा लिए एक चट्टान पर वैठी, कहीं दूर देख रही थी।

"आपने ही तो कहा था।" निगम ने सफाई दी, "कि कपड़ों की फोटो थोड़े ही खिचवानी है।"

"ऐसा कहीं होता है ?" माया ने झेंप से अविश्वास प्रकट किया और उसका चेहरा गंभीर हो गया।

"ओहो !" निगम ने परेशानी प्रकट की, "आपने क्या एक्स-रे नहीं देखा कभी ! ऐसा भी कैमरा होता है जिसमें शरीर के भीतर की हड्डी और नमें आ जाती हैं।" अपना कैमरा दिखाकर वह कहता गया, "इस कैमरे से कपड़ों के भीतर से शरीर की फोटो आ जाती है। आप यदि पूरे कपड़ों समेत चाहती हैं तो मैं दूसरे कैमरे से वैसी ही फोटो खींच दूंगा।"

माया ने एक बार फिर फोटो को देखने का प्रयतन किया परन्तु देख

^{न स}री। उमका चेहरा गभीर हो गया। वह उठकर अपने कमरे में चली परें।

निष्य भी कैमरा और चित्र मधानकर अपने कमरे में चला आया। है है रेस बाद बह दिन्ता में सिर शुकाए पछनाने लगा, यह बया कर बैठा ? मात हंगेन की अपेशा चित्र गई। "नाराज हो गई। कही वाची से रिस्तान कर दे। "कियायन कर मकती है या नही ? रात में मीद आ जोने कर हो। "कियायन कर मकती है या नही ? रात में मीद आ जोने कर हो दिन्ताने की विशिष्ट विष् रहा और इस परेशानी की वास में सुधी दरा देर से आई।

माने दिन निगम का पर्यक्षाप्य और जिन्ता यह यह । मामा की गारको अब साफ ही थी । प्रात मुर्योदय के नमय माया कुछ शण के निए मात बती थी और निगम मे नमनकार और कुमन-कोम हो जाती थी । वे दिन माना दियाई नहीं थी । निगम बता चरतार और कमान से निमम रिग मा बहु केवत सपने को ही गमसा मकता था कि जानी नीयज सगब न थी। उसने केवल हमी की थी। हसी दूर तक चनी गई।

परवातार के कारण निगम स्थय भी बुप हो गया। उसकी पुणी बाबों में फिरी न रही। उन्होंने पूछा — "बी तो अच्छा है!"

नियम ने एक दिनाय में स्थान लग जाने का बहाना कर चार्चा को दोर दिया परन्तु बदासों न मिटा शका। यह किनाव पदने का बहाना दिए देंग बर्वे तक अपने कमरे में लेटा रहा।

क्सरे के बाहर के आबात आई -- "सुनिए ! "

साबाब पर्वातवर निगम नदय उठां—"आहए !"
मारा बरवाई से आ गई। बनाय की हुई मुख बहीन घोती से ने पीठ
पर्वेते गीमें नेगा हात्तव को ये। मण्डामी कामो की सुवकान हिमाने
हुए बोरी—"माई माराब कुमारा कोटो दे देशिया।"

नियम के भाव से प्रण्यातात और पुरिचलता होने प्रवर्ग जैसे पूरा मारते से आर्जि पर परी धूप नाज हो काफी है :

"बार बाला ?" केंगे बाद बबने की बेच्टा बबने हुए एमने दुला ।

१४० मेरी प्रिय कहानियां

"हां।" माया ने हामी भरी।

"वह तो हमने अपने पास रखने के लिए वनाया है।" निगम ने गंभीरता से विचार प्रकट किया।

"वाह तस्वीर तो हमारी है ?" माया ने अधिकार प्रकट किया।

"आपकी है ? कल आप कह रही थीं कि तस्वीर आपकी नहीं है।"

"दीजिए! आपने ही तो खोंची है।" माया ने आग्रह किया। उसकी आंखों में चमक थी और स्वर में कुछ मचल।

"अच्छा ले लीजिए!" निगम ने पराजय स्वीकार कर ली और तस्वीर मेज पर से उठाकर माया की ओर बढ़ा दी। माया ने दो-तीन सेकण्ड तक तस्वीर को तिरछी निगाहों से देखा और फिर लजाकर विरोध किया—"हमारी नहीं है तस्वीर?"

"अभी आप मान रही थीं।" निगम ने उलझन प्रकट की, "क्यों?"

"यह तो बहुत अच्छी है। हम ऐसी कहां हैं?" माया की आंखें झुक गईं और चेहरे पर लाली बढ़ गई।

माया के नये घुले केशों से सुगन्धित साबुनसे सद्य-स्नान की सुवास आ रही थी । अपने रक्त में झनझनाहट अनुभव करके भी निगम ने कह दिया—"हैं तो ! •••नहीं तो तसवीर कैसे सुन्दर होती ?"

"सच कहते हैं ?" माया ने निगम की आंखों में सचाई भांपने के लिए देखा।

"हां, वित्कुल सच।" निगम को माया की लज्जा और पुलक से अद्भुत रस मिल रहा था।

माया फिर फोटो की ओर देखती रही—"इसे फाड़ दीजिए!" आंखें चुराए उसने कहा!

"मैं तो इसे सम्भाल कर रखूंगा ?" निगम ने उत्तर दिया, "लखनक जाने पर याद आने पर इसे देखूंगा।"

माया ने निगम की आंखों में देखना चाहा पर देख न सकी। फोर्टी उसने ले लिया—"आपको फिर दे दूंगी।" फोटो को हाथ में और हाय की घोती में छिपाए वह अपने कमरे में चली गई।

मारा के चले जाने पर निगम फिर लेट गया और सोधने लगा— प्रच्यान पिनट में बान कहां में कहा पहुंच गई—जीवन का बिल्कुल दुरा दूष्य उमको आखो के मामने आ गया।

यह तक निगम और माया में जो जाउ होंगी, सभी के सामने और खुब के स्वर में होनी थी; पन्नु अब अकेते में करने लावक बात भी हो गई। अध्यामाल और विशेष में ही जो मुख होता है। जिसे पाने में कटिनाई हो, नहीं पाने की रुखा होनी है। अकेते में और दूसरों के कान की पहुस परे होंने पर निगम कह बैटना—"बहु तस्वीर अपने लीटाई नहीं ?"

"हमारी तस्त्रीर है, हम क्यों दें ? पर अच्छी थोडे ही है!" माया होड विषका देती।

"हम तो अच्छी लगती है।"

"आप तो यों ही वहते हैं।"

"अच्छा, किसी और को दिखाकर पूछ लो।"

यत्।"

"वयो ?"

"गरम मही आती, ऐसी तस्वीर ? बड़े वैसे हैं।" माया प्यार का कीध दिखाती।

निपम की नस-नम में बिजती दौड जाती। उमें मामा के स्पर्हार में पिएनंत दिलाई दे रहा था। अब नाया की आर्खे दूनरो आजी से बक्दर निपम की दूजती अवनर ने सेवाल के लिए एक मुस्ती-वी जनने आ गई भी। यह पर्नितंत केवल निपम को ही नहीं, चाची, मुशीजी को भी दिलाई दे रहा था और इस जिंदनोंन का अकाद्य अमान था डाक्टर साहब का गरीसों की तोजने बाता चरायू। तथायुने पहले नच्याह माण के बतन में आप्ता भीष्ट की बन्धी दिलाई और दूनरे सच्चाह में एक पोणा। अब माया चाची के साम निपम के माम होने हुए भे पूछ दूर पूनते जाने नागी। मुमे समन, तथा किनने हुए अपना बनाम दे में पहल-कर्या को माम

निगम से एक बात कर सकने और आंखें चार कर सकने के अवसर की खोज के लिए माया के मस्तिष्क और शरीर में सदा रहस्य और तत्परता बनी रहती।

जुलाई का तीसरा सप्ताह आगया था। भुवाली निरन्तर वर्षा सेभीगी रहती थी। बादल, कोहरा और धुन्ध घरों में घुस आते थे। सीलन और सर्दी से चाची जोड़ों में दर्द की शिकायत करने लगी थीं। मुन्शी जी को भी दमे के दौरे अधिक आने लगे थे। बहुत-से बीमार वर्षा से घवराकर घर चले गए थे। माया और निगम को स्वास्थ्य में सुधार जान पड़ रहा था। निगम और माया के बंगले से प्राय: सौ गज ऊपर का बड़ा पीला बंगला और वायीं ओर के बंगले खाली हो गए।

डाक्टर की राय थी कि निगम अभी लखनऊ की गरमी में न जाए तो अच्छा ही है और माया को तो अभी रहना ही चाहिए था। उसकी अवस्था तो अभी सुधरने ही लगी थी।

आकाश में घटाटोप वादल वने रहने पर भी माया की आंखों में और चेहरे पर उत्साह के कारण स्वास्थ्य की किरणें फैली रहतीं। माया की आंखों का साहस वढ़ता जा रहा था। जव-तब निगम से 'आंखें चार' हो जातीं। वह भी उनकी सुखद ऊज्णता का अनुभव किए विना न रहता। शरीर में एक वेग और शक्ति का सुखद अनुभव होता। अपने अस्तित्व और शक्ति के लिए माया का निमंत्रण पाकर उसे ग्रहण करने, माया को पा लेने की अदमनीय इच्छा होती।

निगम को माया से शायद रोग की छूत लग जाने की आशंका थी। अपने को यों रोके रहने में भी संतोष था। जैसे तेज दौड़ने के लिए उतावलें घोड़े की रास खींचकर रोके रहने में शक्ति, सुख और गर्व अनुभव होता है। निगम और माया दोनों जीवन की शक्ति के उफान की अनुभूति से उत्साहित रहने लगे थे।

वर्षा के कारण घूमने का अवसर कम हो गया था। निगम शरीर को कुछ स्फूर्ति देने के लिए छाता लेकर वाजार तक हो आता। माया उसकी

र्था ने मुस्तराकर उसाहना देती—"आप तो अकेले ही घूम आते है।

) (कता पूपना ही बन्द हो गया है। चाची कही जा नहीं पाती।"

तिन्दर गानी बरतना रहा। माया ने चाहा कि ताल की बैठन जमे रानु पूर्ण जी के देवे के दीरे और 'चाची' के दर्द के कारण जम न पाई। का ने र्देशार दमाप्द के पक्कर तलाए। वहा न यदा ती निगम के कारे के दरावाद पर जाकर प्कारा—"वृत्तिए।"

निगम ने स्वागन से मुस्कराकर कहा--"आइए।"

मुगनाहर के स्वर में माया ने मिनायनको — "नया करे भाई माहव ! भेई निनाय ही दे दीजिए : बैठे-बैठे दिन मही नटता है।"

निगम ने पूछा-"कैसी पुम्नक चाहिए ? तस्वीरी वाली !"

"यत्, यह वैसे हैं आप!" निगम ने पत्रिका उठाकर दे दी। उठी स्वार्श को देवाकर निगम की आखों से मुस्करनी हुई माया पत्रिका निरु सौट गई।

माया हुए देर बाद पविका लीटान आई।

"पड़ने में जी नहीं लगना भाई साहव (" मुन्दरादर उनने निगम की भोगों में देगा और फिर आंग्रें ब्यूबाएं और बयून गहरे दवे स्वर म बोगी, "करों पुमने नहीं चनने ?"

"पनी, वहां बलें ?" निगम ने बैंगे ही स्वर में योग दिया।

"वहीं चरें; आर का बीता बगला तो अब बाती है।" मामा के पहें पर मुखीं दोड़ गई, आप तीचे नवत से धुमकर चने माहण्।"

नियम के संगीर को उक्त किसती का लग्न हु आने में शीप उठा। पिछा हुई मसीय स्वरी आसा को आगे में में में परन्तु करान और औडियर को भी बराप आ गया। बक्त डिज्ज गया। बोचा—"अका ?" संगीर एक मेरे की के मेराच का अनुभर कर पहा था।

बादन विरेट्टुए से 8 नियम ने प्रपर्ध हान में ने मी और गरोर्ड से बेटी चान्नी को पुत्रप्रकर कह दिया---" जग नाजार तक मून आज ?"

निगम अपने बंदारे से नहक पर प्राप्त गया और यूमबार क्यार के रोते

वंगले की ओर चढ़ गया। वंगले के अहाते में वरसात से अघाई लिली के फूल खूव खिले हुए थे। इससे कुछ दिन पहले वंगले में किरायेदारों के रहते समय निगम, चाची और माया शाम को कुछ दूर घूमने जाकर लौटते समय इस ओर से होकर जा चुके थे। पड़ोसियों के स्वास्थ्य के लिए शुभकामना करके निगम यहां से फूल भी ले जाता था।

वंगला सूना था। वंगले के पिछवाड़े, जरा नीचे माली और नौकरों के लिए वनी छोटी-छोटी झोपड़ियों से घुआं उठ रहा था। माली संघ्या का खाना बना रहा होगा। चढ़ाई चढ़ते समय दम फूल जाने के कारण सांस लेने के लिए खड़े होकर निगम ने घूमकर पीछे की ओर देखा कि माया आती होगी। मायाके साहस भरे प्रस्ताव से उसका रोम-रोम सिहर रहा था।

पगडंडी पर कुछ दिलाई न दिया। भीगी घास पर वादल का एक दुकड़ा मचलकर बैठ गया था और नीचे कुछ दिलाई न दे रहा था। वरामदे में कुछ आहट-सी पाकर निगम ने देला, माया सामने के बड़े कमरे के दरवाज़े में उससे पहले ही से खड़ी मुस्करा रही थी। माया ने वांह उठाकर उसे आ जाने का संकेत किया। वह आगे वढ़कर कमरे में चला गया।

एकान्त में माया के इतने निकट होने से उसका रक्त तेज हो गया और चेहरे पर चिनचिनाहट अनुभव होने लगी। माया का सीना भी, चढ़ाई पर तेजी से आने के कारण अभी तक लम्बे श्वासों से ऊपर-नीचे हो रहा था। उसके चेहरे पर ऐसी सुर्खी और सलोनापन था कि निगम देखता रह गया।

आकाश में घने वादल और घुन्ध-से छाये रहने के कारण किवाड़ों और खिड़कियों के शीशों से केवल इतना प्रकाश आ रहा था कि शरीर की आकृति भर दिखाई दे सकती थी।

किरायेदारों के चले जाने के बाद सफेद निवाड़ से बुना खाली पलंग अंधेरे में उजला दिखाई दे रहा था और वार्निश की हुई कुसियां छाया जैसी लग रही थीं।

माया ने किवाड़ बन्द कर दिए। निगम ने एक घवराहट-सी अनुभव की; जैसे उत्साह में किसी खंदक को मामूली समझ कर कूद जाने के लिए

र्दारहो आए पर समीप आकर खंदक की चीडाई से मन दहल जाए ! िन उनके दिलकुल समीप बा गई थी।

राया नेहाफने हुए पूछा-- "हमारा फोटो अच्छा था ? सच कहिए ?" के रह जैसे च्याई की शकान से खडी न रह सकने के कारण धम से पसंग १र हैं 3 यह । अधेरे में भी निगम को उसकी आतों में चमक और चेहरे की

महरूर्य युस्कान विना देखे हो दिखाई दे रही थी। निगम का हृदय छक्-धक् कर रहा था। गले में उठ आए आवेग की निरक्तर और ममझने के निए उसने उत्तर दिया—"है तो

"मूट ! अब देखिए ! " पाव पलग पर समेटनं हुए और पलंग के बीच कारकर माया ने हाफले हुए रुघे स्वर में आग्रह किया। उसकी साडी का

ए डॉरक छेसे समाम पर गिर गयाथा। अपने हाथ में सिया वह फोटो राग पर, निगम के नामने डालते हुए उसने आग्रह किया— "ऐसा वहा है ! वह देखा आपने ?"

नियम के सिर में एक के हमीड़ें की चोटें-मी अनुभव हो रही थी। राके गरीर के सब स्ताय तन गए—'वया हो रहा है ? शरम ! · · बीमार

"यहा आओ 👫 ब्याकुलना से सवलकर साथा ने निगम की पुकारा । माना अपनी कुर्ती को लोल देने के लिए लीच रही की। काओं में पाने बटन निवे जा रहे के और उसके स्तन कोच उठाए नीतको की नरह नुनी को पाह देना बाहत 🖹 ।

बहुर बोर से दिए गए धरते ने वित्य पान जमाने ना प्रयान ना निगम ने बारे महर में उत्तर दिया — 'पागन हो " -- होश बारे। "

मादा का केरवा समत्या प्रशास मादा सम्बाध मिक्क हो है। रियमी हुई आखें पचना नई और सदेन कोछ से तन नई । इहाम और भी िया और नेप हो गया । आधा क्षेत्र व्यक्त बहुबब बीध से निरम की घर-

हर कड़े रहर में कवार प्रती-"मी मुझने बर्दी कहा दा में संदर्भ हूं है"... पह प्राचन को लगाने दिना हाया। दे बार्च यह करते हो हाई । पाने

हाथों की मुद्रियां वांधे आंसुओं से डवडवाई आंखों में चिनगारियां भरकर उसने होंठ चवाकर धमकाया—"जाओ ! जाओ ! हट जाओ !"

निगम के पांव तले से धरती निकल गई। एक कंपकंपी-सी आ गई। अवाक् रह गया।

माया फिर पलंग पर गिर पड़ी। वह अपना सिर वांहों में छिपाकर औंधे मुंह लेट गई। उसकी पीठ बहुत जोर की रुलाई से हिल रही थी।

निगम एक क्षण उसकी ओर देखता खड़ा रहा और फिर किवाड़ खोल-कर तेज कदमों से चला गया।

निगम अगले दिन चाची के जोड़ों के दर्द की चिन्ता से लखनऊ लौट गया।

माया का ज्वर फिर बढ़ने लगा। डाक्टर ने सप्ताह-भर उसके स्वास्थ्य में सुधार हो सकने की प्रतीक्षा की। ज्वर नहीं रुका।

डाक्टर ने राय दी — "वरसात की सर्दी और सील आपको माफिक नहीं वैठ रही। दो महीने का मौसम ठीक नहीं। आप आगरा लीट जाइए। सितम्बर के मध्य में लौट सकें तो लाभ हो सकता है…।"

फिर माया के विषय में कोई समाचार नहीं मिला।

भी बन्हेंगालाल के परिवार में घटी घर्मयुद्ध की घटना कहते से पहले हैं है भिना की आवस्यकता है ताकि गलतफहमी का अवसर न रहें।

र नरीत और राज्यान से ही लोगा था। सारवार काहे बारवी से राज्या है। रिन्दानमी से या परिन्यानी से, जैसे दि व्यक्ति अवसीन अपनी सम्मी से बाहुद ही मानू से सा व्यक्ति के समाज से हरह ही बाला था। जैसा दि स्मित्र विराज्या है। सामाजिक से स्थान में स्थान था। इसके संस्थित को सामाजिक सामाजिक से सामाजिक से स्थान हो।

मोर्च दिकाम्य पहुने भर्दाः सम्बद्धाः गोर्वे ही गोर्वे हैं, होते ही है, साम्यु निकाम्य होने के बाह्या मोर्च करते वे सम्बद्धान में पिन् निका करित का प्रियोद माने में हैं है। बाल्योने हैं दिया निल्या कर्मित के स्वाद और हार्य में चिन् मार्च आ समर्थ करने भी हिंदीय का लग्न करनार्जन से सामान्य

पड़ गया। सत्याग्रह को ही हम वास्तव में धर्मयुद्ध कह सकते हैं क्योंकि युद्ध या संघर्ष की इस विधि में मनुष्य पाशविक वल से नहीं विलक आत्म-विल्वान से या धर्म-वल से ही न्याय में की प्रतिष्ठा का यत्न करता है। श्री कन्हैयालाल के पारिवारिक क्षेत्र में विचारों का संघर्ष धर्मयुद्ध की विधि से ही हुआ था।

श्री कन्हैयालाल का परिचय आवश्यक है। यों तो कन्हैयालाल की स्थिति हमारे दफ्तर के सौ-सवा सौ रुपये माहवार पानेवाले दूसरे बाबुओं के समान ही थी परन्तु उनके व्यवहार में दूसरे सामान्य बाबुओं से भिन्नता थी। सौ-सवा सौ रुपये का मामूली आर्थिक आधार होने पर भी उनके व्यवहार में एक वड्ष्पन और उदारता थी जैसी ऊंचे स्तर के बड़े बाबू लोगों में होती है। वे दस्तखत करते थे 'के लाल' और हाथ मिलाते तो जरा कलाई को झटककर। होंठों पर मुस्कराहट आ जाती—हाओ इ यू इ! (कहिए क्या हाल है ?) पूछ लेते — व्हाट कैन आई इ फार यू ? (आपके लिए मैं क्या कर सकता है?)

दपतर के कुछ तुनकिमिजाज लोग के ब्लाल के 'ब्हाट कैन आई इ फॉर यू' (आपके लिए मैं क्या कर सकता हूं) के प्रश्न पर अपना अपमान भी समझ बैठते और कुछ उनकी इस उदारता का मज़ाक उड़ाकर उन्हें 'बॉस' (मालिक) पुकारने लगे थे, लेकिन के बाल के ब्यवहार में दूसरों का अपमान करने की भावना नहीं थी। दूसरे को क्षुद्र बनाए विना ही वे स्वयं बड़प्पन अनुभव करना चाहते थे। इसके लिए हमसे और हमारे पड़ोसी दीना बाबू से कभी किसी प्रतिदान की आशान होने पर भी उन्होंने कितनी ही बार हमें कॉफी-हाउस में कॉफी पिलाई और घर पर भी चाय और शरवत से सत्कार किया। लाल की इस सब उदारता का मूल्य हम इतना ही देते थे कि उन्हें अपने से अधिक बड़ा आदमी और अमीर स्वीकार करते रहते। दफ्तर के चपरासी लाल का आदर लगभग बड़े साहब के समान ही करते थे। लाल के आने पर उनकी साइकिल थाम लेते और छुट्टी के समय साइकिल को झाड़-पोंछकर आगे बढ़ा देने। कारण यह कि लाल कभी पान

ति जियरेट का पैकेट संगाति तो कभी-कभार रुपये में से शेप बचे दाम करानी को वस्त्रीक में दे देने।

हम सीन दणनर में तीन-चार वरम से काम कर रहे थे; पबहुतर सिंप रह साम बारम करके सवा सी तह पहुंचे थे। यसर की साधारण मिनान तरला के अविरिचत कोई मुनहुरा भविष्य धामने नहीं था। ऐसी बाता भी नहें भी कि हमें कभी असिस्टेस्ट या मैंनेनर वन जाना है वन्तु के सात सीम हो कि सी हो कि सीम हो की साधा में थे। तीन-बार माम हिं के नि की वहे आहमी थें। विकाश की आधा में थे। तीन-बार माम हिं के नि की वहे आहमी थें। विकाश की समान सीम सीम तिम हो के सात मी वो निकाश की कर पन माम असिस्ट माम है के नि की वहे आहमी की लिकाश की कर पन समान आहमी में है विकाश की कार है हो असमर कह देते— "शाह पाए पिण्डले" से दणतर दें वह तार मी हा आंकर है, अभी सीच रहे हैं" या "मैंकी एष्ट दिनम्" उन्हें तीन-मी सनलाह और विकी एस्ट दें निकाश की स्वरूप है सिकाश सीच रही हैं"।"

हमारे सम्मर में जाहे सोहे की सलावों और वहरों के आंधर कुर रंगे का काम दिवा गया था। इस हुन्दों के कारण उन्हें सम्मर करना रे समस्य रंगा वाल के का रहती, यूमने फिरके का समस्य मिलना रहना और से अपने-लेक्षा गामारण बानुओं से जिल्ल समझने थे। इस काम में कामनी को गोई विषय सफरता उनके आने में नहीं हुई थी। इसलिए सीम ही काई रुक्तकों या नाने की लास की आमा हुंव बहुत सामस्य नहीं जान पह एदी भी परनु माल को अपने उठज्यत भीवव्य पर अधिम विश्वास था। अव रुके स्व से साम हिल्ला की विचार के कारण उनके मारे पर क्यों से दें सर्व से साम है हुए करने थान, महत्वत और मिलरेट आंकर (महुन) करने में कोई इचचना देगी गई। उन्हें क्योंनियों द्वारा बनाए अपनी हुन्तरेश के एस पर दूर विश्वस था।

को मैदानो को ओर भागना पडता है तो टुक्के-टुक्के निकारियों को भी बन आती है बैसे हो पिछने युद्ध के समय धोटे-खोटे क्यारारियों को भी बन

आई थी। महान राष्ट्रों को परस्पर संहार के लिए सभी पदार्थों की अपिर-मित आवश्यकता हो गई थी। सर्व-साधारण जनता तो अभाव से मर रही थी परन्तु व्यापारी समाज की वन आई। युद्ध के समय हमारी मिल को ग्राहक और एजेण्ट ढूंढ़ने नहीं पड़ रहे थे विल्क ग्राहक और एजेण्टों से पीछा छुड़ाना पड़ रहा था। लाल का काम सहल हो गया था। उनका काम था मिल के लोहे का कोटा वांटना और मिल के लिए लाभ की प्रतिशत-दर बढ़ाना।

के० लाल के वेतन में कोई अन्तर नहीं आया था परन्तु अब वे साइ-किलपर पांव चलाते दफ्तर आने के बजाय टांगे या रिक्शा पर आते दिखाई देते। टांगेवाले की ओर रुपया फेंककर, वाकी रेजगारी के लिए नहीं विल्क उसके सलाम का जवाब देने के लिए ही उसकी ओर देखते थे। कई बार उनके मुख से सेकेण्ड हैण्ड 'शेवरले' या 'वाक्सहाल' गाड़ी का ट्रायल लेने जाने की बात भी सुनाई दी। अब वे चार-चार, पांच-पांच आदिमयों को कॉफी-हाउस ले जाने लगे थे और उन्मुक्त उदारता से पूछते—ह्वाट बुड यू लाइक टु हैव ?'' (क्या पसन्द कीजिएगा ?)

अपने घर पर भी अब वे अधिक लोगों को निमन्त्रण देने लगे। अब उनके घर जाने पर हर बार कोई न कोई नई चीज दिखाई दे जाती। कमरे का आकार बढ़ नहीं सकता था इसलिए वह फर्नी चर और सामान से अटा जा रहा था। जगह न रहने पर पुरानी कुर्सियां सोफाओं के पीछे रख दी गई थीं और टी-टेबलें, कार्नर-टेबलें और पैग-टेबलें मेजों और सोफाओं के नीचे खिसका दी गई थीं। मेहमानों के सत्कार में भी अब केवल चायदानी या शरवत का जग ही सामने नहीं आता था। के० लाल तराशेहुए विल्लार का डिकेण्टर उपेक्षा से उठाकर आग्रह करते—"हैंव ए डैश आफ व्हिस्की?" (एक दौर व्हिस्की का हो जाए!)

धन्यवाद सिंहत नकारात्मक उत्तर दे देने पर भी वे अपनी उदारता को समेट लेने के लिए तैयार न होते; आग्रह करते—"तो रम लो ?… अच्छा, गिमलेट ?" दृर है दिनों मे कुछ समय बैकाइमों (W. A. C. A. I.) की भी गृह बाँ थे। मर्च-गाधारण मोग बाबार मे जवान, चुस्त, वेसिसक प्रितिसे है दनों को देशकर हैरान थे जीन मील-गायों का कोई दल नगर में नेता बार सावा हो। बाल्य रारानेवामे ना प्रायः इनकी गृगति का गृह कर शोर सनुषक करने थे। ऐसी तीन-बार हुंगमुख्या के ० लाल गृह को महाक में भी सोचा बढ़ानी थी।

रें • मान के माना-रिना जरेशायुक करिवादी है। आचार-व्यवहार रेनारण ये उनशे प्रारमाए वर्ष, मार और पुण्य के बिचारी से बंधी है। कोर एसान पुत्र में मानारिक ममुक्ति में उन्हें मानोव और गीरक अनुसन्त रेना चायान्युक प्रत्यो आचार-मान्याधी उपस्कृतना से अपना धर्म और रागोर दिशर जाने में भी के उदेशा में कर मनते थे। एक दिन माना-रागोर दिशर जाने में भी के उदेशा में कर मनते थे। एक दिन माना-राग और पुत्र में आचार-मान्याधी धारणाओं में परस्पर-विरोध के बारण प्रदेश दशन था।

दें नाम में अपने अन्यता पित्र विश्व भी पूर्व मोद सेवाई में नाम कारी-वारी उनते पानी मध्य इनकी मानी। की दिनद और कोवडेन (भीजन भीग सिंदम) के नित्त निर्मालिक विद्या बात दन प्रमाद की पादिसी होती ची मो इस सारकारी में कि अपन की मतिन में रागीई-मोरे के बाम में मान उनकी मा और तकड़दी के तीर में कर्बर मार पर की उनमें दिगा में पार्टी की वारकोण और साम-मान के दन का आधान में हो पाता मां। चारी के बच्चे में मानी तक नावस्थ मीकड़ या चीमानी नाम हारा ही रागा या। भीकों सम्म सम्मानपुष्ट की स्वांत्र मिल्य मो बोस्सा आपें स्वांत्र के सामेच को ही बच्चा पार्च सामानी भी काम के स्वांत्र महाना की अपना चीन की प्रमान स्वांत्र मिल्य की विद्या स्वांत्र में

प्रत करणा प्रत्य क्षेत्र को संदेश संदेश मा प्रदार अपन अपन प्रत्य है जिल्ला क्षेत्र में काल को देश हैं जिल्ला के प्रतिकार के अपन कर की काल के स्वाप के प्रतिकार के अपन के अपन के अपन के अपन काल को अपन के अपन

एक सप्ताह के लिए भाई के यहां ठहरी हुई थी। विहन और वहनोई को मेहमानों से मिलने से रोके रहना सम्भव न था। इसमें आशंका भी थी क्योंकि विद्या को उस कम उम्र में भी धार्मिकता का गर्व अपनी मां से कुछ कम न था।

लाल ने दांत से नाखून खोटते हुए सलाह दी---"तुम विद्या को समझा दो।"

"यह मेरे वस का नहीं "।" श्रीमती लाल ने दोनों हाथ उठाकर दुहाई दी--"तुम्हीं आनन्द को समझा दो; वही विद्या को संभाल सकता है।"

लाल ने आनन्द को एक ओर ले जाकर उसके हाथ अपने हाथ में थाम विश्वास और भरोसे के स्वर में समझाया—''आज मेहमान आ रहे हैं; मेहमानों के लिए तो करना ही पड़ता है! तुम तो साथ ही होगे! ' अगर विद्या को एतराज हो तो कुछ समय के लिए टाल देना। या उसे समझा दो! ' ' तुम जैसा समझो! विद्या को पहले से समझा देना ठीक होगा। उसे शायद यह वात विचित्र जान पड़े। माताजी के विचार और व्यवहार तुम जानते ही हो। विद्या जाकर माताजी से न कुछ कह दे!" लाल ने मुस्कराकर अपना पूर्ण विश्वास और भरोसा प्रकट करने के लिए वहनोई के हाथ जरा और जोर से दवा दिए।

आनन्द ने विद्या को एक ओर बुलाकर समझाया—""आजकल के जमाने में यह सब होता ही है। भैया की मजबूरी है " तुम जानती हों, मैं तो कभी पीता नहीं। हमारी वजह से इन लोगों के मेहमानों को क्यों परेशानी हों? तुम इतना ध्यान रखना कि माताजी को नीचे न आना पड़े।" विद्या ने सुना और मानसिक आधात से चुप रह गई।

मिस्टर माथुर, मिसेज माथुर अपनी साली के साथ जरा विलम्ब से पहुंचे थे। पार्टी जुरू हो गई थी। पहला पेग चल रहा था। हंसी-मजाक की दवी-दवी आवार्जे ऊपर की मंजिल में पहुंच रही थीं। आनन्द कुछ देर नीचे वैठता और फिर ऊपर जाकर देख आता कि सब ठीक है।

विद्या ने पूछा-"नीचें क्या हो रहा है ?"

नरोते में आनन्द ने जो हो रहाया बता दिया और फिर नीर्चका रेगो-स्वाद कारस सेते लगा।

सामी जानती थीं कि हमी-अडाक और शण्यवादी में लगे मेहमान गैल सभी राज से पहले बाला नहीं बाएगे, हमलिए उन्होंने वह को पुकार, र देशानी दे दी-"यहाँ रात-अर बुल्हे के शाम बैठना मेरे बत का नेरी। मेहमान जब साए, तम जिला देना।"

रनोई से निकसने से यहते आजी ने बेटी की पुकारा-"नुम सी ना नो, या आनन्य की बाह देखनीय होगी ?"

"जाप सोग साहर, युद्धे नहीं साना है !" विद्या वा अनुन्यार ध्यनिन देनर मुनाई दिया । वेटी के स्वर से स्नाई वा आभाग पावर मोत्री ने बेमरा में पुकारा--"सुन सो, यहां सो आ ! -- बान बया है ?"

री-दीन बार पुकारी जाने पर विद्या मृह सदकाए मांत्री के सामने

पहुँची भीर समीप बैठ चुहतो से लिए दिया थे। वहीं ।

मानी ने बार-बार बिहुल श्वर से बेटी के रोने का कारण पूछा। विद्या पूट-पूटकर रोई और तब बताया—"हाव. मैं कहा आ मर्छ। मूरी मेलूम होना कि अब यह होना है तो मैं हारे सेकर करों मानी।"

मां भी से मेटी के सिर पर हाथ एक कमन देवर पूछा—"बॉलगी क्यों नहीं ''क्या बात है, बॉल न ²⁴'

विद्या ने बिहुत्सना से श्लेन्सेवर बनाया — "वर्गाठ नया; कृतरह ही भौगेरी ''एएट्रे सीचे बँडावर चराव रिला गरे हैं। आने बीन को नाहें आई दिं हैं ? ---भौगा बड़े काइसी है, जाटे जी वर्गा। मैं तो वर्गा वी क्राइसी है,

रेन्ट्रे ऐसी सन सम गई तो सुसदर क्या बीकेटी है "

लिए उत्तेजना में घुटनों से भी ऊपर उठाए वे नीचे की मंजिल में आ पहुंचीं। धक्का देकर उन्होंने वैठक के किवाड़ खोल दिए।

विजली के प्रकाश में उन्होंने जो कुछ देखा उससे वे कोध में वदहवास हो गई। जैसे अपनी सन्तान को जेर के मुंह में जाते देख गैया कोध और दुस्साहस में अपने सामर्थ्य के औचित्य की चिन्ता न कर शेर के मुंह में अपने निर्वल सींग अडा दे।

वैठक की महिफल अपने हंसी-मजाक के ठहाकों में मांजी के जीना जतरने की आहट न पा सकी थी । के० लाल रंग में आकर माथुर की साली को पेग खत्म करने में सहायता देने के लिए उसका गिलास उठाकर उसके मुख से लगाए थे। मिसेज माथुर लाल को सन्तुष्ट करने के लिए मुस्कराती हुई अपने गिलास में वोतल से नया पेग ढाल रही थीं।

भयंकर चीत्कार का शब्द सुनकर सवकी दृष्टि दरवाजे की ओर गई और देखा — मांजी केश विखेरे, अर्धनग्न शरीर सामने खड़ी थीं। उनकी आंखें दिन के प्रकाश में जलते विजली की टार्च के वल्वों की तरह निस्तेज होकर भी चमक रही थीं।

मांजी अपनी ढीली धोती के खिसक जाने की भी परवाह न कर हाथ आगे वढ़ाकर चिल्ला उठीं—"सत्यानाश हो तुम रांडों का ! … तुम्हारा कोई न रहे ! …दूसरों का घर उजाड़ रही हो ! …अपनों को लेकर मरो !"

घरवाले और मेहमान स्तब्ध थे। लाल ने माथुर की साली के होंठों से लगाया हुआ गिलास और मिसेज माथुर नेअपने हाथ में थमी हुई वोतल तुरन्त मेज पर रख दी। मेहमानों के होंठ और नेत्र विस्मय से फैंले रह गए।

के॰ लाल स्थिति संभालने के लिए अपने स्थान से उठ तुरन्त मांजी के समीप पहुंचे और उनके कन्धों पर हाथ रखकर दवे स्वर में धमकाकर वोले—"यह आप क्या तमाशा कर रही हैं ? आपको घर की इज्ज़त का कुछ ख्याल नहीं ? मेहमानों से आप क्यों उलझ रही हैं ? आपको जो ^{हुउ ह}ता है, गाली देना है, जूते भारता है, हमें ऊपर बुलाकर कीजिए ! "

पान्तु मांजी उस सर्वनाश के सम्मुख वया श्रीचित्य मोचनी ! उन्होंने रें भी मत्यना अनमुनी कर दोनों उपस्थित श्रीमतियों की ओर हाय फैला-रर वीत्कार किया—"हाय-हाय रचिडवो तुम मर जाओ । ... हाय-हाय रित्रों, तुम्हारा वंश उजड आए । ---हाय-हाय राण्डयों, तुम्हारे सिर में शाप नगे ! निकलो यहा से ! नहीं तो झाडू मारकर···।"

🕏 जाल माओं के मुह पर हाथ रखकर और आनन्द उन्हें बाहों से पानकर आंगन में ले जाने और चुप कराने का बतन कर रहे थे परन्तु प्तका स्वर तीला होता जा रहा था—"निकलो अभी । तुम्हारा झीटा

44.45.11,1 मायुर, मिसेज मायुर और उनकी साली सिर झुनाए उठ गए। मक-

पकाए हुए दूसरे कमरे के रास्ते आयन में आ, जीते से यली में उतरने लगे। विकट स्थिति के कारण लाल के प्राण वच्छ में आ गए थे। वे माजी को छोड तुरन्त मेहमानी के सामने जाकर राह रोक कानर स्वर में बोले-"आप लोग ठहरिए । एक मिनट ठहरिए । सुन्हे बहुन खेद हैं, मैं न्या नह मकना हूं। आप लोग एक मिनट ठहरें। अभी सब ठीक हो जाएगा।" तात गिड़गिडाते रहे परन्तु मेहमान विवनना से मुकी आलो से क्षमा मागने

हुए सीही उत्तर गए। मेहमानों के चले जाने पर भी मात्री ऊचे स्वर मे अपने पुत्र और परिवार का सर्वनाश करनेवालो को अधिकाप दिए आ रही थी। विधा भी नीचे उतर आई और एक कीने में खड़ी हो रोने लगी। उसे देखकर भानन्द ने धमकाया-"यह सब नुम्हारी शरारन है। अब ऊपर से दुनिया

बन रही हो।"

विद्याने धमकी में पुपन होकर कड़े स्वर में उत्तर दिया— "तुम गराव पिनो, व्यभिचार करो, झूठ बोलो और उसटे मुझे गालो देते हो !" मेहमानों के घने जाने पर लान ने विल्लानों हुई मात्रों के मामने

अपनी बाह उटाकर भाजी के स्वर में भी कवे स्वर में भौपणा की-"मारी,

आपने मेरे घर में, मेरे सामने, मेरे मेहमानों को वेइज्जत किया है। मेह-मानों के इस अपमान का प्रायश्चित्त में अपनी जान देकर करूंगा। यह घोषणा कर लाल दीवार के समीप फर्श पर बैठ गए और अपना सिर जोर-जोर से पक्की ईटों से टकराने लगे।

श्रीमती लाल पित को अपना सिर फोड़ते देखकर चीखकर दौड़ीं। पित के सिर को चोट से बचाने के लिए दीवार के सामने ही गई। लाल ने प्राण-विसर्जन का संकल्प कर लिया था, वे नहीं माने।

वे दीवार की ओर वाधा पाकर अपना सिर फर्श पर मारने लगे। श्रीमती लाल और भी ज़ोर से चिल्लाने लगीं— "हाय मार डाला! हाय मैं मर गई!"

विद्या जोर से 'भैया-भैया' चिल्लाती हुई लाल से लिपट गई। आनन्द ने भी लाल को थामने का यत्न किया।

कोहराम की गूंज ऊपर पहुंची। पिताजी अपनी खाट से उठकर छज्जा पकड़कर चिल्ला-चिल्लाकर पूछने लगे—"क्या है, क्या हुआ ?"

पिताजी अपने प्रश्न का कोई उत्तर न पाकर कोध में गाली देने लगे— "•••हरामजादे सुनते नहीं!"

मांजी का हृदय बेकाबू हो उठा। वे भी दौड़कर पुत्र के सिर को अपनी गोद में ले लेने का यत्न करने लगीं। लाल अब तक काफी चोट खा चुके थे। वह वेहोश होकर लेट गए थे।

पित को चोट से वेहोश हो गया देखकर श्रीमती लाल ने एक वहुत ही दाहण चीख मारी और अपना सिर पीटती हुई सास को गालियों से अभिशाप देने लगीं। आंगन में वीभत्स विलाप का कोलाहल मच गया। विद्या भैया के लिए और मांजी पुत्र के लिए अपनी छाती पीट-पीटकर चीखने लगीं।

आनन्द ने रोती-पीटती स्त्रियों को पीछे हटाकर चुप रहने के लिए धमकाया। लाल के मुख पर पानी के छींटे देकर उन्हें सुध में लाने का यत्न करने लगा। िनाजो दीवारो का सहारा लेते हुए जीने से उतर आए। मूछिन दुर्क संयोग फर्ज पर बैठ गए। दोनो हायो से सिर को धाम निया। सास केट दुरन्ता मा को 'डायन', 'चुडन' और 'दाझसी' सम्बोधन करके फॉन्सा देने लगे। उन्होंने घोषणा की—'भेरे बेटे को कुछ हो नया नो 'दुरें मेरी साम उतरोगे।" उन्होंने अपने लिए दमशानय-।जा का प्रबन्ध 'रने की आता है की।

रिनाजों को दृष्टि आंगन को दोबार के साथ टिकी हुई कपडा धीने भी मीगरी पर पड़ गई उन्होंने मोगरी उठा आत्म-हत्या के लिए अपने रिर पर मार सी। जमाई और सेटी ने बीडकर वह मोगरी उनसे छीन मी। पिताजी दम उसड़ जाने से किह्न होकर पुत्र के समीप फर्म पर सेट गए और बोल—"अब मुझे भी यहा से ही दमलान के जाना!"

विद्या मृत्यु के समय जात से रोने के कातर स्वर में जीवने लगी— "हाय में मर जाऊं 1 मैंने तो पुत्रहारा धर्म रखने के लिए ही सच कह दिया पा हाय परमात्मा, तु भुक्ते खठा लें। मेरे भाई का याल न यांचा है।"

मानी अपना सिर पुत्र के बरणों में रखनर वोशी---"पुन मेरे ईश्वर हो, तुम मेरे देवता हो! मेरे अपराग्न क्षमा करो! उठकर मेरे अपराग्न का शह हो!"

के o लाल के यहा कोलाहल मचता ही रहना था इतिलए पडोनियों के कुछ देर पदाहून की, पराजु वह उन कीलाहन की दारपता की ऑर प्रयान पात हो दीना बायू की पहुचना ही पडा के अन्यान इसरे पडोमी ची पुंज पहु हिमीने मुझाया—"संकटर को नहीं बुनाया ?"

दीना बाद कॉक्टर को बुताने गए। के क्साल के पहा से बुनावा होने के कारण आधी रान में भी पड़ोग के डॉक्टर नाथ दोड़े हुए आए। बॉक्टर भी लाम को उदारता के आभारी थे।

ब(श्टर ने आकर नात की नाटो की परीक्षा की, हृदय को टटोना, पनकें पनटकर टार्च से पुत्रतिसों को देशा और बोले—"विना की कोई

वात नहीं।"

आनन्द ने लाल की वेहोशी सिर फर्श सेटकरा जाना वतलाया "चिता की कोई वात नहीं। चोट है।" पानी मंगाकर उन्होंने लाल कें न देख डाक्टर ने उनकी नाक अ निश्चल रहे फिर उनका शरीर बैठे।

डॉक्टर के आ जाने पर विल उठकर मूर्छी से जागने वाले व्य •• मैं कहां हुं?"

डॉक्टर और दूसरे लोगों के और वोले—"मेरे घर में अतिथि स्यागकर प्रायश्चित करूंगा, उठूंगा

इसपर पिताजी ने पुत्रहंता मां दिया। मांजी नेपुत्र के चरणों में सिर देवता-स्वरूप, परमेश्वर के अवतार हिलाने की प्रतिज्ञा की। सव लोग अनुरोध कर रहे थे, परन्तु लाल जैयार न थे।

पूरे परिवार के बहुत विह्वल े नि:श्वास लिया और अपनी गर्त रखी घर में निकाला गया है, उन्हें े र अपने अपराध की क्षमा मांग लेने के

रात को टेड बज लुका था परन्तु कि वह इसी समय जाकर माथुर, उ तिवा साएँ। नि शपूर, मिमेज मायुर और उनकी साली के सामने विकट गिंकिरियों। बिन पर में गाली देकर और सोटा पकटकर साह मारने गिंकिरी देकर निशासा ज्या हो, रात बीतने से पहले ही किर उनी पर केना उनके तिम् एक में मही हो सकता या परनु आनन्द ने गिंडिगड़ा-पर उनके सामने स्थिति रखी— "इस समय बैया, शामी और पिगानी के मों शै पता आरके ही हाथ मे हैं। आप सोग दस समय गरी चलेंगे नो गुरू तर जाने आरको दशा समाधार मिले ! इस समय आपके हा या ना गरी शब इस निमंद है।"

माबुर पत्नी और साली सहित सुरत्त साल के यहा जाने के निए

रिक्त हो गए।

मान भारत से आवास के नीचे, आत्मीयों से विरे हुन्धेय के मैदान कि नीया पर केटे भीएन शिनामह की तब्द वहे ये बोकारी स्थान, विद्या, सोबी भीर शिवाजी उन्हें चेटे बैठे थे। श्रेष्टमानों के नीट आग दिना साथ स्थित के नित्त है जिल्हें केटी को स्थानों के नीट आग दिना सुध रेन्स उत्तर सावत बालने की खेटा कर्य बार की गई परानु उप्तिन स्थान की परे केंद्र दिन्दा में द्वारों से साथ पाए दिना प्राप-स्थाका रोगे स्थान करने के नित्त से नीया करेंद्र

सापुर, प्रवर्श पानी, साथी ने लान को बार-बार कार े दिन को बक्षेत्र रेगर मेरि प्रवर्श कार्र भीकनीत्रकर उठने का अनुशेख हिन्छ। बीटी रुपना के दिन्तु कर के पार्ट केन न होने का दिवसमा दिन्सा । एक सापी ने आपारी कार्या हो लाल के प्रार्थ किया किया कारण करते का दिनस्क रहें।स्टर कर निस्ता की लाल ने एक कार्य दिनक कार्य के कार्य रहा स्वर्

4			

हए डिनर की टेविल पर जा बैठे।

और दूसरी बांह माथर की साली के कन्धे पर। श्रीमती लाल ने पित की पीठ को सहारा दिया। इस प्रकार लाल फर्श से उठे और आमरण सत्याग्रह को छोड़ धर्मयुद्ध में घायल परन्तु विजयी महारथी की भांति लड़खड़ाते

चित्र का शीर्षक

की हैर मीच पहाड़ी बर भा विसा हो।

सरास जाना-माना चित्रसार था। वह उम वर्ष अपने वियो को मित्र और जीवन के सवार्थ से शमीन बना नरने ने चिन्, अर्थन के सरास्थ में शिक्षीर जीवन के सवार्थ से शमीन बना नरने ने चिन्, अर्थन के अरास्थ में हैं गिनीपेद जा बेटा जा। उन नहींनों पराही से बारावारण पून गांच मेरि जाराम मेनिया प्रामीन के पित्र मित्र मित्र

बरायत में इन दूस्ती ने तुछ विक बनाए परन्तु सन न भाग । सनुस्य है मनती है हीन कह विक बनाइन उसे ऐता ही बहुतक है। यह बाउ की सिर्देन दिवारात से वाए नार का विकलता दिया हो। कह विक एते बहुतक है। यह बहिद बहुतक के उनाइन में हुएन बाल कही थे। उपने कुछ विक, होती वह पत्तिकों के उताह की तुल को से बाद बनने पहारों दिनाव मेरितुवारी के बनाइ। उसे इस विकों से भी सम्मेन कहना। बना से हम सक्ताना कि समेरी हुएन से एक नार, होय बान्दा हो। बनुकर हो गा। सा । बहु बनरे रक्ता भीर कहा विकों साथ उनार हा हो। बन्दा कर हा हर हो। जयराज अपने मन की तड़प को अकट कर सकने के लिए व्याकुल था। वह मुट्ठी पर ठोड़ी टिकाए बरामदे में बैठा था। उसकी दृष्टि दूर-दूर तक फैली हरी घाटियों पर तैर रही थी। घाटियों के उतारों-चढ़ावों पर सुन-हरी धूप खेल रही थी। गहराइयों में चांदी की रेखा जैसी नदियां कुण्ड-लियां खोल रही थीं। दूध के फेन जैसी चोटियां खड़ी थीं। कोई लक्ष्य न पाकर उसकी दृष्टि अस्पष्ट विस्तार पर तैर रही थी। उस समय उसकी कल्पना, उसकी स्थिर आंखों के छिद्रों से सामने की चढ़ाई पर एक सुन्दर, सुघड़ युवती को देखने लगी जो केवल उसकी दृष्टि का लक्ष्य वन सकने के लिए ही, उस विस्तार में जहां-तहां, राभी जगह दिखाई दे रही थी।

जयराज ने एक अस्पष्ट-सा आइवासन अनुभव किया। इस अनुभूति को पकड़ पाने के लिए उसने अपनी दृष्टि उस विस्तार से हटा, दोनों बांहों को सीने पर वांधकर एक गहरा नि:क्ट्रांस लिया। उसे जान पड़ा जैसे अपार पारावार में वहता निराश व्यक्ति अपनी रक्षा के लिए आने वाले की पुकार सुन ले। उसने अपने मन में स्वीकार किया, यही तो वह चाहता है—कल्पना से सौंदर्य की सृष्टि कर सक^{ने} के लिए उसे स्वयं भी जीवन में सौंदर्य का संतोष मिलना चाहिए; विना फूलों के मधुमक्खी मधु कहां से लाए?

ऐसी ही मानसिक अवस्था में ज्यराज को एक पत्र मिला। यह पत्र इलाहाबाद से उसके मित्र एडवोकेट सोमनाथ ने लिखा था। सोमनाथ ने जयराज का परिचय उसकी कला के प्रति अनुराग और आदर के कारण प्राप्त किया था। कुछ अपनापन भी हो गया था। सोम ने अपने उत्कृष्ट कलाकार मित्र के बहुमूल्य समय का कुछ भाग लेने की धृष्टता के लिए क्षमा मांगकर अपनी पत्नी के बारे में लिखा था—" इस वर्ष नीताका स्वास्थ्य कुछ शिथिल है, उसे दो मास पहाड़ पर रखना चाहता हूं। इलाहाबाद की कड़ी गर्मी में वह बहुत असुविधा अनुभित्र कर रही है। यदि तुम अपने पड़ोस में ही किसी सस्ते, छोटे परन्तु अच्छे मकान का प्रवन्ध कर सको तो उसे वहां पहुंचा दूं। सम्भवतः तुमने अलग पूरा वंगला लिया होगा। यदि उस

रात यें बगह हो और इसमें सुष्हारे काम में विष्त पड़ने की आर्थका न ऐंगे हुन एक दो कमरे सबलेट कर नेंगे। हम अपने लिए अनग नीकर में केंगे…" बादि-आदि।

रो वर्ष पूर्व ज्यायन इसाहाबाद नया था। उस समय मोम ने उनके स्थान के एक पाय-पार्टी थी थी। उस अवनार पर जवराज ने मीना को देश था। तन सोन और ने मीना का विवाद हुए गुरू ही मास जोते थे। पार्टी के मा मने सोन और पीना का विवाद हुए गुरू ही मास जोते थे। पार्टी के मा प्रतिक्र रथी-पुरुषों के थीड़-सहकों में महिलन परिचय ही हो पाया था। व्यापन ने क्षृति को उसली है सक्त में महिलन को सुरेदा। उसे में बल जित मा पार्टी को पार्टी के स्थान को सुरेदा। उसे में बल जित मा पार्टी को पार्टी के स्थान के पार्टी को में वा प्रतिक्र में पार्टी को पार्टी के सिन्तार पर निर्देश मान कर है। पार्टी के सिन्तार पर निर्देश मान कर है। मान के स्थान कर निर्देश मान कर है। सिन्तार पर निर्देश मान कर है।

प्रशासन नियान - में बा जार है ? प्रशासन की निष्ट्रिया दृष्टि हो बाही के बिन्तार पर नेर रही थी रिण्यु बलता में अनुमय कर रहा था कि उसके नथीत ही दूसरी आराम-रित के पानी सा आगावार से दृष्टि पहाल है। वर्षाय की मुननी नारी रित के पानी सा आगावार से दृष्टि पहाल है। वर्षाय की मुननी नारी रित का पानी सा आगावार से दृष्टि पहाल है। वर्षाय की मुननी नारी रित का पानी सा प्रशासन के दूसरे के के समान केना, ज्यांक के गमान रित का परी। मुननी के देशों और वर्षार से आरी अन्यार-पति पुरान, वेंद्रि सो सोने के माया पाहिसों में आगाने केना भी और गिरी में पुरान से भीती गाम से अधिक करोज दे रही थी। बहु अपनी कप्तार से रमने सता-वैद्रि उसरी आगो के सामने पारी की सुन पहाले पर पहाले का रही है। पता की सामने की से भीत के अपने के कार नीता की पुनावी गृहिसा, रेस्कर से पता केने के भीत के के उसर के कर के रहा की है। पता के क्यारे हैं। एक्यों पिता को से भीत कह दूर हैं और प्राथक बान के माथ प्रणाह केना रहा अने के बारन, का की सामुख्ये स्मुख के बार की कार अपने अक्षार का स्मान के स्वार का का स्वार का स्वार का का स्वार का स्वार का का का का का स्वार का स्वार से कारन का स्वार से स्वार स्वार से स्वार देना चाहता है। कल्पना करने लगा—'वह कैनवेस के सामने खड़ा चित्र वना रहा है। नीता एक कमरे से निकली है। आहट से उसके काम में विघ्न न डालने के लिए पंजों के वल उसके पीछे से होती हुई दूसरे कमरे में चली जा रही है। नीता किसी काम से नौकर को पुकार रही है। उस आवाज से उसके हृदय का सांय-सांय करता सूनापन सन्तोप से वस गया है…।'

जयराज तुरन्त कागज और कलम ले उत्तर लिखने वैठा परन्तु ठिठक-कर सोचने लगा—वह क्या चाहता है ? ... मित्र की पत्नी नीता से वह क्या चाहेगा ?'—तटस्थता से तर्क कर उसने उत्तर दिया—'कुछ भी नहीं। जैसे सूर्य के प्रकाश में हम सूर्य की किरणों को पकड़ लेने की आवश्यकता नहीं समझते, उन किरणों से स्वयं ही हमारी आवश्यकता पूरी हो जाती है, वैसे ही वह अपने जीवन में अनुभव होनेवाले सुनसान अंधेरे में नारी की उपस्थित का प्रकाश चाहता है।'

जयराज ने संक्षिप्त-सा उत्तर लिखा—" भीड़-भाड़ से वचने के लिए अलग पूरा ही बंगला लिया है। बहुत-सी जगह खाली पड़ी है। सबलेट का कोई सवाल नहीं। पुराना नौकर पास है। यदि नीता जी उसपर देख-रेख रखेंगी तो मेरा ही लाभ होगा। जब सुविधा हो, आकर उन्हें छोड़ जाओ। पहुंचने के समय की सूचना देना। मोटरस्टैण्ड पर मिल जाऊंगा ।"

अपनी आंखों के सामने और इतने समीप एक तरुण सुन्दरी के होने की आशा में जयराज का मन उत्साह से भर गया। नीता की अस्पष्ट-सी याद को जयराज ने कलाकार के सौन्दर्य के आदर्शों की कल्पनाओं से पूरा कर लिया। वह उसे अपने वरामदे में, सामने की घाटी पर, सड़क पर अपने साथ चलती दिखाई देने लगी। जयराज ने उसे भिन्न-भिन्न रंगों की साड़ियों में, सलवार-कमीज के जोड़े की पंजावी पोशाक में, मारवाड़ी अंगिया-लहंगे में, फूलों से भरी लताओं के कुंज में, चीड़ के तले और देवदारों की शाखाओं की छाया में सव जगह देख लिया। वह नीता के सशरीर सामने आ जाने की उत्कट प्रतीक्षा में व्याकुल होने लगा; वैसे ही

सें प्रोरे ने परेकान व्यक्ति सूर्य के प्रकाश की प्रतीक्षा करता है। भीटनी हाक से सोम का उत्तर आया — " ... तारीख को नीता के लिए िरों ने एक जगह रिजर्व हो गई है। उस दिन हाईकोर्ट में मेरी हाउरी ^{17 आतुरपुरु} है। यहां गर्मी अधिक है और बडती ही जा रही है। मैं र्गा को और क्ष्ट नहीं देना चाहता । काठमोदाम तक उसके लिए गाड़ी रे बग्ह सुरक्षित है। उसे बस की भीड़ में न फ़मकर टैक्सी पर जाते के निए रह दिया है। तुम उसे मोटर स्टैण्ड पर मिल जाना। सुम हम लोगों है निए यहा सब कुछ कर रहे हो, इतना और मही। हम दोनों कृतज्ञ

वयगत्र मित्रको सुधिक्षित और सुमस्कृत पत्नी को परेगानी स यचाने है निए मोटर स्टैण्ड पर पहुचकर उत्सुकता से प्रनीक्षा कर रहा था। कारतीहाम में जानेवाली मोटरें पहाड़ी के पीछे से जिस मोड से महमा भर होती थी, उसी और जबराज की आखे निरन्तर सगी हुई थी। एक रैंकी दिलाई दी। जयराज आने बढ़ नया। गाडी रंनी। पिछनी मीट पर कि महिला अपने सरीर का बोझ सभाज न सकने के दारण कुछ पमरी रिनी दिलाई दी। चेहरे वर रोग की चकावट का पीतापन और यकाउट है फैली हुई निस्तेव आसी के चारी और छाइयों के पैरेथे। जयगज डिउड़ा। महिलाकी आधीं मे पहचान का भाव और नमस्कार में उसके

रिय उठने देल जयराज को स्वीनार करना पडा-

"मैं जयराज हूं।"

महिला ने मुस्कराने का यस्त किया-"मैं नीता हू ।"

महिला की यह मुस्तान ऐसी वी जैसे वीवा को दवाकर कर्यमा परा हेवा गया हो । महिला के साधारणकः दुवने हाय-पावी पर लगमग एक धिर ना भीत पेट पर बध जाने के बारण उसे मोटर से उत्तरने से भी प्ट हो रहा था। विसरे बात अपने भरीर को मधानने में उसे बेनी हा मुनिया हो रही भी जैने नकर में बिस्तर के बन्द ट्ट, बाने पर एसे सुमा-ना बटिन हो बाना है। महिना सरवानी हुई बुछ ही बदन बन पाई

विषया शोर्यस १६४

नि जयराज ने एक दादी (दोली) को पुतार उसे तार आदिमयों के कंट्रे पर सदता दिया। सोजन्य के नाते उसे दादी के साथ जलना चाहिए स परन्य उस विदेशन और विरूप आदृत्ति के समीद रहने में जयराज को उस माई भोर स्वानि अनुभव हो रही थी।

नीता वर्गने पर पहलार एक अलग क्यारे में पलंग पर लेट गरी।
जयराज के बानों में उस कमरे में निरम्तर आह! कहा! की द्यी कराहट
पहल रही थी। उसने दोनों बानों में उमलिया द्याकर कराहट मुनते से
बनाग बाहा परन्तु उने दार्गर के रोम-रोम से बह कराहट मुनाई दे रही
थी। यह गीता की विमय आकृति, रोग और बोझ से जिथिल, लंगड़ालगडाकर प्रयोग बनिर मो अपनी समृति के पट से पींछ डालना चाहता
था परन्तु वह वर्गम आकृत उसने सामने राज़ हो जाता। नीता जयराज
की उस मकान के पूरे बातावरण में समा गई अनुभव हो रही थी। जयराज का मन चाह रहा था — वगले से कही दूर भाग जाए।

दूसरे दिन मुचह सूर्य की प्रथम किरणें बरामदे में आ रही थीं। सुबह की ह्या में कुछ गुनकी थीं। जयराज नीता के कमरे से दूर, बरामदे में आरामकुर्सी पर बैठ गया। नीता भी लगातार लेटने से जबकर कुछ ताजी ह्या पाने के लिए अपने घरीर को संभाले. लंगड़ाती-लंगड़ाती बरामदे में दूसरी कुर्सी पर आ बैठी। उसने कराहट को गले में दवा, जयराज को नमस्कार कर हाल-चाल पूछकर कहा—"मुझे तो शायद सफर की थका- यट या नई जगह के कारण रात नींद नहीं आ सकी !!!"

जयराज के लिए वहां बैठे रहना असम्भव हो गया। वह उठ खड़ा हुआ और कुछ देर में लीटने की वात कह बंगले से निकल गया। परेशानी में वह इस सड़क से उस सड़क पर मीलों घूमता इस संकट से मुक्ति का उपाय सोचता रहा। छुटकारे के लिए उसका मन बैसे ही तड़प रहा था जैसे चिड़ीमार के हाथ में फंस गई चिड़िया फड़फड़ाती है। उसे उपाय सूझा। वह तेज कदमों से डाकखाने पहुंचा। एक तार उसने सोम को दे दिया—"अभी बनारस से तार मिला है कि रोग-शब्या पर पड़ी मां मुझे

१६६ मेरी प्रिय कहानियां

रेवर्न के लिए छटणटा रही है। इनी समय बनारस जाना अनिवार्य है। मेनन का किराया छः महीने का पेमगी दे दिया है। नौकर यही रहेना। हो मेंने तो तुम आकर पत्नी के पाम रही।"

यह तार दे यह अंगल पर लोटा। नीकर को हमारे से बुलाया। एक प्रिकेन के आवरसक कपड़े ले उसने नीकर को विश्वसा दिलाया कि दो विन के लिए बाहर था रहा है। सोम की बी हुई तार की नकल अपने जाने के बाद नीटा को दिलाने के लिए वे बी और हिंदासत की—"भोबी जी की किसी तरह का भी कटन को।"

ार्य बनारम में जयराज को रामोशंत से लिला कोम का पत्र मिला। मोम नै निज की माता के स्वास्थ्य के लिए जिस्ता कुकट की पी कोर तिक्सा बा कि हाईकोर्ट में अक्तांत हो गया है। वह एमीलित पहुंच गया है। वह वीर मीना बसके लीट आने की सुतीका उल्लालन से कर रहे हैं।

जिराना चिक्त नाट जान का प्रताक्षा उत्पूषना च कर रहे. हैं । जिरान ने उत्तर से होन को पानवाद केन दिखा कि यह मकान भीर नौतर को अपना ही समझकर निस्मंकोच यहा रहे। यह स्वयं अनेक रिक्तों से जल्दी नहीं नहीं सकेगा। सोम आर-आर पत्र निकार जयरान की युनाता रहा परन्तु जयराज रातीवेल न सीटा। आसिन सोम जाता और मामान नीकर को नहेज, नीता के साथ दमाहाबाद नोट गया। यह समाधार सिसने पर जयराज ने नीकर को सामान सहित बनारम बुनदा

यपराज के जीवन से मुनेचन की शिकायत का स्थान सव मौदर्स के धोजे के प्रति क्वानि में लिखा। जीवन की निक्ष्यता और जीभित्रता का स्वादक उनके मन पर छा गया। धीता ना रोग से पीरित्र, बोजिल, करा-हेता हुआ हथ जनकी आयों के सामने में कभी न हटने की जिद्र कर रहा था। मिलाक में समाई हुई म्वानि से छुटकारा पाने का पुंड निरस्त्य कर यह सीधा कारणीर पहुंचा। किर वस्क्रानी भीटियों के भीच, जनल के चूनों से पिरी नीचे कर साम में निव्यंत पर पिरा असी ने में पिरी नीचे स्वाद के सित्र है की पर साम के पूरी से पिरी नीचे कर साम में विकास के प्रति करना पर स्वाद की साम के साम के स्वाद के सित्र है के रिनार का हम में विकास करने पार के स्वाद के रिनार का उसने पार पर साम करने पार करना पर साम करने पार की साम करने हमा साम करने पर साम करने की साम करने पर साम करने करने साम करने की साम करने पर साम करने करने साम करने की साम करने पर साम करने साम करने पर साम करने साम करने साम करने पर साम करने साम

रात में ज्वार-भाटे का दृश्य देखा। जीवन के संघर्ष से गूंजते नगरों में उसने अपने-आपको भुला देना चाहा परन्तु मस्तिष्क में भरे हुए नारी की विरूप्ता के यथार्थ ने उसका पीछा न छोड़ा। वह वनारस लौट आया और अपने ऊपर किए गए अत्याचार का वदला लेने के लिए रंग और कूची लेकर कैनवेस के सामने जा खड़ा हुआ।

जयराज ने एक चित्र बनाया, पलंग पर लेटी हुई नीता का। उसका पेट फूला हुआ था, चेहरे पर रोग का पीलापन, पीड़ा से फैली हुई आंखें, कराहट में खुलकर मुड़े हुए होंठ, हाथ-पांव पीड़ा से ऐंठे हुए।

जयराज यह चित्र पूरा कर ही रहा था कि उसे सोम का पत्र मिला। सोम ने अपने पुत्र के नामकरण की तारीख बताकर वहुत ही प्रवल अनुरोध किया था कि उस अवसर पर उसे अवश्य ही इलाहावाद आना पड़ेगा। जयराज ने झुंझलाहट में पत्र को मोड़कर फेंक दिया, फिर औचित्य के विचार से एक पोस्टकार्ड लिख डाला—"अन्यवाद, शुभकामना और वधाई। आता तो जरूर परन्तु इस समय स्वयं मेरी तवीयत ठीक नहीं। शिशु को आशीर्वाद।"

सोम और नीता को अपने सम्मानित और कृपालु मित्र का पोस्टकार्ड शनिवार को मिला। रिववार वे दोनों सुबह की गाड़ी से बनारस जयराज के मकान पर जा पहुंचे। नौकर उन्हें सीधे जयराज के चित्र बनाने के कमरे में ही ले गया। वह नया चित्र सबसे आगे अभी चित्र बनाने की टिकटिकी पर ही चढ़ा हुआ था। सोम और नीता की आंखें उस चित्र पर पड़ीं और वहीं जम गई।

जयराज अपराध की लज्जा से गड़ा जा रहा था। बहुत देर तक उसे अपने अतिथियों की ओर देखने का साहस ही न हुआ और जब देखा तो नीता गोद में किलकते बच्चे को एक हाथ से कठिनता से संभाले, दूसरे हाथ से साड़ी का आंचल होंठों पर रखे अपनी मुस्कराहट छिपाने की चेप्टा कर रही थी। उसकी आंखें गर्व और हंसी से तारों की तरह चमक रही थीं। लज्जा और पुलक की मिलावट से उसका चेहरा सिंदूरी हो रहा था।

१६८ मेरी प्रिय कहानियां

जयराज के सामने खडी भीता. राजीखेत में नीता की देखने से पहले और उसके सम्बन्ध में बनाई कल्पनाओं से कही अधिक सुन्दर थी। जय-राज के मन को एक धक्का लगा--'औह, धीना '' और उसका मन फिर धीवे की ग्लानि से धर गया। नियराज ने उस विज को नष्ट कर देने के लिए समीप पड़ी छुरी हाथ

मैं उठा सी । उसी समय नीता का पुलक-भरा शब्द भुनाई दिया---"इस वित्र का शोर्थक आध क्या वर्कों है ?" जयराज का हाथ इक गया। यह नीता के चेहरे पर गर्व और अभि-

मान के भाव की देखना स्नब्ध लगा था। कलाकार को अपने इस बहत ही उत्हप्ट चित्र के लिए कोई पीर्पक

म खोज सकते देख नीता ने अपने वासक को अभियान से आपे बढ़ा.

मुस्कराकर मुक्काया--"इस चित्र का शोर्षक रक्षिए 'मुजन की पीड़ा' !"

भगवान के पिता के दर्शन

प्रह्मज्ञान और ब्रह्मत्व की प्राप्ति के लिए पुण्य-सिलला गंगा और यमुना के संगम पर एक बहुत बड़े वाजिश्रवा यज्ञ का अनुष्ठान किया गया था। ऐसा विराट यज्ञ पहले कभी हुआ सम्भवतः नहीं हुआ होगा। यज्ञ में देश-देशान्तर के तपोवनों से महींप, योगी और ब्रह्मवेत्ता आए थे। उन लोगों ने यज्ञ-कुंड में जौ, तिल, सुगन्धित पदार्थों, घी और बिल की असंख्य आहुतियां डालीं। इन आहुतियों से यज्ञ-कुंड से इतनी ऊंची अग्नि-शिखाएं उठीं कि तपोवन के ऊंचे से ऊंचे वृक्षों की चोटियों के पत्ते भी झुलस गए। यज्ञ-कुंड से उठे पवित्र धुएं ने एक पक्ष तक पुण्यात्माओं के लिए पृथ्वी से स्वर्ग तक सदेह जाने का मार्ग बना दिया था। वातावरण कई योजन तक यज्ञ की पवित्र सुगन्धि से भरा रहा।

अयोध्या, मिथिलापुरी, अंग-देश आदि देशों के धर्मात्मा राजाओं ने ऋषियों के सत्कार के लिए व्यंजनों की अपार भेंटें भेजीं और सहस्रों दुधारू गौएं दान दीं। यह व्यंजन और उत्तम दूध से बनी पायस इतने प्रचुर थे कि ऋषियों, अतिथियों और सहस्रों आश्रमवासियों के उपयोग से भी समाप्त न होकर योजनों तक वनों में फैल गए थे। तपोवन के मृग और पक्षी भी फल, मूल और दाना-दुनका चुगना छोड़कर व्यंजनों और खीर से ही निर्वाह करने लगे और कई दिन वाद जव उन्हें फिर घास, पत्ते और दाने का उप-

योग करना पड़ा तो जीवो के दानो और बोबों में कष्ट होने सगा।

परन्तु तारी खाँवि इस प्रयुक्ता में भी नितिस्य हरूर बहातात और इयात की प्राप्ति की चर्चा में सीन रहें। यह के घूम में मुनामित वाता-देए में, बुगों के नीचे और चर्च-बुटियों में दान-दाती आत-जर्चा से सोक देए में, बुगों के नीचे और चर्च-हिटयों की दानका मता सूत्र जाने पर सोम-एने मेरे कमइल उनके सामने प्रस्तुत कर देने और चाँचि तानचर्चा में सीन रहने। चर्चा का विषय यही या कि इन्टियों और मत की अनुभूति से पिन पूर्व कहुत सीर ब्रह्मां की प्राप्ति का येवन्यत सार्व क्या हैं भोगा भवात बहुतन एक हो है अवया उनमें भद हैं बहुत्ता और भीन योग की प्राप्ति के नित् कर्मयोग, शानयोग, राजयोग, हट्योग और अनिवयोग में से कीन भेट हैं। बात का मार्ग तप है क्याया जितन है। निर्मुण बहुत वारलीं किन, आप्यासिक भीर आदिविका अन्त पर चर्चा होती दहनीं थी।

ब प्रया चापि के पुत्र नहीं विभावक ऐसी जान-चर्चा और सारुपायों को कभी बुधों के नीच और कभी चर्चकुटियों से मुनते रहें। बीन-बोसकर चुपियों के मंत्र के एए चरण्य नहीं समस्य सर्थ का निर्मय न ही पाया। माधियों ने यन और कायों का विश्व कर किर हान-चर्चा आरुम्म की। महिष विभावक वस जान-चर्चों से उपराम हो गए। वे इस परिलास पर दुवें कि उन सब जानियों के मान का नामन चंकनकों से के नारीर कीर सिलायक की ननुमित्त और करनायों हो है। वाणी दो स्यूल मरीर की किमा है, मरीर का धर्म है। उसने अपाधिव सूचनता की प्राणित कीर ही कमती है? इगीरए जान की चर्चा व्यर्थ है। सुरस कहा के सान की प्राप्ति का मार्ग तथ द्वारा बहा में शीनता का आवह हो हो हो

महर्षि विभाडक ने योवन में अपने पिता कश्यप ऋषि से झान प्रास्त जिया था। मयम में आध्यम का गृहस्य जीवन विनाकर और एक पुत्र प्रास्त कर वे तप में सीन हो गए थे। ऋषि-यत्नी वंश की रक्षा के लिए एक संतान प्रसव कर शरीर छोड़ चुकी थी। महाँप विभाडक वृद्धावस्था में अनुभव कर रहे थे कि तप के लिए उपगुक्त समय वृद्धावस्था ही थी। वृद्धावस्था में शरीर शिथिल हो जाने पर तप में उग्रता सम्भव नहीं हो सकती। उन्होंने और भी सोचा—'स्यूल शरीर की रक्षा की चिन्ता करना ऐसी ही प्रवंचना है, जैसे जल निकालने के लिए कुआं खोदते नमय कुएं में फिर मिट्टी डालते जाना।'

महर्षि विभांडक ने मोचा—'मनुष्य स्वयं जो कुछ प्राप्त नहीं कर सकता उसे पुत्र द्वारा प्राप्त करने की आगा रखता है इसीलिए शास्त्र में कहा है—आत्माव पुत्रः। उन्होंने निश्चय किया कि तप द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति का लक्ष्य उनके जीवन में अपूर्ण रह गया परन्तु उनका किशोर पुत्र यौवन की शक्ति से उस लक्ष्य को पा सकेगा।

अपने किशोर पुत्र के लिए तप द्वारा ब्रह्म की प्राप्ति का लक्ष्य निर्धा-रित कर महिंपि विभांडक ने अनुभव किया कि अव 'भारद्वाज आश्रम' उसके लिए उपयुक्त स्थान न होगा। आश्रम में निरन्तर चलनेवाली ज्ञान-चर्चा किशोर कुमार में ज्ञान-अभिव्यक्ति का अहंकार ही उत्पन्न करेगी। आश्रम के तापस-नियमों में भी मुनि-कन्याओं का संग किशोर कुमार में शारीर-धर्म को जगाएगा। यह प्रवृत्ति ही तो प्रकृति की वह शक्ति है जो आत्मा का वन्धन वनकर उसे ब्रह्म की ओर उड़ जाने से रोके रहती है। इस विचार से महिंप विभांडक भारद्वाज आश्रम छोड़ अपने किशोर पुत्र को लेकर उत्तरारण्य की ओर चले गए। वहां एकांत में अपना आश्रम वनाकर उन्होंने किशोर पुत्र को ब्रह्म-ध्यान के तप में लगा दिया।

किशोर मुनि को संग-दोप द्वारा आसिवत के प्रभाव से बचाए रखने के लिए महाप विभाडक ने, इस आश्रम के लिए राजाओं द्वारा भेजे हुए दास-दासियों और सैकड़ों गौओं में से केवल वृद्ध दासों और नया दूध देने-वाली गौओं को ही रखकर, शेप सबको फिर दान कर दिया। गौओं के बछड़े बड़े हो जाने पर और फिर दूध दे सकने के लिए गौओं के सन्तान की कामना करने पर ऋषि उन्हें दूसरे तपस्वियों और दीनों को दान कर रेंगे थे। इन प्रकार वे सामारिकना के सभी प्रमगो को अपने आश्रम से दूर रतने थे।

उतरारण्य के एकान आश्रम में तप करते विमाडक-पुत्र किशोर मुनि रा शरीर, ब्रह्मचर्य के अक्षय वर्णस्य से, असाधारण रूप से बढने लगा। उनेना सरीर देवदार वृक्षा की तरह ऊचा, बक्षस्थल पर्वत की विशाल गिता को तरह भोडा और बाहे गाल के पंड की डालो की तरह हो गई। कृषि-पुत्र के लेहर पर आखे टिक नहीं पानी थी। महर्षि विभाडक अपने देव को देखकर सनोप अनुभव करने थे। वे सोचन कि मनुष्यों के बामना में जरेर, दुवंस मरीर मुटम ब्रह्म की प्राप्ति के योग्य तप नहीं कर सकते। मेरेपुत कादेवोपन अक्षय घरीर ही उस तपको पूराकरने मे समर्थ होगा। उन्हें चिन्ता भी होती कि ऐसे दर्शनीय यौवन की शोभा के लिए बनेक सकट भी आ नवते है। उनके आश्रम मेदासियो और मुनि-कर्याओ के योदन-सोनुप नेत्रों का भय नहीं या परन्तु निजैन वन में भी कभी कोई देवकत्या, किन्नरी, यक्षिणी अथवा अप्तरा तो आ ही सकती थी। दूसरी कै तप से ईर्ध्या करनेवाले इन्द्र की कई कहानिया आश्रम में प्रचलित थी। क्षिणव कभी किसी ऋषि के उग्र तथ का समाचार पाते थे तो स्वर्ग से भम्मराएं भेजकर उनका सप भगकरा देते थे। महर्षि विभावकर का मन अपने युदा पुत्र के तप और वर्षस्य को अक्षण्य बनाए राजने के लिए विन्तित रहने लगा।

युवा पुत्र ने गैंडे का वड़ा सींग जटा में धारण कर लिया ।

विभांडक के तपस्वी पुत्र के अक्षुण्ण तप की कीर्ति देश-देशान्तरों में फैल गई कि उग्र तप के प्रभाव से उनके माथे पर सींग निकल आया है। युवा मुनि का नाम भी 'ऋष्य प्रग्रंग' (सींग वाले ऋषि) अथवा र्ख्या ऋषि प्रसिद्ध हो गया।

उस समय, त्रेतायुग में महाराज दशरथ अयोध्या में राज करते-करते आयु के चौथे पहर में आ पहुंचे थे। महाराज दशरथ का प्रताप अखंड था। देवता भी उनकी सेवा करने का अवसर पाना अहोभाग्य समझते थे । पृथ्वी पर उन्हें किसीसे भी भय नहीं था इसलिए वे युवावस्था में राजाओं के योग्य भोगों में लीन रहे। महाराज अपनी रानियों को भोग-विलास का नहीं, केवल गृहस्य-धर्म-पालन और पुत्र-प्राप्ति का साधन समझते थे इस-लिए अपनी तीनों साध्वी रानियों की ओर उनका ध्यान कम ही गया था। यौवन में उन्हें पुत्र का ध्यान आया ही नहीं। वृद्धावस्था में जब यह चिन्ता हुई तो उनमें सामर्थ्य न थी। महाराज ने अश्वमेध और गौ-मेध आदि यज्ञों द्वारा देवताओं को प्रसन्न करके पुत्र पाने की चेप्टा की परन्तु असफल ही रहे। महाराज दशरथ के पुत्र-प्राप्ति के लिए असमर्थ और क्लीव हो जाने की वात सभी ओर फैल गई। इसीलिए जब परशुराम ने पृथ्वी को क्षत्रिय-वंश से हीन कर देने का प्रण करके सभी क्षत्रियों की समाप्त करना गुरू किया तो उन्होंने विदेह जनक को, जो जन्म से क्लीव थे और दशरथ को जो निलास की अधिकता से क्लीव हो गए थे,वंश-उत्पत्ति में असमर्थ समझ-कर छोड दिया था।

महाराज दशरथ के मंत्री ब्रह्मीप विजिष्ठ और व्यवहार-कृशल ऋषि जावालि ने विचार कर महाराज को परामर्श दिया—"महाराज जिस वस्तु का जो उपाय है वही करना चाहिए। पुत्र-प्राप्ति के लिए एकमात्र उपाय पुत्रेष्टि-यज्ञ है। वही आपको करना चाहिए। ऐसी स्थिति में पूर्व-पुरुषों ने भी ऐसा ही किया था। ऋग्वेद के कन्या-विकर्ण मूक्त में भी ऐसा ही उपदेश है। क्षितों और ज्ञानियों वे महास्त्र को शीनो सार्था, पतिपरायण रिन्ते—कीरत्या, केंद्री और सुमित्रा को भी समाधार। पुत्र की कत्त्र शैनों ही ग्रानियों को भी स्वास्त्र को अक्टबा उनके सामने भी है। रहें पूर्वेष्ट-अज में बोब देने के लिए अनुसार की हो पति।

रत्तार या बोर अयोध्या के राज्य की रक्षा पुत्रेष्टि-यज द्वारा महाराज दमरच के निष् उत्तराधिकारी श्राप्त करने में ही हो। सनती भी। न्तराज रगरम, ब्रह्मपि बसिप्ट, बामदेव और मुनि जायानि विन्ता करने मेरे कि पूर्वे दिन्यक्त के उध्वयुँ या होता के रूप में किया तमर्थ जानी की बामिति विया आए है बहस्य-पुत्र विमाहक के पुत्र शृती के अगृह सीवन भीर वर्षेच्य की कीति भी अयोज्या में पहुच चुकी थी। जन-साधारण में रेगी भी रिवदली फैमी हुई थी कि अमानुष्यिक गर्यम और ब्रह्मचर्य, नियाहने-वारे गुपी ऋषि मनुष्य नही बदन् विभी अमान्षिक योगि से हैं, तभी तो वे ऐसा सबस निवाह सके है और इमीलिए उनके मार्च पर भीग उन आसा है। बाहि अपूर्व शहीय पिता और मृगी माता की सतान भी सताने थे परन्तु क्रिया विधाय्य अपने ज्ञान-यम से जानों वे कि ऋषि विधादक ने अपने हुँग पुत्र के माथे घर शीन क्यो बाध दिया है, ऋषि गुंगी मनुष्य ही हैं परन्तु प्रश्न था कि शृंगी ऋषि को पुत्रेप्टि-यश गव्यन्त करने के लिए मयोध्या कैने लाया जाए ? विभाइक अपने पुत्र पर कड़ी दृष्टि स्वते थे। उनसे प्रार्थना करने पर वे शुंशी को नगर में भेजकर अनका सप भग होने की अनुमति कभी न देते । महाराज दशरथ, वशिष्ठ और जावालि इसी पिला में मुने का रहे थे।

भू भी कृषि को गया गीग धारण विश्व रहते का अन्यास हो जाने पर विभाइक कृषि को इस बान का भी अप न रहा कि उत्तरारण्य से भव्य आनेवाधी कोई देवनन्या, किलाने, शिक्षी कावा अप्या भू भू भी के यौवत से आकृषिन होकर नुवा श्वपत्वी को व्य-आप्ट कर देवी। उनके मन में तीमदिन करने की भी इच्छा बी। एक ही स्थान पर बारह वर्ष से भी अधिक रहते नहीं मन भी उपाह ही गया का। विष्क से स्थित पर कर खूद दूध देनेवाली बहुत-सी गौओं की व्यवस्था कर तीर्थ-यात्रा के लिए चले गए।

ब्रह्मज्ञानी विशष्ठि को विभाडक के तीर्थाटन के लिए जाने का समानार मिला तो उन्होंने चतुर सार्राथ सुमन्त को अनेक सैनिकों और दूसरी सवा-रियों के साथ श्रृंगी ऋषि को लिवा लाने के लिए भे दिया।

सारिय सुमन्त ऋंगी ऋषि को अयोध्या ले आए। राजमहलों में पुत्रेष्टि-यज्ञ के लिए सब सुविधाएं और समारोह प्रस्तुत या परन्तु वासना से मूलतः अपिरिचित युवा ऋषि का ध्यान न संगीत की ओर जाता, न सुगन्धों की ओर, न व्यंजनों की ओर न नारियों और रानियों के लोल-लास्य की ओर ही। वे इन वस्तुओं से खिन्न होकर मृंह मोड़ लेते। उनकी अवस्या ऐसी ही थी जैसे वन से जवरदस्ती वांधकर लाए गए जीव की आरम्भ में होती है। महारानी कौ शल्या, कैकेयी और सुमित्रा के उनसे पुत्रेष्टि-यज्ञ में कृपा पाने के प्रयत्न व्यर्थ रह गए और उनकी कामना अपूर्ण ही रही।

ब्रह्मज्ञानी विशिष्ठ ने रानियों को उपदेश दिया—''हे कुल का हित चाहनेवाली, पित की आज्ञाकारिणी, सुलक्षणा देवियो! संतान देने की सामर्थ्य से पूर्ण यह युवा ऋषि किसी भी प्रकार की इच्छा और रस की अनुभूति से अपरिचित है। उसकी ज्ञान और कर्म की इन्द्रियां अनुपयोग से जड़ और अनुभूति-शून्य हैं। उसकी इच्छा करने की शक्ति को सचेत करने के लिए उसके परिचय के मार्ग से ही आरम्भ करना चाहिए। वह सदा गोओं के दूध और रामदाने की खीर का ही आहार करता रहा है। उसे पहले सुस्वादु और सुवासित खीर खिलाकर उसकी रसना को जागरित करो। एक रस दूसरे रस को और एक इच्छा दूसरी इच्छा को जगाती है। इसी मार्ग से कुछ समय तक उसकी सेवा करने से तुम्हारी कामना सफल होगी।"

पित और आप्त पुरुषों का आदर करनेवाली महाराज दशरय की तीनों सुलक्षणा रानियों ने उत्तम खीरअपने हाथों से पकाकर सोने के रतन जिंदत पात्रों में रहां भी ऋषि के सामने रखी। रहां भी ऋषि खीर का आदर

बायन में में करते ही थे परन्तु राजमहत्त के दुनंस द्रव्यों से और चतुर जित्तों के हाथ से बनी कोर में बोर हो रस था। गूनी इस तीर को परधारा से-केकर साने नमें। रस की बनुमूर्ति से रसना जायों। इसके साथ से परधारा से-केकर साने नमें। रस की बनुमूर्ति से रसना जायों। इसके साथ से दूर्व कुण्टिक्साई में दूर्व कुण्टिक्साई में त्रियों के निरस्तर सेवा करता हम प्रकार एक नयन प्रकार कुण्टिक्साई में त्राव के तिरस्तर सेवा करता हमें में दूर्व कुण्टिक्साई से त्राव के स्वाव से स्वव के एक मों से त्राव की एक से से स्वव की एक से से स्वव के एक साम से से स्वव के स्वव की इसका में हिनत होकर मायि पूर्व विष्य में स्वव के इसका से हमित होकर मायि पूर्व विष्य माय

बड़ी और अनुभवी होने के कारण अहारानी की सत्या की कामना सबसे परने पूर्व हुई, फिर रानी कै केवी की, और फिर रानी सुमिना की। आयु कम होने के कारण ऋषि का सुमिना पर विश्वेष अनुषह हुआ और उन्हें

सहमण और शत्रुध्न दो पुत्र प्राप्त हुए।

राशिष्ठ गुल की रक्षा का ज्यान ही जाने पर और प्रयोजन शेव म एते में कहाँच प्रशिक्त ने कुरगी क्षित को किर काले आपमा में भिजवा रिया। जब मूर्गों क्षित अयोज्या में पृत्रेष्टि-यम ना विश्वान निवाह रहे थे, निर्देषि विभावन सीचीटन से उत्तरारच्य के सीट आपू वे। आपन्य ने रक्षम है सात्रों से काले मूर्ग मो के अयोज्या ने काए जाने का मनाचार मिना तो में बहुत तिमा बहुतान प्राप्त क महे ना सह यह प्यान्त पुढ़े बतिष्ठ का मुक्त है। वह तिसीत्र कहातान प्राप्त क में ना सह से स्थान में सकता। महामुनि विभावनित्र के उत्तर तथा हात्र हुत्य के में स्थान में स्थान में स्थान में विगत ने वनका बहात्रित आप कर में ना स्थान कर है। स्थान में स्थान में विगत ने वनका बहात्रित आप विश्वाक निया कि मागादिक एन से स्थानित्र पूत्र में असेने छोड़ कर जाना। जुक के तथ के पक से मिर जाने के कारण वनकी अञ्चाहना कर उन्होंने कहां— 'है क्योक्षस्ट, परम पद मुक्ते आप हों। से सकेया हुत्र आपन की मोई च्याने सोम्य हो है; स्वा, बर्ड कर है। से स्थान हों

सगमन बारह-बारह वर्ष के तीन पुत्र का समय और बीत गया ।

इक्ष्वाकु कुल-सूर्य भगवान राम, रावण का संहार कर पृथ्वी को पाप के वोझ से मुक्त कर अयोध्या लौट चुके थे। महिष विभाष्ठ ने शुभ घड़ी और नक्षत्र देखकर उनके राज्यतिलक की तिथि की घोषणा कर दी थी। देश-देशान्तर से धर्मप्राण नागरिक और तपोवन से ऋषिवृन्द शुभ पर्व पर पृथ्वी पर अवतार धारण किए भगवान के दर्शनों के पुण्यलाभ के लिए अयोध्या नगरी की ओर चले आ रहे थे। उत्तर देश से आनेवाले ऐसे ही ऋषियों का एक दल विश्राम और मध्याह्न-आहार के लिए महिष विभाडक के आध्म में आ टिका था।

महिष को उदासीन और निष्चिन्त बैठा देखकर यात्री ऋषियों ने आश्चर्य प्रकट किया — "क्या ऋषिवर ने नहीं सुना कि भगवान ने पृथ्वी पर अवतार धारण किया है। देश-देशान्तर से लोक-समाज, ऋषि, तपस्वी और देवता भी सशरीर भगवान के दर्शनों के लिए अयोध्या जा रहे हैं। क्या आप भगवान के साक्षात्कार का पुण्यलाभ नहीं करेंगे? ऐसे पुण्यलाभ का अवसर तो यगों में कहीं एक वार आता है!"

इस नेतावनी से विभांडक उपेक्षा से जाग और ऋषियों के दल के साथ यात्रा करने के लिए अपना कमण्डल और मृगचर्म वांधने लगे। उसी समय श्रुंगी वन से लौट आए थे। पिता को यात्रा की तैयारी करते देखकर श्रुंगी ने पूछा—'पिता जी, क्या फिर तीर्थाटन के लिए जाने का संकल्प है?"

महिंप ने अपने काम से आंख उठाए विना ही उत्तर दिया कि पृथ्वी पर भगवान ने नर-जरीर धारण किया है। उन्हीं के दर्शन के लिए यात्री-ऋषियों के साथ वे भी अयोध्या जा रहे हैं।

न्द्रंगी ऋषि के मन में अयोध्या की पुरानी स्मृति जाग उठी — "हमें भी साथ ले चलिएगा, पिता जी!" उन्होंने प्रार्थना की।

"तू तपोश्रप्ट है, तू भगवानके दर्शन क्या करेगा ?" पिता ने वितृष्णा से उत्तर दे दिया।

पिता के तिरस्कार से अनुत्साहित होकर शुंगी केवल इतना ही कह

^{फ्}र्~"अयोध्या के राजमहलों में तो एक बार हम भी गए थे।" पुत्र की बात से महायि विभाडक का कोछ ऐसे चेत उठा, जैसे फूक

भिरदेने से रास के नीचे मोई हुई चिन्गारिया चमक उठती हैं परन्तु इन रेने उठी विन्यास्थि। के प्रकाश में उन्हें अचानक एक नया ज्ञान भी प्राप्त हुआ।

महर्षि विभोडक ने कमण्डल और मृगद्धाला को छोड अपना मस्तक

र्त के चरणों में रख दिया और रह गी को सम्बोधन कर बोल--"भगवान को पृथ्वी पर नर-वारीर देनेवास, नुम्हे प्रणाम है।" भौर फिर यात्राके लिए नैयार ऋषियों के दल की और मुख कर गहोने पुकारा-- "ऋषिकृद, आप लोग भगवान के दर्शनों के लिए बरोध्या की यात्रा करें, हम तो यहीं चगवान के पिता के दर्शन कर रहेह्राण

प. इन बहानी का आधार बाल्योकीय बामायक के बालबार के बार्टर एक के बाद से तेरह नर्ग तक के ब्लीव है।

सच वोलने की भूल

शारव् के आरम्भ में दफ्तर से दो मास की छुट्टी ले ली थी। स्वास्थ्य-सुधार के लिए पहाड़ी प्रदेश में चला गया था। पत्नी और वेटी भी साथ थीं। वेटी की आयु तब सात वर्ष की थी। उस प्रदेश में बहुत क्लोटे-छोटे पड़ाव हैं। एक खच्चर किराये पर ले लिया था। असवाव खच्चर पर लाद लेते थे और तीनों हंसते-बोलते, पड़ाव-पड़ाव पैदल यात्रा कर रहे थे। रात पड़ाव की किसी दुकान पर या डाक-बंगले में विता देते थे। कोई स्थान अधिक सुहावना लग जाता तो वहां दो रात ठहर जाते।

एक पड़ाव पर हम लोग डाक-बंगले में ठहरे हुए थे। वह बंगला छोटी-सी पहाड़ी के पूर्वी आंचल में है। बंगले के चौकीदार ने बताया— "साहव लोग आते हैं तो चोटी से सूर्यास्त का दृश्य जरूर देखते हैं।" चौकीदार ने बता दिया कि बंगले के बिलकुल सामने से ही जंगलाती सड़क पहाड़ी तक जाती है।

पत्नी सुवह आठ मील पैदल चल चुकी थी। उसे संघ्या फिर पैदल तीन मील चढ़ाई पर जाने और लौटने का उत्साह अनुभव न हुआ परन्तु बेटी साथ चलने के लिए मचल गई।

चौकीदार ने आश्वासन दिया-"लगभग डेढ़ मील सीधी सड़क है

बोर फिर पहाड़ी पर अच्छी साफ पगडंडी है। जंगती जानवर इधर नहीं हैं। मूर्वोन्त के बाद कभी-कभी छोटो जाति के अडिये जंगल से निकत्त वार्त है। बेडिये भेट-कफरी के मेमने था भुगिया छठा ने जांते हैं, आदिमियो के सभीप नहीं आते।"

क्ष्मिम नहीं आते।"
में देरी को साथ लेकर सूर्योहन से शीन घटे पूर्व ही घोटी की ओर पर पड़ा शायधानी से लिए टार्च शाय से शी। पहाड़ी तक छेड मीत एता बहुत सीधा-साफ था। जढ़ाई की अधिक नहीं थी। पगड़डों से भौदी तक पड़ने में भी कुछ कटियाई नहीं हुई।

पहाद की बोटी पर पहुंचकर परिवम की और वर्णानी पहाडों की ये प्रावाएं फैली हुई दिलाई दी। क्षितिन पर टतरला मूर्य अरफ ने वकी पहाडों की रिक्त को छुने लगा तो क्यों-नीची, आगे-नीडे लडी हिमा-पणित पर्यत-प्रधानाए केलक इन्द्रावर्षों के नमान कलकाताने लगी। हिमा के स्कृतिक क्यों की बातरा रें पर रोग के विलयरा से मन उन्तर-वस्त करवा थी। वस्त करवा की की व्यादर के मन उन्तर-वस्त करवा थी।

मूर्योश्न के दूरव का मन्मीहन बहुत प्रबल था परंजु ध्यान भी था— रान्ना दिखाई देने योग्य प्रकाश में ही बाक-बमने के आती जीगलाडी सडक पर पहुंच जाना उचित है। अधेर में अमुविधा हो नकती है।

त्ये आँग की यही वालों के समान लग रहा गाँ। वह बाँमी बरक की पूर्व नहीं थी। आग की बातों के मूल रही थी। आग की बातों का साने-अने समान की बातों के मूल रही थी। आग की बातों का साने-अने जाता बहुन ही माने-हारी लग रहा था। हिस के अनम विस्तार पर प्रतिशाग राग बहुन रहे थे। बच्ची तम हम्य की बिस्सार में मूह स्मीन अराम देग रही थी। हुनार के समसान पर में सह पूर्व में समसान पर में रही याने में पहाँ सी माने हम हो नो में पहाँ की हम हो नो में पहाँ की साम हम साने में पहाँ की साम साने पर भी नह पूर्व मुझे के पहाँ ही भी हम हम हम नहीं हैं।

सहता सूत्रीक्त होते हो बोडी वी बरफ पर दशसन सीनिया फैन गई। यहाड़ी की घोटो पर बढ की जवास या पर हम ज्यों-ज्यों पूर्व को स्रोर नीचे उत्तर रहे वे, अधेस पना होता वा एए या। आरको की सन्- भव होगा कि पहाड़ों में सूर्यास्त का झुटपुट उजाला वहुत देर तक नहीं वना रहता। सूर्य के पहाड़ की ओट में होते ही उपत्यका में सहसा अंधेरा हो जाता है।

मैं पगडंडी पर वच्ची को आगे किए पहाड़ी से उतर रहा था। अव धुंधलका हो जाने के कारण स्थान-स्थान पर कई पगडंडियां निकलती-फटती जान पड़ती थीं। हम स्मृति के अनुभव से अपनी पगडंडी पहचान-कर नीचे जिस रास्ते पर उतरे, वह डाक-बंगले की पहचानी हुई जंगलाती सड़क नहीं जान पड़ी। अंधेरा हो गया था। रास्ता खोजने के लिए चोटी की ओर चढ़ते तो अंधेरा अधिक घना हो जाने और अधिक भटक जाने की आशंका थी। हम अनुमान से पूर्व की ओर जाती पगडंडां पर चल पड़े।

जंगल में घुष्पअंधेरा था। टार्च से प्रकाश का जोगोला-सा पगडंडी पर वनता था, उससे कंटीले झाड़ों और ठोकर से बचने के लिए तो सहायता मिल सकती थी परन्तु मार्ग नहीं ढूंढ़ा जा सकता था। चौकीदार ने आंचल में आसपास काफी वस्ती होने का आइवासन दिया था। सोचा — 'समीप ही कोई वस्ती या झोंपड़ी मिल जाएगी, रास्ता पूछ लेंगे।'

हम टार्च के प्रकाश में झाड़ियों से बचते पगडंडी पर चले जा रहे थे। बीस-पचीस मिनट चलने के बाद हमारा रास्ता काटती हुई एक अधिक चौड़ी पगडंडी दिखाई देगई। सामने एक के बजाय तीन मार्ग देखकर दुविधा और घवराहट हुई, ठीक मार्ग कौन-सा होगा? अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की अपेक्षा भटकाव का ही अवसर अधिक हो गया था। घना अंधेरा, जंगल में रास्ता जान सकने का कोई उपाय नहीं था। आकाश में तारे उजले हो गए थे परन्तु मुझे तारों की स्थित से दिशा पहचान सकने की समझ नहीं है। पूर्व दिशा दाई ओर होने का अनुमान था इसलिए चौड़ी पगडंडी पर दाई ओर चल दिए। आध घंटे तक चलने पर एक और पगडंडी रास्ता काटती दिखाई दी। समझ लिया, हम बहुत भटक गए हैं। मैंने नीधे सामने चलते जाना ही उचित समझ।

यान में यथेरा बहुत पना था। उत्तरी बागु नल गडने से सर्दी भी

गी हों में भी। अपनी पवराहट बच्ची में किशाए था। बच्ची भर्मभीनन

हें ने ना, दिर्माण, उसे बहुजाने के लिए और उसे क्लावट अनुभव न होने

दें के निए कहानी मुनाने ना पार पन्ता, बहुनाव पनानट को कितनी देर

प्रेमाए रखा। बच्ची बहुत थक गई थी। वह चल नहीं था रही सी। कुछ

गप उसे गीम्र ही बचले नर पहुच जाने का आवानान देन उत्पाहित

हम्मा और किर इसे बीठ पर उठा निया। वह में कही के उसर पहें सामने दार्च का प्रकार प्रवास का पहें थी। में बच्ची के बीम और पना-कर में हम्मा हुना अमान माने पर, अमान दिवा में चलता जा रहा था। मेरी सीट पर देंदी बच्ची सर्दे में किहर-पिहर उन्होंने थी और में हान् हित्स प्रवस्त्री को पहाडी पर लहा करने पड़ी देल लेना था। बिएक स्वास्त्र

एस सजाने जान के परे कार्ये में बाई घट तक चल चुने थे। मेरी पाड़ी में सांदे नी बज गए सो मेरा कर बुन चवराने लगा। बच्ची को बहुनती मुताकर बहुनाना मणक न रहा। वह जेयस में प्रदान जाते के मब से मा को बाद कर हुमक-दुमक कर रोजे सभी। बगले में बने मी, प्रवासी पत्ती के बिचार ते और भी प्यानुन कर दिया। मेरी हारों स्वावहर ने बात रही थी। वार्ये के तीर गम कर देता भी स्वावहर ने बात रही थी। वार्ये के तीर गम कर देता भी समझ में मा कर के तीर गम कर देता भी समझ नहीं पा। डोटे भीटेंग भी माद जा गए। बहु के मीग उन भीड़ मीम मही इनने में, पर छोटी में क्यों माय होने पर भीटेंग में भें दे की आपका में हता रहन जा बात प्रदा था।

हम जान से निक्तकर नेतों में पहुंचे तो हम अब पूर्व के। बुछ मैन पार कर पुने तो सारी में अनाम में मुछ दूरी पर एक सीमारी का आमान दिना। सीपरी में प्रकान नहीं था। बच्चों को पीठ वर उदान एनन-अर्ट तहों से में सीपरी को और दर्जन नेता। शोपटी के कुने ने हमारे उस और बढ़ने पर एनएज किया। बुत की नोध-मधे सनकार में मानना हैं। मिली। विश्वास हो गया, झोंपड़ी नूनी नहीं थी।

पहाड़ों में वर्षा की अधिकता के कारण छतें ढालू बनाई जाती हैं। गरीब किसान ढालू छत के भीतर स्थान का उपयोग कर सकने के लिए अपनी झोपड़ियों को दोतल्ला कर लेते हैं। मिट्टी की दीवारें, फूस की छतऔर चारों ओर कांटों की ऊंची बाढ़। किसान लोग नीचे के तल्ले में अपने पशु बांध लेने हैं और ऊपर के तल्ले में उनकी गृहस्थी रहती है।

मैं झोंपड़ी की बाढ़ के मोहरे पर पहुंचा तो कुत्ता मालिक को चेताने के लिए बहुत जोर से भोंका। झोंपड़ी का दरवाजा और खिड़की वन्द थे। मेरे कई बार पुकारने और कुत्ते के बहुत उत्तेजना से भोंकने पर झोंपड़ी के ऊपर के भाग में छोटी-सी खिड़की खुली और झुंझलाहट की ललकार सुनाई दी—"कौन है, इतनी रात गए कौन आया है?"

झोंपड़ी के भीतर अंधेरे में से आती ललकार को उत्तर दिया— मुसाफिर हूं, रास्ता भटक गया हूं। छोटी वच्ची साथ है। पड़ाव के डाक-बंगले पर जाना चाहता हूं।"

खिड़की से एक किसान ने सिर वाहर निकाला और क्रोध से फटकार दिया—''तुम शहरी हो न ! तुम आवारा लोगों का देहात में क्या काम ? चोरी-चकारी करने आए हो। भाग जाओ, नहीं तो काटकर दो टुकड़े कर देंगे और कुत्ते को खिला देंगे।"

किसान को अपनी और वच्ची की दयनीय अवस्था दिखलाने के लिए अपने ऊपर टार्च से प्रकाश डाला और विनती की—"वाल-बच्चेदार गृहस्थ हूं। चोटी पर सूर्यास्त देखने गए थे, भटक गए। पड़ाव के बंगले में बच्चे की मां हमारी प्रतीक्षा कर रही है, बंगले का चौकीदार वता देगा। पड़ाव के डाक-बंगले पर जाना चाहता हूं। रास्ता दिखाकर पहुंचा दो तो बहुत कृपा हो। तुम्हें कष्ट तो होगा, यथाशक्ति मूल्य चुका दूंगा।"

किसान और भी कोंघ से झल्लाया, "पड़ाव और डाक-वंगला तो यहां से सात मील हैं। कौन तुम्हारे वाप का नौकर है जो इस अंधेरे में रास्ता िति बाएगा। भाग जाओ ग्रहा से, नहीं तो कुले की अभी छोड़ता हूं।"

इड रिमान मुझे शोपडी की शिक्की में भाग जाने के लिए सलकार रहा था तो झोंगड़ी के कार के भाग मेदीया जल जाने ने प्रकाण ही गया था भीर वह दीसा निष्टकी की और यह आया था। दीय के प्रकाश में किमान भी घोटी पुंपरामी बाड़ी और लम्बी-लस्बी गामने भूकी हुई मुछों से इता पेट्रा बहुत भयानक और खुमार लग रहा था। जिस्की की ओर दीया नानेवासी क्वी की।

विमान की बान सुनकर मेरे प्राच मूल गए। समझा कि अपेरे में बहुत मरक गरा है। उस अपेरे, मदी और स्वान में बच्ची की ग्रहाकर सार भीम चम महता मेरे निम् मन्धर नहीं था। बच्ची ने बच्ट ने विचार में भीर भी अधीर हो गया।

बहुत गिर्दाग्रावार विमान ने प्रापंता वी- धाई, दया करी ! मै स्रोता होता तो जैसे तैसे बाहे और भाग 🖹 भी रात बाट रेटा बरम् इस बच्ची ना बदा होता है। हमपर ददा करें। हम नहीं मीपुर देए मार्च-मर की ही जगह दे थी। बजामा होते ही हम कर बार बार है।"

रिक्की के भीवर विमान के मधील का बीटी और ए का बीटा बेटना भी बिणान की नरह ही बहुण करना भीत नारोर था बरानु प्रगरी बाप से आप्रशासन विता । वची वाणी -- "अच्मा", अव्या १ प्रस्ते नाम वच्ची है । दूस नम्म बहाद नवा बेंगे बागमा है अने मी, बात हो ही बागमा ।"

दिसान क्षेत्र वह शुक्तवारा, " वरा ही बागूरा, बाग दिवा मेटी हाहे है

क्षार के लोग है, दलको सहसानकानी हमार कर को नहीं है "

क्की में रापर दिया-"मध्या-मध्या में ब माहर मुख्ने की रहारे,

काहे आहे ना हो !" हिलान के बॉब्ट आप र शायदी वर हरतादी शीरत है जाने पर बार्ट्सर

भा भरा दिया और हमारे लिए बार्ड बी बेरेना मोल रेटल । न्या थे हस्य के होता हिला की वे अर बहें की व दिवान और बुल्या नहीं के दिवान व Rhand tidels an of a figure some mobil and the pranch नवाव हैं सैर करनेवाले। चले आए आधी रात में रास्ता भूलकर। कहां टिका लेगी तू इनको ?"

स्त्री ने पित को समझाया—"वैचारे भटक कर परेशानी में आ गए हैं तो कुछ करना ही होगा। आने दो, यह लोग ऊपर लेट रहेंगे। हम लोग यहा नीचे फूस डालकर गुजारा कर लेंगे।"

किसान वड़वड़ाया—"हम नीचे कहां पड़े रहेंगे ? गैया को वाहर निकाल देगी कि मुर्गी को वाहर फेंक देगी ?"

झोंपड़ी के दरवाजे में कदम रखते समय मैंने टार्च से उजाला कर लिया कि ठोकर न लगे। कोठरी के भीतर दीवार के साथ एक गैया जुगाली कर रही थी। टार्च का प्रकाश आंखों पर पड़ा तो गैया ने सिर हिला दिया और अपने विश्वाम में विघ्न के विरोध में फुंकार दिया। दूसरी दीवार के समीप उल्टी रखी ऊंची टोकरी के नीचे से भी विरोध में मुर्गी की कुड़कुड़ाहट सुनाई दी। स्त्री ने हाथ में लिए दीये से दीवार के साथ वने जीने पर प्रकाश डालकर कहा—"हम गरीवों के घर ऐसे ही होते हैं। वच्ची को हाथ पकड़कर ऊपर ले आओ। मैं रोशनी ले चलती हूं।"

किसान असंतोप से वड़वड़ाता रहा। झोंपड़ी के ऊपर के तल्ले में छत वहुत नीची थी। दोनों ओर ढलती छत बीच में धन्नी पर उठी थी। धन्नी के ठीक नीचे भी गदंन सीधी करके खड़े होना सम्भव नहीं था। नीची और संकरी खाट पर गंदे गूदड़-सा विस्तर था। स्त्री ने विस्तर की ओर संकेत किया—"तुम यहां लेट रहो। हम नीचे गुजारा कर लेंगे।"

स्त्री ने कोने में रखे कनस्तरों और सूखी हांडियों मे टटोल कर गुड़ का एक टुकड़ा मेरी ओर बढ़ाकर कहा—"वच्ची को खिलाकर पानी पिला दो!" उसने कोने में रखे घड़े से एक लोटा जल खाट के समीप रख दिया।"

स्त्री दीया उठाकर जीने की ओर बढ़ती हुई बोली— "क्या करूं, इस समय घर में आटा भी नहीं है। सांझ को ही चुक गया। सुवह ही पन-चक्की पर जाना होगा।"

१८६ मेरी प्रिय कहानियां

स्त्री नीचे उत्तर गई। तब भी असन्तुष्ट किमान के बडबढाने की और

पुष्ठ उदाने-धरने की आहट बानी रही।

बक्की थोडा गुढ लाकर और जल वीकर तुरंत सो गई। मुसे ग्रमारे, गढ़े विम्नट से उक्काई अनुमब हो नहीं भी। अपनी अवृतिका सी विकास से स्थित किंदा थी —-बाक-मने से इनारी आंदाता से अमहाय पारीला है। हुत योगों के सक्षीद मकते के कारण वह कैंग्रे विमार रही होंगी। कहीं यहीं म सोच बेटो हो दि हम मिरियों या आतताचियों के हाथ पढ़ गए हैं। हमें सोजने के लिए दान-मनने के अपरामी की सेकर कोटी की ओर म बत पड़ी होंगी।

मस्तिष्य में बिना को बेदना और बीठ बदान से इननी अवाही हुई मी कि करवट मेंने में वर्ड अनुमब होता था। अवकी आनी सो घोट के दर्द और बिन्नन की अनुविधा के काम्य हुट जानी। कारवें बदाना मोच रहा सा— 'दास्ता दिकाई देने गोम उनामा ही सी उक्कर बन दें।'

रित्रहरी ही सामी से पी घटनी-भी बान पड़ी। सोचा - 'करा उजाला और हो आए। नीचे गोग गोगी ची नीड में दियन न बानने ना की स्वार सा। एक शायकी जीर ने जेना चाहण या हि नीचे से देशे-देशे पुरुष्टुसा-हट मनाई दी।

सर्व कर रहा मा—" ∵यहूनसके हुए हैं । सूरक वाग-भर पढ़ आएगा तब भी उनकी शीद नहीं टूटेसी !"

स्त्री माम के स्वर में बीजी - "तुरहे उन्हें बना के क्या मेना है ? · · · नहीं उठने तो में बाक्र है" "अच्छा जाता हूं !"

"आह! संभलकर । आहट न करो। "गर्दन ऐसे दवा लेना कि आवाज न निकले। "चीख न पड़े। छुरा ताक में है।"

स्त्री-पुरुष का परामर्श सुनकर मेरे रोम-रोम से पसीना छूट गया— हत्यारों से शरण मांगकर उनके पिंजड़े में वन्द हो गया था। सोचा— 'पुकारकर कह दूं ... मेरे पास जो कुछ है ले लो, लड़की के गले की कंठी ले लो और हमारी जान वख्शो।'

फिर मर्द की आवाज सुनाई दी—"वेचारी को रहने दूं, मन नहीं करता।"

स्त्री बोली--''उंह, मन न करने की क्या बात है! उसे रहने देकर क्या होगा! कहां बचाते-छिपाते फिरोगे?''

मैंने आतंक से नींद में वेसुध बच्ची को वांहों में ले लिया। भय की उत्तेजना से मेरा हृदय धक-धककर रहाथा। सोचा—उन्हें स्वयं ही पुकार, कर, गिड़गिड़ाकर प्राण-रक्षा के लिए प्रार्थना करूं, परन्तु गले ने साथ न दिया। यह भी खयाल आया कि वे जान लेंगे कि मैंने उनकी वात सुन ली है तो कभी छोड़ेंगे ही नहीं। अभी तो वे वात ही कर रहे हैं। भगवान उनके हृदय में दया दे। सोचा—'यदि किसान के ऊपर आते ही मैं जसे धक्के से नीचे गिरा कर चीख पड़ूं! …पर जाने आस-पास मील दो मील तक कोई दूसरे लोग भी हैं या नहीं!'

सहसा दवे हुए गले से मुर्गी के कुड़ कुड़ाने की आवाज आई। स्त्री का जपालम्भ-भरा स्वर सुनाई दिया—"देखों, कहा भी था कि संभलकर गर्दन पर हाथ डालना।"

ओह ! यह तो मुर्गी के काटे जाने की मन्त्रणा थी। अपने भय के लिए लज्जा से पानी-पानी हो गया।

स्त्री का स्वर फिर सुनाई दिया—"मुर्गी के लिए इतना क्यों विगड़ रहे हो ? शहर के वड़े लोगों की वातें होती हैं। खातिर से खुश हो जाएं तो विष्शीश में जो चाहे दे जाएं। मामूली आदमी नहीं हैं। लड़की के गले में मीरियों की कंठी नहीं देखी ?"

हुंगरी चित्रा और संज्ञा ने मह्लिध्क को दवा निया : उम समय मेरी रेर में केंद्रल द्वार्ट रुपने थे। वर्णन से मूर्जीस्त का दृश्य देखने आया था,

बाबार में शरीदारी करने के लिए नहीं। सहकी के बले में कठी नकती भीतियाँ भी, रपये-मधा नप्य भी थी । दीये के उजाले से ये देहाती कठी भी नेरा परम नवने में ? बहुन द्विधा में सोच रहा था -- इन सोगों को क्या देतर दूरा। बुछ देताल बिना चुपचाप ही कठी दे जाऊ । बाद में चार्माम-

'पवास रुपये मनीआहर ने भेज द्या।' गिहरी भी माधी ने बाफी संबंध हो गया जान पड़ा । सीच ही रहा था, महबी को जगावर माथे में अनु वि बोने पर कदमी की बाद मुनाई

री भीर शिगान का केट्टा क्यार उठता दिलाई दिया । विमान का बेहुना राज की आंधि निर्देश और इसावना न समा। यह

मुम्बराया -- "मीद खुल वर्द । में तो बतान के लिए बा रहा था। धूप ही माने पर बन्धी की इननी दूर ने बादे से परेशानी श्रीती :" विमान ने पुराने अपदार में रिप्ती एक बड़ी-मी बुढ़िया मेरी और बड़ा दी और कारा - "यह नो, यह भूरतार ही भाष्य के से । यर से आहा भी नहीं या का दा राटी बना देने इसीरिनण मी मैं मुख्दे रात में ही हारे दे बहु का पर क्षरबाचा का बचकी का लगा जा गया। में ने के किए क्यों जी बिक्सी है। अह बच्चन ही द्वान बन्द है। बन्दान में अन से पारी पहीती साश की सुनिया में बीमार्थी में भी हमारी मुक्तिया भी बार कई । मुक्तिया क्याने के जिल सभी बढ़ा दिया। पीर की देशका पर देश प्रमाण स्तियों को देश महापुर रिन्याया, अवकारी अध्यानन में हराई दी माकर ही दर प्रवण बन्द क्षा दश का, क्को अहै। इन बहु क्सी बड़े की बहु बहु स्ता बीपारी सेनवर की रचनदा बात प्रवद निर्मुद ब्रामा तनव हर्गी की कृती बान की जान के बकबर दिए कोंग के 'बह बचके वे फिल्

در المنابع الاط عندة طُوليدة فإ هناه هوا قاعداء وتسر عاسمة ود हिन्त् के बुद्धा हो बाद है है ही की बका - महरत ह सब हा.

चाहो तो नीच चलकर गुल्ला करके मुंह-हाथ धो लो और अभी खा ली। मन चाहे तो रास्ते में सा लेना।''

बच्ची की उठाया। उसने उठने ही भूख से ब्याकुलता प्रकट की। दोनों ने अखबार की पुड़िया खोलकर नाण्ता कर लिया।

पेट-भर नाय्ता करके में मंकोच से मरा जा रहा था। किसान और उसकी स्त्री ने बहुत आणा से हमारी खातिर की थी। अपने अन्तिम मुर्गा, चूजा भी हमारे लिए काट दिए थे। मैंने संकोच से कहा—"इस समय मेरी जेब में कुछ है नहीं, केबल ढाई रुपये हैं। अपना नाम-पता दे दो, मनीआईर से रुपये भेज दूंगा।" मैंने बच्ची के गले से कंटी उतारकर स्त्री की ओर बढ़ा दी —"चाहो तो यह रख लो!"

स्त्री कंठी हाथ में लेकर प्रसन्तता से किलक उठी—"हाय, इसे तो में मठ में चढ़ाकर मानता मान्गी। हमारी मुगियों पर देवताओं की कोप-दृष्टि कभी न हो।"

स्त्री की सरलता मेरे मन को छू गई, रह न सका । कह दिया—"तुम्हें घोखा नहीं देना चाहता, कंठी के मोती नकली हैं।"

स्त्री ने कंठी मेरी ओर फेंक दी। घृणा और झुंझलाहट से उंगिलयां छिटकाकर बोली—"रखो, इसे तुम्हीं रखो। शहर के लोगों से धीसे कें सिवा और मिलेगा क्या?"

किसान ठगे जाने से कृद्ध हो गया था, वह डाक-बंगले का रास्ता बताने के लिए साथ न चला। दिन का उजाला था। हम राह पूछ-पूछकर बंगले पर पहुंच गए।

पत्नी डाक-वंगले के सामने अस्त-व्यस्त और विक्षिप्त की तरह धरती पर बैठी हुई दिखाई दी। उसका चेहरा ओस से भीगे सूखे पत्ते की तरह आंसुओं से तर और पीला था। आंखें गुड़हल के फूल की तरह लाल थीं। वह बच्ची को कलेजे पर दवाकर चीखकर रोई और फिर मुझसे चिपट-चिपटकर रोती रही।

पत्नी के संभल जाने पर मैंने उसे रात के अनुभव सुना दिए। नात

मेरे और बच्ची के अमहाय अवस्था में याला काट दिए जाने के काल्पनिक भव में परीता-परीता होकर वापने की बात मुनकर उसने भी भय प्रकट किया---हाब में मर गई।' प्लीच ते चच्ची की कठी के लिए किमान स्त्री के सोभ और कटी वें विषय में सपाई आनकर उनके लिला हो जाने की बात भी बता थी।

सोचा--किस भूम के लिए अधिक सज्जा अनुमय करू--कास्पनिक भय में पसीता-पसीना हो जाने की भूस के लिए या मच बोन देने की भन

पत्नी ने सुसे उलाहनादिया—"उनदेहातियों को कठी के बारे में बता तिल करने की क्या जरूरत भी कठी सठ में घडाकर उनकी भावना मंतरद हो जाती।"

• के लिए ! '

खच्चर श्रीर श्रादमी

प्रत्म के जीवन के उन्न में दिल्ली और उसके आसपास ही दीते किए उत्तर उत्तर के मान का अवगर गही हुआ था। हिमपास ही दीते अच्छी वर्फ पड़ जाती है। वो दिन, रात में अनेक वार जोर का हिमपास वैस सकते हो गया। टेड्ड्से पुट बरफ गिर जाने पर हिमपास रज़ेर का हिमपास किम न किम-दर्जन से अधा गया। वह वर्फ में जूता हमपास वर भीत से तिहरन अनुभव करने लगा। भीत, चमड़े के कोद को भी वेध- आर्थव के किन्द्र के कोट को भी वेध-

भागंव ने मित्र के स्वागत में कमरा गरम करने के लिए विजली के सुलगवा दिए थे। खूब अच्छी लपटें उठ रही थीं। भागंव ने सोफा अंगीठी में काठ के जुंदे के समीप खींच लिया। दोनों जोफे पर बैठ गए और सिगरेट सुलगा लिए। के सामने बैठ लेने पर भी उसे झुरभुरी अनुभव हो जाती और मुख से विकल जाता—ओफ भयंकर सदी है।



"पहीं गर्दी है ? अच्छा-भना गरम कमरा है।" भागेव ने जीशा से पर दिया-- "मुन्दे अप्यास नहीं है वर्गी समस्य से अधिक सर्दी नहीं होती।"

पारंड गत पांच बयों में हेमान गियमा में ही दिवाता है। बहु वृग्नमें मेरेशम दिधान के खीनत अनुवाधान दम में है। इस दम के मीना वा बय पेता गाम मचुर नम से बीन हमार चुट कमें हिमादा ब्यानी में खीन-बार वारणा होता है। मेरन गान हमार चुट कमें शिमाद की मार्टी हमें गिए वार्च मोड़ा है।

"मार्च गाड "" तूम्य न बानन घनट विचा--"यह बच नहीं, है शिट विन्ते गार्ची होते? " जूम्य न नहीं च महत्त्व व धार्मव के दिश्य अह-अब एन्टेन के तिए एसे दव गांगा कि एन बमुख्या की मुन्दा में उत्तय अह-अब हानी गार्ची की अन्य गांवे.

आरोव में जिस का स्वीयास समासका उत्तर विद्यालन स्वायायक नहीं त्यों है जात हवत पुत्र में जात व सारा करते पत्र के नार्य है के स्थाप कर हा कई दिना के पुत्र करिया, विद्यालन कर नार्य प्रदास कर किया है। में प्राया प्रदास को पत्र में तो में नार्य नार्य विद्याला नीर्य मनार्थ मेरी प्रयास दिना नीर्य के तमनीर्य प्राया जाता की विभागी कीर की विद्याला किया की है।

करा मेर्ड का करा, जारा करेत्रह दिया है, बेडक से क्रेस राजिय को है हिमा हरिय का है है

र बाद मानवा कारत, का तथा देशक सका है। रूप प्राची के अवस्थित का

्र १६ १ वर्ष में के निर्मुणिय की कात बावण किया आह्म प्रकृत है इस अनुसर के बुध्य कार्य का मानों के बी प्रवासन है का अन्य स्थान की मूर्ग माने के पुरान कार्य कार्य की माने की प्रवासन है का निष्कुत स्थान की माने कार्य के बुध्य की माने की माने की माने बात की कार की कार की मीन कार्य के बुध्य की माने की माने की माने की माने की माने की

१६४ मेरी प्रिय कहानियां

सूचना ब्राडकास्ट की जाती है मनाली से। मनाली है समुद्र तल से पांच-छः हजार फुट की ऊंचाई पर। हमें विश्लेषण के लिए नमूने लेने थे वारह हजार फुट की ऊंचाई पर, चट्टानें फोड़कर। हमारा कूच का पड़ाव दस हजार फुट पर था। लक्ष्य तक रास्ता पांच मील से अधिक न था। सदा वर्फ से ढकी रहनेवाली चौदह हजार फुट ऊंची एक धार को ही लांघना था। धार को लांघने के लिए केवल एक दर्रा है वह भी तेरह हजार फुट नीचे एक बहुत छोटा-सा मैदान है। वहां आयुध-महत्त्व (Strategic Importance) के एक पदार्थ के अनुमान में बरमा चलाने का विचार था "'

"वह पदार्थ मिला ?" पूरण टोक बैठा।

"नहीं, तीन वर्ष पूर्व वहां फिर यत्न किया गया था। वह अनुमान ठीक न था।" भागव सिगरेट सुलगाने लगा।

"खैर, अपना अनुभव सुनाओ ?"

भागंव लम्बा कश लेकर वोला—"विचार था, धार के पार मैदान में सात-आठ दिन से अधिक ठहरना आवश्यक न होगा। कूच-पड़ाव के लोगों ने सलाह दी - खच्चरों के लिए ऊपर घास-दाना ले जाना जरूरी नहीं है। वहां इस मौसम में पशुओं के लिए वहुत अच्छी पौष्टिक घास मिलेगी। जरूरी समझें तो थोड़ा-वहुत दाना उनके लिए ले जाइए। विकट चढ़ाइयों पर बोझा ढोने से बचने का प्रलोभन भी रहता है।

"नये स्थान पर सूर्यास्त से जितना पूर्व पहुंचा जा सके अच्छा रहता है। सूर्य का प्रकाश रहते स्थान को समझने और अनुकूल बना लेने में सुविधा रहती है। ग्रुप लीडर ने तड़के कुछ अंधेरा रहत नाश्ता दिलवा दिया। यंत्र, राशन और तम्बू छः खच्चरों पर लदवा दिए और हम दस शिरपाओं को साथ ले, पौ फटते-फटते चल पड़े। खच्चरों के लिए दाना नौ-दस बजे तक मिलना था। शेरपाओं का मुखिया अपने शेप छः खच्चरों के साथ पीछे रह गया कि दाना मिल जाने पर बड़ी बरमा मशीन और मशीनों के लिए ईधन लेकर हमारे पीछे आ जाएगा।

"हमारे धार का संकरा दर्रा साढ़े ग्यारह बजे पार कर लिया । मौसम

परवार ने उत्तर-विर्माण आवाज मात नहने वा आरंगानन दिया था। व्यान मंगी में भी हो जीन ननाई तह कर्य-नानी वो आपना नहीं भी पर्यान के प्रीमान के उत्तर ही पाए में कि उत्तर-विर्माण में भार में प्रीमान के उत्तर ही पाए में कि उत्तर-विर्माण में भार में प्रीमान के उत्तर होना हो अवनार दिया कि हम दिन्द के विनाद उत्तर ने में दिन्दा हो प्राप्त में भी नाइ के में ताइ वहें करने में दिन्दाओं वा हाय ने बटाने ना ताब भी नाम परि क्षा के प्राप्त में में प्राप्त में प्राप्त में मान के निर्माण के में प्राप्त में प्राप्त में मान के मान के निर्माण के में प्राप्त में मान के निर्माण के मान के मान के मान के मान के मान के

यार के यह ओर म हिंदे होने तो भी गीचे आहे. देरदान्यों भीन सम्मारी में लिए इसी मारवार और मैदान तब प्राप्तण हुगाराया हो नया होगा न हुएने-यूच देर परवार मोनी भी पूर्ण के आमरी-मार्ग के प्राप्त न प्राप्त कुछने-यूच देर परवार मोनी भी पूर्ण के आमरी-मार्ग के प्राप्त भी होगा तह उन गीद बारव देश होगा । मार्ग वापा देश होगा के मुख्य हमार मार्ग महिला के प्राप्त के प्राप्त भी होगा तह के देश वापा वे मार्ग की मुख्य हमार मार्ग के भी गार्ग के एक्सा न हुन मार्ग तम देश विचार का हमार्ग की मार्ग के मार्ग के स्था हुन देशानी स्था मार्ग न प्राप्त के स्था निया का हमार्ग की मार्ग के मार्ग के स्था हुन देशानी स्था मार्ग के स्था हमार्ग के स्था कर हमार्ग के स्था के स्था हमार्ग के स्था कर हमार्ग के स्थान स्था हमार्ग का स्था हमार्ग के स्था हमार्ग के स्था हमार्ग के स्थान स्थान हमार्ग के स्था हमार्ग के स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान हमार्ग के स्थान स्था

स्पर दुन्ने सम्बद्ध अपने तातु व दिशालका कार वाण वहिके हु स्वर तातु द्वा बार अपने के बावा दिशके के अपना वहिक हुए का तातु देव बार अपने के बावा दिशके के अपने के दिशके के त्या देव पूर्ण का बच्चे के वाणा जा र वैहान के बार अरेट स्थाप पर प्रो बच्चे का बीचे के प्राच के हिंद को बच्चे कार अरेट स्थाप पर स्वरूप अरो के बुद्ध के पर बार के हिंद को बच्चे कार कर देव हुई है। स्वरूप अरो के बुद्ध की पर हो हैं पूछ वाणी बार स्वरूप के कारण के प्रोच

१६४ मेरी प्रिय कहानियां

सूचना ब्राडकास्ट की जाती है मनाली से। मनाली है समुद्र तल से पांच-छः हजार फुट की ऊचाई पर। हमें विश्लेषण के लिए नमूने लेने थे बारह हजार फुट की ऊचाई पर, चट्टानें फोड़कर। हमारा कूच का पड़ाव दस हजार फुट पर था। लक्ष्य तक रास्ता पांच मील से अधिक न था। सदा बफें से ढकी रहनेवाली चौदह हजार फुट ऊंची एक धार को ही लांघना था। धार को लांघने के लिए केवल एक दर्रा है वह भी तेरह हजार फुट नीचे एक बहुत छोटा-सा मैदान है। वहां आयुध-महत्त्व (Strategic Importance) के एक पदार्थ के अनुमान में बरमा चलाने का विचार था ""

"वह पदार्थ मिला ?" पूरण टोक वैठा।

"नहीं, तीन वर्ष पूर्व वहां फिर यत्न किया गया था। वह अनुमान ठीक न था।" भागव सिगरेट सुलगाने लगा।

"खैर, अपना अनुभव सुनाओ ?"

भागंव लम्बा कण लेकर बोला — "विचार था, धार के पार मैदान में सात-आठ दिन से अधिक ठहरना आवश्यक न होगा। कूच-पड़ाव के लोगों ने सलाह दी — खच्चरों के लिए ऊपर घास-दाना ले जाना जरूरी नहीं है। वहां इस मौसम में पशुओं के लिए बहुत अच्छी पौष्टिक घास मिलेगी। जरूरी समझें तो थोड़ा-बहुत दाना उनके लिए ले जाइए। विकट चढ़ाइयों पर बोझा ढोने से वचने का प्रलोभन भी रहता है।

"नये स्थान पर सूर्यास्त से जितना पूर्व पहुंचा जा सके अच्छा रहता है। सूर्य का प्रकाश रहते स्थान को समझने और अनुकूल बना लेने में सुविधा रहती है। ग्रुप लीडर ने तड़के कुछ अंधेरा रहते नाश्ता दिलवा दिया। यंत्र, राशन और तम्बू छः खच्चरों पर लदना दिए और हम दस शेरपाओं को साथ ले, पौ फटते-फटते चल पड़े। खच्चरों के लिए दाना नौ-दस वजे तक मिलना था। शेरपाओं का मुखिया अपने शेप छः खच्चरों के साथ पीछे रह गया कि दाना मिल जाने पर बड़ी बरमा मशीन और मशीनों के लिए ईधन लेकर हमारे पीछे आ जाएगा।

"हमारे धार का संकरा दर्रा साढ़े ग्यारह बजे पार कर लिया । मौसम

भेरतार ने उत्तर-महिष्य में आवारा माफ नहने वह आर साम दिया था ।
वार्तीय नोगों को भी दो-मीन मण्याह नक सर्व-मानों को आगवा नहीं भी
निर्में हैं कहें में देशन में उत्तर हो गाए थे कि उत्तर-महिष्य को आह से
हैं में देशन के उत्तर हो गाए थे कि उत्तर-महिष्य को आह से
हैं माने को बाद करने के से हर बाद को में हर ना हो अनवह दिवा कि हम मुद्दे गाई में
हैं माने के विनादे अभा ज्यान देशनय हात्र न्या को अ विद हम मुद्दे गाई है सेत तह पूर्व कारों में एरणाओं का हात्र मंत्र को मान बहु भी न ना मों होते हमादे तह ना हो शाए थे कि स्वयन बहु के आंगा बराने साम है। भीने हमादे नेदी ने और हमने बादमा के लिए कि कह जिल्ला का हात्र । अभी मान ने हमा में हात्र के बी किया हो हमा साम्य हुई, जो में दहि की हमादे में स्वयन के साम हमादे हमा के साम हो की का स्वयन के साम हमादे हमादे

दात और कामत बहुत होगा। है अब बहुए वे मार्गन की गुम्मा मान्य महित थी। हारा हर हु बन बहुए देंदर के बहुए कोम की मूहा भी जीवतु कर देंदर भी गा की एं अन्य हुए मार्ग पह में बहुद रहे का पात है। हार बिटिया की मुझे कामता हो गा है। पुराव के मार्ग्य का हुए हुए आगरे में बारा हुआ देवारी का स्थाप पुराव के पार पात की कामता कार्यों में बहे में बार हुआ देवारी का स्थाप

पाप्त रहा प्रदेश क्षेत्र कार्य के स्वतंत्र में पित्र कार्य के देश हैं के स्वतंत्र में प्रदेश कार्य कार्य कार्य के स्वतंत्र में प्रदेश कार्य कार

सूचना ब्राडकास्ट की जाती है मनाली से। मनाली है समुद्र तल से पांच-छः हजार फुट की ऊचाई पर। हमें विश्लेषण के लिए नमूने लेने थे वारह हजार फुट की ऊचाई पर, चट्टानें फोड़कर। हमारा कूच का पड़ाव दस हजार फुट पर था। लक्ष्य तक रास्ता पांच मील से अधिक न था। सदा वर्फ से ढकी रहनेवाली चौदह हजार फुट ऊंची एक धार को ही लांघना था। धार को लांघने के लिए केवल एक दर्रा है वह भी तेरह हजार फुट नीचे एक बहुत छोटा-सा मैदान है। वहां आयुध-महत्त्व (Strategic Importance) के एक पदार्थ के अनुमान में बरमा चलाने का विचार था '''।'

"वह पदार्थ मिला ?" पूरण टोक वैठा।

"नहीं, तीन वर्ष पूर्व वहां फिर यत्न किया गया था। वह अनुमान ठीक न था।" भार्गव सिगरेट सुलगाने लगा।

''खैर, अपना अनुभव सुनाओ ?''

भागव लम्बा कश लेकर वोला—"विचार था, धार के पार मैदान में सात-आठ दिन से अधिक ठहरना आवश्यक न होगा। कूच-पड़ाव के लोगों ने सलाह दी – खच्चरों के लिए ऊपर घास-दाना ले जाना जरूरी नहीं है। वहां इस मौसम में पशुओं के लिए बहुत अच्छी पौष्टिक घास मिलेगी। जरूरी समझें तो थोड़ा-बहुत दाना उनके लिए ले जाइए। विकट चढ़ाइयों पर बोझा ढोने से बचने का प्रलोभन भी रहता है।

"नये स्थान पर सूर्यास्त से जितना पूर्व पहुंचा जा सके अच्छा रहता है। सूर्य का प्रकाश रहते स्थान को समझने और अनुकूल बना लेने में सुविधा रहती है। ग्रुप लीडर ने तड़के कुछ अधेरा रहते नाश्ता दिलवा दिया। यंत्र, राशन और तम्बू छः खच्चरों पर लदवा दिए और हम शेरपाओं को साथ ले, पौ फटते-फटते चल पड़े। खच्चरों के निनी-दस वजे तक मिलना था। शेरपाओं का मुखिया अपने शेर के साथ पीछे रह गया कि दाना मिल जाने पर बड़ी कर मशीनों के लिए ईधन लेकर हमारे पीछे आ जाएगा '

"हमारे धार का संकरा दर्रा साढे ग्यारह बजे

निगरिर थे। उस मध्य शब्बरों के नम्बू से विविध्य नमाधार मिना कि ए. यास्त भूत से बसहून होत्तर हुतरे सम्बद्ध को बाटने के निए रुपर राज्य और उसने अपने समीय के व्यथम वा बात तोस्कर गा गिसमा!

'बिनिय रे' भूरण में दोवा, ''योडेन्डरूपरें। के मानाहार की बात मी कभी मही भूती रे''

"वर्तो रहा है, विकित्र समाचार मिला । " भागीर अवगर पावर नेपा निगरेट गुल्याने सक्षा ।

पूरण हम दिया, ' अरे आप लाग अपने पाणनाय में ही वेबारे गावनारी

को क्छ दे देते।"

"मानी, हमानी सरेशा बर वर्ग सी पान सहसूच मां और रूप नामी सार्प दिन में मानन ने गुन सम्बद्ध का बेह तक सर्थ मी व स्थाप है।

भारत में में बल हरी थ करता

प्रमुख क्षेत्रहें द्वाराया के देशने की प्रेमा बागू द्वारणा की कान दी है एमें है ब्रामामुद्दी की बारे बेटाया द्वारम्य है जिंद कान है। पार्ट ने प्रमुख कर है। बार का दीन का के प्रमुख जो स्वस्तार हिए का है। पार्ट ने प्रमुख कर है। बार का दूरी है कुम्मा प्राप्ट के कामा दिवार कहाना है को प्रभा के हैं।

ा कार्यास हरदह के देश भाग है बाब कार्याद्यम के देश भाग

१६८ नेरी प्रिय कहानिया

रहता है। हमारा राणन स्टाक मोलह दिनतक चल सकता था। ग्रुप लीडर ने आदेश दे दिया कि राशन इस तरह सर्च किया जाए कि कम से कम चार दिन और चल सके। पैराकीन भी कम जलाया जाए, सांझकी चाय बन्द कर दी जाए। इस ख़याल से कि हमें कम खाने का ध्यान रखना है, सर्दी और निवंतना अधिक अनुभव होने लगी।

" छटे दिन धूप निकल आई, परन्तु दर्ग वर्फ भर जाने के कारण अलंघ्य हो चुका था। एक दिन बाद एक और ख़क्चर भूख से लड़खड़ाकर गिर पड़ा। मांमाहारी बन जानेवाला ख़क्चर तब तक पहले ख़क्चर को समाप्त कर चुका था। वह मांसाहारी पड़ाओं— दोर-चीतोको तरह ख़क्चर के णरीर के पंजर को तो तोड़ नहीं सका था, ऊपर से जितना मांस खा सकताथा, खा गया था। उसके लिए और आहार हो गया। आठवें दिन से दोप ख़क्चर गिरने लगे। मांसाहार अपना लेनेवाला ख़क्चर उनसे निर्वाह करता रहा। ख़क्चरों के शरीर भूख से सूख गए थे, उनमें मांस ही कितना था!

"छः दिन अच्छी धूप लग जाने से ढालों पर जगह-जगह वर्फ पिघल गई थी, परन्तु दर्रा अलंध्य ही था और मैदान पर भी वर्फ की चार इंच गहरी तह मौजूद थी। दर्रे के दाहिने कुछ अन्तर पर स्थान शेष धार से नीचा था। हम लोग दूरवीनें लेकर उस स्थान के विषय में विचार कर रहे थे, इस वर्फ की थाली में भूख से जम जाने की अपेक्षा मुक्ति के प्रयत्न में मरना ही वेहतर होगा।

"गत संघ्या ओले का वादल फिर दिखाई दिया। गनीमत कि तेज हवा ने उसे उड़ा दिया परन्तु ऐसा वादल किसी समय भी वरस सकता था। मौसम के विचार से ऐसी आशंका प्रतिदिन वढ़ रही थी। उससे पहले एक वर्ष पूर्व हम सबह हजार फुट की ऊंचाई तक चढ़ चुके थे। धार चौदह हजार फुट ही थी, वह दुर्लंघ्य हो गई थी। वर्फ ताजी और कच्ची होने से ऐसे स्थानों पर खच्चर या दूसरा पशु नहीं चढ़ सकता। वहां गित संभव है तो केवल मनुष्य की, वयोंकि मनुष्य केवल शारीरिक शक्ति से काम नहीं लेता, उसकी मामध्यं सोच सकने मे भी होती है।

" हम लोगो ने प्रथ लीहर के सामने प्रस्ताव रखा - 'सभव है क्य-पशव में लोगों ने हुमें समाप्त मानकर हमारी खोज व्यर्थ सप्रस ली हो। यहा मध्नरो की तरह भूले मर जाने से बेहतर है कि हम लोगों में से दी आदमी दरें के समीप, नीचे स्थान संधार लायने का गतन करें और उस और समाचार दें। वह स्यान सवा मील से दूर न होना। यदि हम लीग तीन घटे में धार के उस पार न हो सके तो लौट आएमे।

" प्रप लीहर ने प्रस्ताव स्वीकार न किया । वह इतने यहन से सधाए हुए और विशेषज्ञ लोगो को यथानमब जोशिम में बालने के लिए तैयार म था। उनने हमें स्थाद दिया कि इस कास के लिए देरपा लोगों को, मुह-मागे इनाम का आक्ष्यामन देकर उत्माहित किया जाए । दीरपा हमें माथ सिए धिना चलने को तैवार न थे।

" ग्यारहवे दिन नया सकट लडा हो यथा। सामाहारी श्वरूपर सुदाँ रावनरों की समाप्त कर पूथा था। यास पर अब भी दच-हेत इंच कही सर्फं की तह थी। मामाहारी वन गया गरपर अब भूख से व्याकृत होकर

आदमियो पर लपट रहा था। धेरपाओं ने कहा कि उसे गोली मार दी जाए बनों वह आदमियों को गिराकर ना जाएता।

" प्रवासी इर ने खब्बर को योसी मारने की अनुसनि न दे आदेश डिया- 'इसके बाबे सुमी में बधन हान दिए जाए । यह सरातार खाता एहा है। अभी शीन-बार दिन मरेगा नहीं। यूप रही को इंगे दो दिन बाद यान जिल जाएकी ।' उनने हमें अपना अभियाय बनाया-'वीछे पहाब पर हरा मेट बहुन भरोगे लायर आदमी है। समब है, उमें श्वान हो हि हमारे लाम अभी चार दिन का राजन है, दमसिए अपने आदमियों की कच्ची बर्फ में धमाने का जोनिय टान रहा हो। चार दिन की ग्रुप बरन महादक हो सदनी है। बहु उस दिन दोपहर बाद तक न कादा तो हम आगामी पातः भगकान परीमें धार की लायने का द्वान करेंगे ही परम्नू हो गुक्ता है इस बीच मौनम किर घोछा दे बागु, हमें डी-नीन या चार दिन यहा करना पड़ जाए। उस समय यह सक्तर हमारा भोजन बनेगा। इसका सास पानों के लिए काफी देशन की जरूरत होगी। उसके लिए पैराफीन बनाओं, उन्हों में बन्द राशन गरम करने की जरूरत नहीं। केवल नाहते के समय एक-एक प्याला कॉफी बनाई जाए '

' ध्रा दो दिन गूच अच्छी पड़ी। भैदान में जगह-जगह घास प्रकट हो गई। यच्चर को घान की ओर छोड़ दिया गया। वह लहक-लहककर घास ग्रा रहा था और टीनों में जमा राजन निगल-निगलकर झुरझुरी अनुभव कर रहे थे। प्रत्येक दिन पहाड़ हो रहा था। मन चाहता था, धार को लांघने के प्रयत्न मे ही प्राण चले जाएं और ऐसी यातना समाप्त हो।

"सोलहवें दिन हम लोगों ने ग्यारह वजे से ही धार की ओर दूरवीनें लगा लीं। दर्रा अव भी अलंध्य था। हम लोग उसके समीप धार पर नीचे स्थान की ओर ही देख रहे थे। तीन भी वज गए तो ग्रुप लीडर ने निराशा से कह दिया— उन लोगों ने अनुमान कर लिया है कि हम वर्फ में दव चुके हैं। 'यह कुछ मिनट दूरवीन से धार की ओर देखता रहा और फिर वोला— 'लेकिन मेरा अनुरोध है कि दो दिन और ठहरा जाए। उन लोगों की प्रतीक्षा में नहीं, केवल इसलिए कि दो दिन की धूप से,' उसने धार पर एक स्थान की ओर संकेत किया— "वहां से जाने में जोखिम कम हो जाएगी।'

"हमारे लिए उस सर्दी और यातना में दो और दिन विताने की कल्पना असहा थी। दो साथी उतावले हो गए—'हम यहां खाएंगे क्या? दो दिन भूखे रहकर उस धार पर चढ़ सकने का सामर्थ्य रहेगा?'

"'इसी समय के लिए तो वह खच्चर है।' ग्रुप लीडर ने उत्तर दिया—'अव उसका क्षण आ गया है। चलो, उसे समाप्त कर दें ताकि प्रकाश रहते उसे उधेड़ा जा सके।' वह रिवाल्वर लेने के लिए तम्बू के भीतर गया और हमें घार की रीढ़ पर, दरें के पास दो शेरपा दिखाई दे गए।"

पूरण किलक उठा-"व्हाट लक ! खच्चर वच गया !"

"तक नेमा ?" मार्गव ने पूछा —"शेष खन्नरों को क्या हमने गोली भार दी भी ? उस खन्नर ने स्थिति के लिए प्रयत्न किया, वच गया।"

"परन्तु सच्चर मासाहारी नहीं होते," पूरण ने शागह किया — "यह बात अग्राइतिक थी।"

"अप्राकृतिक ?" मार्थव के माथे पर नेवर भा गए, "वसा गृद्धि के भारम से जीतों के इस और अप्रकृत सदा गृक्ते ही रहे हैं जीव अस्तित्वर-सात के तिल् माकाहाणे से मासाहाणे और मासाहाणी में मास्त-हारी बनने रहे हैं। इनना ही नहीं, वे अतबस्त से अस्त्रस्त अर्थन सम्बद्ध कर के प्राप्त पत्री अस्त्रस्त नेव वेन गए। जो जीव दिवाल-अनुकृत अप्रकृत नेव स्त्राम्यों में मिलेंगे। औरों सा अस्तित्व निद्ध से प्राप्त र अन्तर प्रवाद मार्था में मिलेंगे। औरों सा अस्तित्व-स्ता के प्रयोजन से दिवाल-अनुकृत आप्रकृत में प्राप्तित है।"

"तय बात विचित्र चरूर है।"

"विचित्र बात मुनना चाहते हो ! वह भी मुनाना हूं।" भार्यव नया

मिगोट मुलगाकर मुलाने कला—
"वह नेरे ट्रीनम पीरियह की मानहै। हम लोग 'कवनवमा' वो धारों
में थे। उस नमस भी हमारा केंग्य वस हवार पुट वर हो था। हमारा हेन्य एक जस्त था। हम लोग मान माउटीनदिया के निए कैंग्य से माने तीन इंडार पुट और कपर गए थे। तीटने नमस भारी वर्षों होने तागे। उस वर्षों में सक्तरों और हुउता वेशे नगामा में बीनी, पर-पार देव करने उदरात पदा। मूर्यान के बाद ही कैंग्य से पूर्य गर्छ। वशो हों। बीहि मोदे, उसी, सरप्यक कपहें हों ते वर भी हवा में नाय वागी मच्या पा पा। देटी सीचने पर वानी पत्तन्त में से बहु माना था। व्यति हों। हो सि

"बैन्द में सीटने पर हेनर ने आईर विमा - 'सब श्लोस पूरे बचने उतारनर परों को रजाइनों के भैनों में मुन्तर बार-बार पूट बारों निमन्त से और गरीर को हाचों से बिनना रत्या को सन से से !

२०२ मेरी प्रिय कहानियां

"हमारे ग्रुप में दक्षिण के एक कर्मकाण्डनिष्ठ परम वैष्णव ब्राह्मण भी थे। दूसरों के सामने निर्वस्त्र हो जाना उन्हें स्वीकार न था। वे भीगी विनयान, कमीज और पतलून पहने ही रजाई के थैले में घुसे। परम वष्णव व्यक्ति थे, ब्रांडी भी उन्होंने नहीं पी। जाड़े के मारे चेहरा भी थैले में कर लिया। दूसरे दिन सबके उठ जाने पर वे नहीं उठे। पुकारने पर भी उनकी नींद नहीं टूटी तो कॉफी का प्याला देने के लिए थैले का मुंह खोलकर देखा गया, उनका मंह खला था।"

"वैष्णव विष्णुलोक सिधार गए?"

"सीधे।" भागव ने सिगरेट से लम्बा कश खींच लिया।

"खैर!" पूरण ने विद्रूप से सराहना की—"अपना धर्म-विश्वास तो नहीं छोड़ा।"

भागंव का होंठों की ओर सिगरेट ले जाता हाथ रुक गया—"धर्म-विश्वास क्या, संस्कार कहो ! देख लो, खच्चर ने स्थित समझकर आत्म-रक्षा कर ली और संस्कारों से बंधा मनुष्य स्थित अनुकूल-आचरण नहीं। कर सका।"

पापा की अव बेनना में रिटायर ही जाने के डेड-दी वर्ष पूर्व से ही बिन्ता निर उठाने लगी थी--रिटायर ही जाने पर अवशाश का क्षेप्त भैंसे मंत्रलेगा ? अपनी द्वन चिन्ना का निराकरण करने में लिए प्राय. ही **ब**हने संगो---शोग-वाग रिटायर होकर निरत्नाह वर्धों हो जांत है? सोथिये, नौकरी करने समय अवकाश के दिन क्लिन व्यादे लगने हैं। गिन-शिवकर अवकाश के दिनों की प्रवीशा की जाती है। जब दीर्घ श्रम के पूर-स्वार से पर्ण अवकाण का अवगर का जाए तो निरुत्साह होने का क्या कारण ? इसे ही अपने थम का ऑजन फल मानरूद, उनगे पूरा लाभ उदाना और मनोष पाना चाहिए। अनाव होगा या भूवित मिनेगी बेचन मजबरी है, सपुटी की मजबूरी में। आराम और अपनी इच्छा है अस करते से ही बोर्ड बाधा नहीं बालेगा । बाजदन का मनवाहा जनमर होगा और यर-आदेश में मुस्ति । इसमें बड़ा मंत्रीय दूमना बरा चाहिए?

पाता के मन में मुताये और जुन्मी में या बहिए बूडे और चुन्नों ममले जाने के समा बिर्मान नहीं है। दिशावर होने पर विजय्यायता के दिवार से तीमतो में पहांट जाना छोड़ दिया है। तेमन के मध्य पीता में स्वीते हैं। होने सहीते हिम्म स्टेमती पर एह मेंने का बहुत कोड़ पा । बहिन्स नहीं सो हमरे क्ये अवस्य पहांट आते थे। एहक बाते ती जाहरों पर मुख्या से चल सकने के लिए एक-दो छड़ियां जरूर खरीद लेते और हर वार नई छड़ियां खरीदते। परन्तु लखनऊ लौटने पर वाजार या सैर के लिए जाते समय छड़ी उनके हाथ में न रहती। कभी स्वास्थ्य का विचार आ जाता या शरीर पर मांस अधिक चढ़ने की आशंका होने लगती तो सुवह-शाम तेज चाल से सैर आरंभ कर देते। प्रात: मुंह-अंधेरे मैर के लिए जाते समय अम्मी के सुझाने पर कुत्तों या ढोर-डंगरों से सावधानी के लिए छड़ी हाथ में होने पर भी उसे टेककर न चलते थे। छड़ी को पुलिस या सैनिक अफसर की तरह, वेटन के ढंग से, हाथ में लिए रहते। छड़ी टेककर चलना उनके विचार में बुढ़ापे या बुजुर्गी का चिह्न था।

पापा का कायदा था कि संध्या समय टहलने के लिए अथवा शापिंग के लिए भी जाते तो केवल अम्मी को साथ ले जाते थे। वच्चों को साथ ले जाना उन्हें कम पसन्द था। अन्य वच्चों की तरह हम लोगों को भी अम्मी-पापा के साथ वाजार जाने की उत्सुकता वनी रहती थी। वाजार में हम वच्चे कोई भी चीज मांग लेते तो तिनक ठुनकने से ही मनचाही चीज मिन जाती थी। वाजार में पापा हम लोगों को डांटते-धमकाते नहीं थे। उन्हें वाजार में तमाणा वनना पसन्द नहीं था। इसलिए अम्मी और पापा वाजार में तमाणा वनना पसन्द नहीं था। इसलिए अम्मी और पापा वाजार जाने के लिए तैयार होने लगते तो हम लोगों को नीकर या आया के साथ इधर-उधर टहला दिया जाता। वच्चों को वाजार ले चलने की अनिच्छा में संभवतः पापा की वुजुर्ग न जान पड़ने की भावना भी अव-चेतना में रहती होगी।

पापा ने अवकाश प्राप्त हो जाने पर अवकाश के बोफ ने वचने के लिए अच्छी-खासी दिनचर्या बना ली है। अवकाश-प्राप्त से कुछ महीने पूर्व ही उन्होंने योजना बना ली थी कि शामन-कार्य के छत्तीम वर्षों के अनुभव और जिन्तन के आधार पर 'एविक्न आफ एडमिनिस्ट्रेशन' (शासन का नैतिक पक्ष) पर एक पुस्तक निर्मेगे। दोपहर से पूर्व और अपराह्म में कम से कम दो-दो घंटे उन विषय में अध्ययन करने रहने हैं अथवा नोट्स निर्मेन रहने हैं। पहले उन्हें काम के दवाव के कारण कम

वरगर मिनता था परन्तु अब मन्ताह में एक-दो दिन निकट सम्बन्धियों भीर जबता इन्द्र मिन्नों को लोक-सबद सेने भी बने जाते हैं। अब किसी देद तक वे सारिता भी करने करें हैं। रबद और साम-स्वाधी के प्रदीव उन्हें के स्वाधी के स्वधी के स्वधी के स्वधी के स्वाधी के स्वधी के स्वध

कुछ जनते-फिरते का वहाना ।

पाण के स्वचाब और व्यवहार ने कुछ और भी परिवर्गन आए है।

मूनें उन्हें अपनी पोणाल चुन्न रमनें और व्यक्तिगत उपयोग में महिया

मीडों का भीच रहात वा गोगाण के मानने में के सिक्तकृत केपरवाह नहीं,

हों गए हैं एएलू तस्त की क्यों ने बाद के अरुरम मंत्र अपनी हर बार उनने

एक नया उनी मूह बनना मेने वा अनुरोध कर रही है। पाएा पुगने

क्या उनी मुह बनना मेने वा अनुरोध कर रही है। पाएा पुगने

क्या जी मुह बनना मेने वा अनुरोध कर रही है। पाएा पुगने

क्या की बार कर करी है - अपने निया कर बना क्या में गो है

है। यस्त्रों में काल रक्यों है - अपने निया क्या क्या क्या में गो है

है। यस्त्रों को पहार पर या मैंन के निए बाहर भेव हों वे उनके निया क्या है। यस्त्रों में यह कर सही पर क्या में स्वा की काल काल काल काल हो।

क्या की उक्तक की हिमाई है जानी है, अपने निए कुछ नहीं।

क्या के अब अन्तर्भ गोम और पिक्त की के क्या के निया है।

पाण के दक्षों हो आवा स्वारंग में स्वी की वे देवें दे दे दे दे दे दे दे दी राज के स्वा निया है।

पाण के दक्षों हो आवा स्वार में स्वी ने के देवें दे दे दे दी दी पर काल में मार स्वा के देवें है की दी की दे दे दे दे दी राज के स्वा निया है।

पता के बच्चा को बाबार साथ न ने कात ने व रहे थे भी परिकर्तन है। उसके रहेंचे से परिवर्तन का एक प्रकट करका थाएं मक्ता है कि सम्मी अब अनंत नास्त्र्य ने बारण पेटन चनते से नजराती है और हम सीम उपनी परकर नाम चनतेसाने बच्चे नहीं रह राष्ट्र है बभी पास या आमी के माम चनता हैंगा है तो हमारे बग्धे नने बगाउर या कुछ उसे ही रही है पास को आगावा तरी है कि सपने बारा ह दुस्मारे बात या आमावीम बात को देखकर हाथ पेनाबर हुनवने तरीने ।

२०६ मेरी प्रिय कहानियां

अव शायद अपने जवान, स्वस्य, सुडौल वच्चों की संगित में उन्हें कुछ गर्व भी अनुभव होता होगा। इसलिए संध्या समय हजरतगंज या वाजार जाते समय कभी मुझे, कभी मन्दू वहन को, कभी गोगी को और कभी किजन पुष्पा को ही साथ चलने का संकेत कर देते हैं। उनके साथ हजरतगंज जाने पर हम लोगों का चाकलेट-टाफी या आईसकीम के लिए कहना नहीं पड़ता। पापा हजरतगंज का चक्कर पूरा करके स्वयं ही प्रस्ताव कर देते हैं—"कहो, क्या पसंद करोगे? कॉफी या आइसकीम?"

हमारे समवयस्क साथी हम लोगों को वाजार, पार्क या रेस्तरां में पापा के साथ देखकर कभी-कभी आंख दवाकर या किसी संकेत से हमारी स्थिति के प्रति विदूप या करुणा प्रकट कर देते हैं। निस्सन्देह पापा की उपस्थिति में सभी प्रकार की हरकतें या वातें नहीं की जा सकतीं परन्तु उनकी संगति बोर या उवा देनेवाली भी नहीं होती। वे अन्य अवकाश-प्राप्त लोगों की सामान्य प्रवृत्ति के अनुसार केवल अपनी नौकरी के अनुभवों-ऐडवेन्चर्स, नवयुवक लड़के-लड़िकयों के लिए उपयुक्त विवाह-सम्बन्धों अथवा पुराने. जमाने की सस्ती और आज की महंगाई की ही चर्चा नहीं करते । उनके मानसिक सम्पर्क और चिन्ताएं वैयक्तिक और पारिवारिक क्षेत्र में सिमट जाने के बजाय पढ़ने और सोचने का अधिक अवसर पाकर कुछ फैल ही गए हैं। उनकी वातचीत में चुस्ती और हाजिर-जवाबी कम नहीं हुई विलक अपने को तटस्थ और अनासक्त समझ लेने से उसका तीखापन कुछ वढ़ गया। परन्तु हम लोग उनकी संगति के लिए वचपन के दिनों की तरह लालायित नहीं रह सकते। कारण यह कि अठारह-वीस पार कर लेने पर हम लोग भी अपना व्यक्तित्व अनुभव करने लगे हैं। हम लोगों की अपनी वैयक्तिक रुझानें, अपने काम और अपने क्षेत्र भी हो गए हैं और उनके आक-र्पण और आवश्यकताएं भी रहती हैं। कभी-कभी पापा की आवश्यकता और हमारी संगति के लिए उनकी इच्छा और हमारी अपनी आवश्यकताओं और आकर्षणों में द्वन्द्व की स्थिति आ जाना अस्वाभाविक नहीं है।

संध्या समय हम लोगों में से किसी न किसीको साथ ले जाने की

रणा में पापा के दो प्रयोजन हो सकते हैं। एक प्रयोजन तो वे स्वीकार करें हैं। उन्हें बूतो या गुजुर्गों की अपेशा नवजुरकों को मगनि अधिक पाद है। दूतर कारण पापा प्रकट नहीं करना नशहरें। लगभग एक वर्ष से नकी को उनके पाद कर कारण पापा प्रकट नहीं करना नशहरें। लगभग एक वर्ष से जाने की उनके प्रयोज कर प्रकार कर के निकार के प्रचान कर के से सुधतापत्र अधुमत होने नवता है। विशेषक र प्रमान के प्रचान पिह मुक्त पर प्रमान कहीं तो जोकर का जाने हैं और समाग अधिक हैं। पर पासा प्रयोज के प्रचान के प्रचान कर प्रमान के प्रचान कर के प्रचान कर प्रमान के प्रचान कर प्रमान के प्रचान कर प्रमान के प्रचान कर प्रचान कर प्रमान के प्रचान कर प्रमान के प्रचान कर प्रचान के प्रचान के प्रचान कर प्रचान कर प्रचान कर प्रचान कर प्रचान के प्रचान कर प्रचान के प्रचान कर प्रचान कर प्रचान के प्रचान कर प्रचान के प्रचान कर प

पिछने जाडों की बात है। उस दिन डाक में आई पित्रका में एक सहुत रीक्फ किस पढ़ रहा था। पासा के कमरें के अमी को सम्बोधन करनी आबाज मुत्ताई दी—"एक जग रामर पानी फिजबा देना।" यह नक्षां कि दिन डान पासा है, पापा बाहर जाने की दीवारी आरम कर रहे है। नब ज्यान आया, मूर्याहन का समय हो जाने के कमरें में प्रकास कम हो गया था। सिजसी का बटन दसाकर प्रकास नर सेना चाहिए था परनु बह याजा-

याना को बाहर जाने की तैयारी अनेक पोयलाओं के और पुकारों के माय होंगी है ताकि नव जान जाए — जे बाहर जा रहे हैं और कोई उनके माय हों तो 1 मेंने मुना में। परन्तु मन जापान के उन बामा-वर्गन में महा रमा हुता था। वहने-बहुने भी पाना की बाहर जाने की तैयारी का आहुने

कान में पहरहीं थीं।

आहट से अनुमान हो रहा था कि पारा बाहर जाने के निरा जुने रहन चुके होंसे, टाई बाध भी होयी। उनके कमरे में पुकार आई---"कोई है इजरतनज की सवारी।"

पापा ही पुश्चारक रहर में अनुमान हुआ कि उन्होंने करार के हमारे बी और मूह करने पुष्टाय था। मेरे कमी में आपनी नेमारी ही होई सर्मात्रका में नुकुत्तर उन्होंने महर्वियों की पुष्टार निया था। कर्मात्रका मार्थियों की पुष्टार निया था। क्षा

२०८ मेरी प्रिय कहानियां

चलने वाला !"

पापा की इस पुकार की प्रक्रिया में ऊपर पुष्पा दीदी के कमरे से सुनाई दिया —''मन्टू, जाओ न, पापा के साथ घुम आओ ।

मन्दू ने अपने कमरे से पुष्पा दीदी को उत्तर दिया—"तुम भी न्या दीदी भा वोर भव की न वोर हो !"

मन्टू ने अपने विचार में स्वर दवाकर उत्तर दिया था परन्तु उसकी वात पापा के समीप के कमरे में भी में सुन सका था। पत्रिका आंखों के सामने से हट गई। नजर पापा के कमरे में चली गई। पापा ने जरूर सुर्ग लिया था। जान पड़ा, वे कोट हैंगर से उतारकर पहनने जा रहे थे। कोट उनके हाथ में रह गया। चेहरे पर एक विचित्र, विषण्ण-सी मुस्कान आ गई। कोट उसी प्रकार हाथ में लिए कुर्सी पर बैठ गए। नजर फर्श की ओर परन्तु चेहरे पर विषण्ण मुस्कान। कई क्षण विलक्तुल निश्चल बैठे रहें मानो किसी दूर की स्मृति में लो गए हों।

मैंने दृष्टि पापा की ओर से हटा ली कि नजर मिल जाने से संकोच अथवा असुविधा न अनुभव करें। फिर पत्रिका उठा ली परन्तु पढ़ न पाया। अनुमान कर रहा था — 'पापा क्या सोच रहे होंगे?' सहसा स्मृति में वचपन की याद कौंध गई — तव हम लोग उनके साथ वाहर जाने के लिए कितने लालायित रहते थे। हमारी उस लालसा से उन्हें कभी-कभी परेशानी भी अनुभव हो जाती थी। एक दिन की स्मृति आंखों के सामने प्रत्यक्ष दिखाई देने लगी—

हम लोग अम्मी और पापा के साथ वाहर जाने की जिद करते तो पापा को अच्छा नहीं लगता था। अम्मी ऐसी अप्रिय स्थिति से वचने का यह उपाय करती थीं कि स्वयं वाहर जाने के लिए साड़ी बदलने से पहले हमें आया हुविया या नौकर बहादुर के साथ कुछ समय के लिए बाहर भेज देती थीं। हम लोगों के लौटने से पहले ही अम्मी और पापा बाहर जा चुके होते।

एक दिन संच्या अम्मी ने हम दोनों को युलाकर कहा-"वच्चो,

र का रेग पाना की ल दता।"

हम लोग हुविया के साथ घर से बीय-यच्चीस कदम गण् से। मन्द् नं मुझे रोककर कहा-- "मुनी, अन्मी पापा के माय बाजार जा रही हैं। हम भी उनके साथ बाजार जाएगे।" मन्ट् ने हुविया को सम्बीधन किया, "हुविया, हमारी मैण्डल में बील लग रहा है। हम दूसरी मैण्डल पहनकर आने हैं।" हम दोनों घर की ओर भाग आए।

मन्द्र का अनुमान टीक था । हम सीटे तो इयोडी में पहुचते ही अम्मी की पुकार मुनाई दी - "जी आइए, में चल वही हू।" अम्मी बाहर जाने

के लिए साडी बदले और जुड़े से पिनें सोसनी हुई आ रही थी।

मन्द्र अस्मी की कमर में लिपट गई और इवडवाई आंखें अस्मी के मृहं की और उटाकर आमु-भरे स्वर में हिमक-हिचककर गिडगिडाने सगी-"वभी "वभी "कभी "बच्ची को भी "तो "साद "से जाना चाहिए।"

सब तक पापा भी भा गए थे। उन्होंने पूछा-"ववा है, बचा है?" व ममझ गए थे, बोले -- "अच्छा दस्को, एकदम तैयार हो आओ ।"

अन्मी ने वहा-"आ मन्दू, तेरी फाक बदल दू।"

परन्तु मन्द् अपनी इस हरबत में इतना गरमा गई थी कि दोनों हाथां

मं मह दिवारर भाग गई। पापा और अन्मी ने नई बार बुनाने पर भी नहीं आई। बात पापा के मन में कर गई। उस नमय बाहर नहीं का करे।

उसके बाद से हरते-पत्तकाई से हुम लोगों को भी काजार में जाने लगे थे। कभी-कभी साने की मेंट पर हम शोगों के नाम बैटने पर उस दिन की घटना-मन्द्र के शे-रोकर 'दस्कों को भी कभी-कभी बाद में आते' को दुराई देने की बात - मूनाने समते और दम प्रमद से बाद सेंद आती ।

२१० भेरी प्रिय कहानियां

आज पापा के साथ घलने के अनुरोध का उत्तर मन्दू दे रही है— "बोर…बुटरों के साथ बोर…"

पापा अपनी कुर्सी पर निष्चल बैठे, स्मृति में खोए विषण्ण मुस्का^{त से} वही घटना तो नहीं याद कर रहे थे !

पापा महमा, मानो दृढ़ निण्नय से, मुर्सी से उठ खड़े हुए। कोट पहन लिया। और अम्मी को सम्बोधन कर पुकारा—"मुनो, कई बार पहाड़ से छड़ियां लाए हैं, तो कोई एक तो दो!"

एक छड़ी उठाकर मैंने अपने कमरे में रख ती थी। पापा को उत्तर दिया—"एक तो यहां पड़ी है, चाहिए?" छड़ी कोने से उठाकर पापा के सामने कर दी।

"हां, यह तो बहुत अच्छी है।" पापा ने छड़ी की मूठ पर हाथ फेर-कर कहा और छड़ी टेकते हुए किसीकी ओर देखे विना घूमने के लिए चले गए; मानो हाथ की छड़ी को टेककर उन्होंने समय को स्वीकार कर लिया। ma me ten ent t afer ein big

ا 1 1 1 6 الواج

-

the high salpting um ben at er jatet det at jud ا فراده کم و مر منه دا

. - अ १० १० १० में दिसी का से लिए पूर्व के हरू रूक एक हैं हुई हो सहर उर्ज़ेन गय हो सीर

साम हरू हरू हर रिस्टर है बुराहे उन्हें हर महिला क्ष्म क्षेत्र क्षम के का कार कर दूबाय-पूर्व बहुता ह Being and States of the re को राजका है) इस्त हमर दे रह में बी। प्रस्त व क्ष्म . त्रव म क्ष्म वर्ग है वर्ग में बड़ी करने के प्रत्यास प्राप्त क्षा वर्षेत्र स्त वर्षा से समास्त्र